लोक कथाओं में फल–2

दूसरे फल

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Lok Kathaon Mein Doosare Phal (Other Fruits in Folktales)
Cover Page picture : Other Fruits
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में फल–2 7

1 नारियल वाला आदमी 9

2 राजकुमारी जिसको कभी पेट भर अंजीर नहीं मिलीं 13

3 सींगों वाली राजकुमारी 23

4 बूचैटीनो 38

5 मकड़ा और कौए 44

6 सालमन्ना अंगूर 55

7 ह्वान और डॉग 64

8 शहतूत के पेड़ का बच्चा 84

9 मोमोटारो या ख़ूबानी का बच्चा 91

10 जादुई नाशपाती का पेड़ 96

11 एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी 102

12 औलिव 111

13 जियोवानूज़ा लोमड़ी 131

14 यो लुंग पहाड़ 147

15 आलूबुख़ारे का पेड़ 156

16 बेवकूफ बन्दर और केंकड़ा 167

17 एक शानदार राजकुमारी 175

18 तीन अनारों से प्यार 190

19 सॉप 204

20 छोटा लोमड़ा और अनार राजा 216

21 मकड़ा और शहद का पेड़ 226

22 पिपीना सॉप 235

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में फल–2

संसार में सब लोग फल खाते हैं चाहे वह मॅहगा हो या सस्ता, छोटा हो या बड़ा, बाजार से खरीदा हुआ हो या घर में उगाया गया। स्वास्थ्य की दृष्टि से डाक्टरों का कहना है कि रोज एक सेब खाना घर से डाक्टर को दूर रखता है। बहुत सारे लोग इसलिये एक सेब रोज जरूर खाते हैं।

तुम लोगों को याद होगा ईसाई धर्म में जब भगवान ने दुनियॉ बनायी तो उसके बाद अपनी शक्ल का एक आदमी बनाया जिसका नाम था ऐडम। फिर उसके साथ के लिये एक स्त्री बनायी जिसका नाम था ईव और उन दोनों को अपने ईडन के बागीचे में रख दिया और उनसे कह दिया कि उस बागीचे में लगे एक पेड़ के फल वे न खायें। वे दोनों बहुत आज्ञाकारी थे सो बहुत दिनों तक उन्होंने वह फल नहीं खाया।

पर एक दिन शैतान उनके दिमाग पर चढ़ गया और उसके असर से उन्होंने वह फल खा लिया। उस फल को खा लेने के बाद उनको ज्ञान हो गया जिससे उनको यह पता चल गया कि वे दोनों नंगे खड़े हैं और एक दूसरे से छिपने की कोशिश कर रहे हैं। भगवान ने जब यह देखा तो वह समझ गये कि इन्होंने उस वर्जित पेड़ का फल खा लिया है सो अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने की वजह से उनको इस बागीचे से बाहर निकाल कर धरती पर भेज दिया। सो वह कौन सा फल था जिसको खा कर उनको यह ज्ञान हो गया था – वह था सेब।

सेब साधारणतया ठंडे देशों का फल है पर अब यातायात की सुविधा के कारण बहुत जगह मिलने लगा है। सेब वहॉ कई साइज़ में, कई आकार में, कई रंगों में और कई स्वादों में पाया जाता है – छोटा बड़ा, गोल लम्बोतरा, लाल पीला, हरा सुनहरा, खट्टा मीठा और खट्टा–मीठा आदि आदि।

पर क्योंकि सेब ठंडी जलवायु का फल है इसलिये सेब से सम्बन्धित लोक कथाऐं भी ज्यादातर उन्हीं ठंडे देशों में पायी जाती है। और क्योंकि ज़्यादातर ठंडे देश विकसित देश है उनका साहित्य भी लोगों को आसानी से उपलब्ध है चाहे वह अंग्रजी भाषा में ही सही। सेब के साथ साथ सन्तरा भी उन देशों में बहुत प्रसिद्ध है तो उसकी भी वहॉ लोक कथाऐं काफी मिलती हैं। इसलिये हमने उन लोक कथाओं को भी इस पस्तक में जोड़ दिया है। सेब और सन्तरे की सब कथाऐं तो यहॉ देना सम्भव नहीं है पर फिर भी काफी कथाऐं देने की यहॉ कोशिश की जा रही है। इन कथाओं में केवल एक कथा पश्चिमी अफ्रीका की है जो अफ्रीका के वातावरण की होने के कारण पढ़ने में कुछ अजीब सी लगती है पर....

उनकी ये लोक कथाऐं हमने अपने भारत के हिन्दी भाषा भाषी लोगों के लिये "लोक कथाओं में फल–1 — सेब और सन्तरा" में दी थीं। क्योंकि सेब उनके देशों का एक मुख्य फल है इसलिये वहॉ सेब से सम्बन्धित बहुत सारी लोक कथाऐं पायी जाती हैं।

अब यह दूसरी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है "लोक कथाओं में फल–2 — दूसरे फल"। दूसरे फलों की लोक कथाऐं भी बहुत हैं सो इस पुस्तक में नारियल, अंजीर, अंगूर, तरबूज़, शहतूत, खूबानी, नाशपाती, आलू बुखारा, अनार[1] आदि फलों की लोक कथाऐं दी जा रही हैं। फलों की इन पुस्तकों में गिरियॉ जैसे मूॅगफली, चेस्टनट, अखरोट आदि की लोक कथाऐं शामिल नहीं की गयी हैं।

आशा है कि फलों की लोक कथाओं का यह दूसरा संग्रह भी पहले संग्रह की तरह ही पसन्द किया जायेगा।

---

[1] Coconut, Figs, Grapes, Melon, Mulberry, Peach, Pear, Plum, Pomegranate etc.

1 नारियल वाला आदमी[2]

दूसरे फलों की लोक कथाओं में नारियल फल की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के फिलीपीन्स देश[3] की लोक कथाओं से ली गयी है।

जुआन[4] बहुत देर से बड़ी मेहनत से काम कर रहा था। एक अमीर आदमी ने उसको अपने नारियल के बागीचे में से नारियल तोड़ने के लिये रखा हुआ था।

वह सुबह सूरज निकलने से पहले ही वहॉ आ गया था। वह बागीचा क्योंकि उसके घर से काफी दूर था इसलिये उस नारियल के बागीचे तक पहुॅचने के लिये उसको घर से अॅधेरे में ही चलना पड़ा था। सारी सुबह वह नारियल तोड़ने के लिये नारियल के पेड़ों पर चढ़ता और उतरता रहा।

वह अपना बड़ा चाकू[5] रस्सी से अपनी कमर में बॉध लेता था। उसके बाद वह पेड़ पर चढ़ता था। फिर रस्सी में बॅधा चाकू ऊपर

---

[2] The Man With the Coconuts: going slow makes you faster – a folktale from Philippines, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=212 Retold and written by Mike Lockett.

[3] Philippines is a country of 7,000 islands in South-East Asia – towards West to Indian Peninsula.

[4] Juan – the name of a man from Philippines

[5] Translated for the word “Matchet”. See the picture of a matchet above.

खींचता था, चाकू से नारियल काटता था और एक एक कर के उनको वह जमीन पर फेंकता जाता था।

जब वह एक पेड़ से सारे नारियल तोड़ लेता था तो नीचे उतर आता था। तोड़े हुए सारे नारियल एक बड़ी सी टोकरी में भरता और उनको घोड़े की पीठ पर रख कर उन्हें उस आदमी के घर ले जाता।

यह बहुत सारा और बड़ा थकाने वाला काम था। किसी एक बागीचे के सारे फल तोड़ने के लिये उसको कई दिनों की जरूरत थी। फिर भी उसने अपना यह काम सूरज के आसमान में रहते रहते ही खत्म कर लिया था।

अब उसको उन फलों को केवल मालिक के घर तक पहुँचाना था और उससे अपनी मजदूरी लेनी थी। जैसे ही वह मालिक के घर के लिये रवाना हुआ तो उसको एक लड़का दिखायी दे गया। जुआन ने उससे पूछा — "यहाँ से मालिक के घर तक जाने में कितनी देर लगेगी?"

लड़का बोला — "अगर तुम धीरे धीरे जाओगे तो तुम जल्दी पहुँच जाओगे पर अगर तुम जल्दी जल्दी जाओगे तो कल तक पहुँचोगे।"

जुआन ने सोचा "यह कितना बेवकूफ लड़का है? कहीं ऐसा भी होता है क्या कि कोई आदमी धीरे धीरे चलने पर जल्दी पहुँचे और जल्दी जल्दी चलने पर देर से पहुँचे। यह लड़का होशियार नहीं है।

मुझे जल्दी जल्दी ही जाना चाहिये।" यह सोचते हुए जुआन उस सड़क पर जल्दी जल्दी चल दिया।

जैसे ही उसने घोड़े को जल्दी जल्दी खींचा तो उसके नारियल टोकरी में से निकल निकल कर नीचे गिरने लगे। जब नारियल नीचे गिर जाते तो जुआन को उनको उठाने के लिये रुकना पड़ता था और फिर घोड़े के ऊपर लदा बोझा भी ठीक से रखना पड़ता था।

जुआन ने सोचा "इस तरह से तो मेरा समय बहुत बर्बाद हो रहा है। मुझे अपने इस समय को बचाने के लिये और जल्दी जल्दी जाना चाहिये।" सो उसने और जल्दी जल्दी चलना शुरू कर दिया।

इस चक्कर में उसकी भरी हुई टोकरी में से उसके और ज़्यादा नारियल नीचे गिर गये। नीचे गिर कर वे पहाड़ी के नीचे भी लुढ़क गये।

जुआन जितनी जल्दी करता उतने ही ज़्यादा नारियल टोकरी में से बिखर जाते और हर बार जुआन को वे नारियल उठाने और टोकरी को ठीक करने में कुछ ज़्यादा ही समय भी लगता और थकान भी लगती।

सूरज डूबने को आ रहा था और जुआन ने देखा कि मालिक का घर पहाड़ी की चोटी पर था। वह एक बार फिर जल्दी जल्दी चला।

अब उसके जल्दी जल्दी चलने से उसका घोड़ा भी गिरने लगा और नारियल भी बहुत लुढ़कने लगे। अब सूरज भी डूब चुका था और अँधेरा भी होने लगा था।

बेचारा जुआन। अँधेरे में अब वह गिरे हुए नारियल देख भी नहीं सकता था सो वह वे नारियल मालिक को उस दिन नहीं दे सका। वह उनको अगले दिन ही दे पाया।

सो वह लड़का इतना बेवकूफ भी नहीं था।

2 राजकुमारी जिसको कभी पेट भर अंजीर नहीं मिलीं[6]

यह लोक कथा एक ऐसी लड़की की है जिसे अंजीर बहुत अच्छी लगती थीं पर उसके लिये वे कभी भी काफी नहीं रहीं। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक राजा था जिसकी एक बेटी थी। उसको अंजीर बहुत पसन्द थीं। वह टोकरे के टोकरे भर कर अंजीर खा जाती थी।

सो उस राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी को अंजीर दे कर सन्तुष्ट करेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा।

बहुत सारे लोग राजकुमारी के लिये बहुत सारी अंजीर ले कर आये पर हमेशा ही वे उसके लिये कम पड़ जाती थीं।

एक उम्मीदवार एक पूरी टोकरी भर कर अंजीर ले कर आया पर इससे पहले कि वह उनको उसको खाने के लिये देता उसने उन

[6] The King's Daughter Who could Never Get Enough Figs – a folktale from Italy from its Romagna area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Its most stories are available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.
[In this tale there were three boys, the princess ate three basketful figs, the King gave him three hares, three people went to disturb him in the forest…]

सब अंजीरों को खा कर खत्म कर दिया। और जब वे खत्म हो गयीं तो वह बोली "और"।

ऐसे ही समय में तीन लड़के एक खेत में खुदायी कर रहे थे कि सबसे बड़े लड़के ने कहा — "अब मैं खेत को और नहीं खोदना चाहता। मैं तो जाऊँगा और राजा की बेटी को उसके मन भर कर अंजीर खिला कर आऊँगा और फिर उससे शादी कर लूँगा।"

वह एक बहुत बड़ी सी टोकरी ले कर एक अंजीर के पेड़ पर चढ़ गया। जब वह काफी भर गयी तो वह उस टोकरी को ले कर महल को चला।

रास्ते में उसको उसका एक पड़ोसी मिला। वह उस लड़के से बोला — "मुझे एक अंजीर दो।"

लड़का बोला — "नहीं मैं नहीं दे सकता। ये अंजीर मैं राजकुमारी को खिलाने के लिये ले जा रहा हूँ और तुमको देने के बाद तो ये अंजीर कम हो जायेंगीं इसलिये मैं तुमको इनमें से एक भी अंजीर नहीं दे सकता।" और यह कह कर वह आगे चल दिया।

वह महल पहुँचा तो उसको राजा की बेटी के पास ले जाया गया। वहाँ पहुँच कर उसने वह अंजीर का टोकरा राजा की बेटी के सामने रख दिया।

जैसे ही उसने वह टोकरा राजा की बेटी के सामने रखा एक पल में ही उसमें से सारी अंजीरें खत्म हो गयीं। अगर उसने वहाँ से

वह टोकरा उठा न लिया होता तो शायद वह वह टोकरा भी खा गयी होती।

वह लड़का बेचारा दुखी मन से घर वापस चला गया।

अब बीच वाले भाई ने कहा — "मैंने भी खेत की काफी खुदायी कर ली अब मैं भी राजा की बेटी को उसके मन भर कर अंजीर खिला कर अपनी किस्मत आजमाऊँगा।"

वह भी पेड़ पर चढ़ा, अंजीरों से अपनी टोकरी भरी और महल की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको भी उसका एक पड़ोसी मिला और उसने भी उस लड़के से एक अंजीर माँगी।

उस लड़के ने अपने कन्धे उचकाये और आगे बढ़ गया।

महल पहुँच कर उसने भी अपनी टोकरी राजा की बेटी के सामने रखी। पर जैसे ही उसने वह टोकरी उसके आगे रखी वह उस टोकरी की सारी अंजीरें खा गयी।

अगर वह भी अपनी खाली टोकरी उसके सामने से न उठाता तो शायद वह उसको भी खा जाती।

वह भी उदास मन से घर वापस आ गया।

अब सबसे छोटे लड़के की बारी थी। उसने कहा कि वह भी महल जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहता है।

सो उसने भी अपनी टोकरी उठायी, पेड़ पर से टोकरी भर के अंजीरें तोड़ीं और राजा की बेटी को उनको पेट भर खिलाने के लिये चल दिया।

वह अपनी टोकरी लिये जा रहा था कि उसको भी अपना वही पड़ोसी मिला जो उसके दोनों भाइयों को मिला था। उसने भी इस लड़के से एक अंजीर माँगी।

लड़के ने अपनी टोकरी उसके सामने करते हुए कहा — "तुम एक ही अंजीर क्यों बल्कि तीन ले सकते हो।" पर उस पड़ोसी ने उस टोकरी में से केवल एक ही अंजीर खायी।

फिर उसने उस लड़के को एक जादू की छड़ी दी और कहा — "जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस तुमको यही करना है कि इस छड़ी को जमीन पर मारना है और इसके जमीन पर मारते ही यह टोकरी जैसे ही खाली होगी फिर से भर जायेगी।"

वह लड़का यह सुन कर बहुत खुश हुआ और अपनी टोकरी ले कर महल जा पहुँचा। उसको भी और लोगों की तरह से राजा की बेटी के सामने ले जाया गया।

हमेशा की तरह से एक पल में ही राजा की बेटी ने वह अंजीरों की टोकरी खाली कर दी। पर जैसे ही वह टोकरी खाली हुई उस लड़के ने अपनी जादू की छड़ी को जमीन पर मारा और वह टोकरी फिर से अंजीरों से भर गयी।

ऐसा तीन बार हुआ। तीन टोकरी अंजीर खा कर राजा की बेटी ने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अंजीर? ओफ मुझे अब और अंजीर नहीं चाहिये।"

राजा उस लड़के से बोला — "तुम जीत गये हो यह तो ठीक है पर अगर तुम मेरी बेटी से शादी करना चाहते हो तो तुमको समुद्र पार उसकी चाची को शादी में बुलाने के लिये उसके पास जाना पड़ेगा।"

यह सुन कर वह लड़का कुछ दुखी सा हो कर अपने घर चला गया। जैसे ही वह घर पहुँचा तो बाहर की सीढ़ियों पर उसका वह पड़ोसी खड़ा था जिसने उसको जादू की छड़ी दी थी। उसने उसको अपना सारा हाल बताया।

पड़ोसी ने उसको एक बिगुल[7] दिया और कहा — "तुम समुद्र के किनारे चले जाओ और वहाँ जा कर इसे बजाना। राजकुमारी की चाची जो समुद्र पार रहती है वह इसकी आवाज सुन लेगी और वहाँ आ जायेगी। तब तुम उसको राजा के पास ले जाना।"

लड़के ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और समुद्र के किनारे जा कर उस बिगुल को बजाया। उस बिगुल की आवाज सुनते ही राजा की बेटी की चाची समुद्र पार कर के उसके पास आ गयी और वह उसको राजा के पास ले गया।

चाची को महल में देख कर राजा बोला — "बहुत अच्छे। पर मेरी बेटी से शादी करने के लिये तुम्हारे पास वह सोने की अँगूठी तो

[7] This is simple Bigul but in English it is called Bugle.

होनी ही चाहिये जो समुद्र की तली में पड़ी है नहीं तो तुम उसे क्या पहनाओगे।"

यह सुन कर तो वह नौजवान बहुत ही नाउम्मीद हुआ और वह फिर घर वापस चल दिया। घर पहुँचने पर वह फिर अपने उसी पड़ोसी से मिला और उसको सारी बात बतायी।

उस पड़ोसी ने उससे कहा कि वह समुद्र के किनारे जाये और फिर से अपना वही बिगुल बजाये।

उसने ऐसा ही किया तो अबकी बार एक मछली अपने मुँह में एक अँगूठी दबाये समुद्र में से कूद कर बाहर आ गयी। लड़के ने वह अँगूठी उसके मुँह में से निकाल ली और उसको ले जा कर राजा को दे दिया।

राजा उस अंगूठी को देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर फिर बोला — "देखो इस थैले में तुम्हारी शादी की दावत के लिये तीन खरगोश हैं पर वे बहुत ही दुबले पतले हैं। इनको तीन दिन और तीन रात के लिये खाना खिलाने के लिये बाहर जंगल में ले जाओ और फिर इसी थैले में रख कर उनको वापस ले आना।"

पर खरगोश को जंगल में पहले खुला छोड़ने के लिये और फिर दोबारा उनको पकड़ने के लिये किसने सुना?

वह लड़का बेचारा फिर से अपनी समस्या ले कर उसी पड़ोसी के पास पहुँचा। पड़ोसी ने कहा — "जब अँधेरा हो जाये तब यह बिगुल बजाना तो वे खरगोश वापस इसी थैले में आ जायेंगे।"

लड़का उन खरगोशों को जंगल में ले गया और उनको तीन दिन और तीन रात के लिये वहॉ छोड़ दिया।

पर तीसरे दिन राजा की बेटी की चाची वहॉ वेश बदल कर आयी और उस लड़के से पूछा — "तुम यहॉ जंगल में क्या कर रहे हो बेटा?"

"मैं खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ मॉ जी।"

"इनमें से एक खरगोश मुझे बेच दो।"

"मैं नहीं बेच सकता।"

"तुम एक खरगोश का कितना पैसा लोगे?"

"सौ क्राउन[8]।"

चाची ने उसको सौ क्राउन दिये और उससे खरगोश ले कर चली गयी। लड़का जब तक वहीं इन्तजार करता रहा जब तक वह घर नहीं पहुँच गयी।

जैसे ही वह घर पहुँची तो उसने अपना बिगुल बजाया। वह खरगोश चाची के हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भागा और फिर उसके थैले में आ कर बैठ गया।

इसके बाद राजा की बेटी अपना वेश बदल कर जंगल गयी।

उसने उस लड़के से पूछा — "तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

"मैं यहॉ तीन खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ।"

"एक मुझे बेचोगे?"

[8] Crown was the name of British Pound in olden days.

"मैं नहीं बेच सकता।"

"तुम एक खरगोश के कितने पैसे लोगे?"

"तीन सौ काउन।"

उसने उस लड़के को तीन सौ काउन दिये और वहाँ से चल दी।

पर जैसे ही वह अपने घर के पास आयी उस नौजवान ने अपना बिगुल बजा दिया और वह खरगोश उस लड़की के हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भागा और उसके थैले में आ कर छिप गया।

अन्त में राजा खुद वेश बदल कर जंगल गया।

उसने उस लड़के से पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं यहाँ तीन खरगोशों की रखवाली कर रहा हूँ।"

"एक मुझे बेचोगे?"

"तीन हजार काउन में।"

राजा ने उसको तीन हजार काउन दिये और खरगोश ले कर चल दिया।

पर इस बार भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही राजा अपने महल के पास पहुँचा उस लड़के ने बिगुल बजा दिया और वह खरगोश तुरन्त ही उसके हाथ से फिसल कर जंगल की तरफ भाग लिया और उसके थैले में आ कर बैठ गया।

तीन दिन और तीन रात खत्म हो गये थे सो वह लड़का महल लौट आया और तीनों खरगोश उसने राजा को वापस कर दिये।

राजा उसे देख कर बोला — "मेरी बेटी से शादी करने से पहले एक आखिरी इम्तिहान और। यह थैला लो। तुमको यह थैला सच से भरना है।"

वह लड़का बेचारा वह थैला ले कर फिर अपने घर वापस आ गया। पड़ोसी अभी भी उसके घर के बाहर सीढ़ियों पर खड़ा था।

उसकी समस्या सुन कर वह बोला — "तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुमने जंगल में क्या किया था। वही तुम राजा को बता दो तो तुम्हारा थैला सच से भर जायेगा।"

वह लड़का वापस राजा के पास गया। राजा ने थैला खोला और उस लड़के ने बोलना शुरू किया — "पहले आपकी बेटी की चाची आयी और उसने सौ काउन में एक खरगोश खरीदा पर वह उससे बच कर भाग गया और थैले में वापस आ गया।

फिर आपकी बेटी आयी और उसने तीन सौ काउन में एक खरगोश खरीदा। वह भी उसके हाथ से निकल गया और वापस थैले में आ गया।

आखीर में आप आये सरकार और आपने एक खरगोश तीन हजार काउन में खरीदा। वह आपके भी हाथ से निकल कर भाग गया और मेरे थैले में वापस आ गया।"

जैसे ही वह यह कह कर चुका तो राजा ने देखा कि वह थैला तो फूला हुआ था।

आखिर राजा की समझ में आ गया कि अब उसके पास अपनी बेटी की शादी उस लड़के के साथ करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।[9]

[9] [My Note - This was very injustice with the boy that after putting only one condition for the marriage of his daughter, the King asked the boy to complete so many tasks before he married her to him. Secondly, how a princess can go to tend the animals? The King must be having several servants to do this job."

3 सींगों वाली राजकुमारी[10]

यह लोक कथा भी अंजीरों की ही है और यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक पिता के तीन बेटे थे और उसके पास पैसे के नाम पर केवल एक घर था। वह घर भी गरीबी की वजह से इस समझौते के साथ बेच दिया गया था कि उस घर की एक दीवार के बीच में लगी तीन ईंटें उस घर को बेचने के बाद भी उसी आदमी की रहेंगी।

जब वह आदमी मरने लगा तो उसने अपनी वसीयत करने की सोची। उसके पड़ोसियों ने पूछा — "पर तुम अपनी वसीयत में दोगे क्या? तुम्हारे पास तो कुछ है ही नहीं।" उसके बेटे भी इस छोटे से काम के लिये नोटरी[11] को नहीं बुलाना चाहते थे।

पर नोटरी आया और मरते हुए उस आदमी ने उसको अपनी वसीयत बतायी — "अपने सबसे बड़े बेटे को मैं अपनी पहली ईंट देता हूँ। अपने दूसरे बेटे को मैं अपनी दूसरी ईंट देता हूँ और अपने सबसे छोटे बेटे को मैं अपनी तीसरी ईंट देता हूँ।"

---

[10] The Princess With the Horns – a folktale from Italy from its Acireale area.
Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". Translated by George Martin. Most of its stories are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

[11] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business.

और उसके बाद वह आदमी मर गया। पिता के मरने के बाद ही वे तीनों गरीब बेटे जान पाये कि भूख और कमी क्या होती है।

पिता के मरने के बाद सबसे बड़ा बेटा बोला — "अब मैं इस शहर में नहीं रह सकता। मैं अपने पिता की दी हुई ईंट इस मकान की दीवार में से निकालता हूँ और उसको साथ ले कर मैं यहाँ से चलता हूँ।"

जब वह मकान की दीवार में से अपनी ईंट निकालने गया तो उस स्त्री ने जिसने उसके पिता का यह मकान खरीदा था उससे कहा कि अगर वह ईंट वहीं छोड़ दे जहाँ वह थी तो वह उसके बदले में उसको कुछ दे देगी क्योंकि इससे उसकी दीवार खराब नहीं होगी।

लड़का बोला — "नहीं मैम, मेरे पिता ने मेरे लिये वही एक ईंट छोड़ी है और मैं उसको यहाँ नहीं छोड़ सकता।" कह कर उसने वह ईंट दीवार में से निकाल ली और उसको ले कर शहर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने उसे तोड़ा तो उसमें उसको एक बहुत ही छोटा सा बटुआ मिला।

रास्ते में उसको भूख लगी तो उसने अपना वह बटुआ निकाला और बोला — "ओ बटुए, मुझे दो पैनी दो ताकि खाने के लिये मैं कुछ डबल रोटी खरीद सकूँ।" यह कह कर उसने अपना बटुआ खोला तो उसमें दो पैनी थीं।

यह देख कर उस लड़के ने सोचा कि वह उस बटुए से कुछ ज़्यादा पैसे माँगने की कोशिश कर के देखे। सो उसने कहा — "ओ

बटुए, मुझे सौ काउन[12] दो।" और बटुए ने उसको सौ काउन दे दिये। इस तरह उसने बटुए से जितना पैसा माँगा उसने उसको उतना ही पैसा दे दिया।

कुछ ही समय में उसके पास इतना पैसा हो गया कि उसने वहाँ के राजा के महल के सामने अपना एक महल बनवा लिया। उसने अपने महल की खिड़की से बाहर झाँका तो उसे दिखायी दिया राजा का महल और उस महल की खिड़की पर बैठी हुई राजकुमारी।

उसने राजकुमारी से बात की और वे दोनों अच्छे दोस्त बन गये और अब वह राजा के महल में कभी भी जा सकता था।

यह देख कर कि वह लड़का उसके अपने पिता से कहीं ज़्यादा अमीर था एक दिन राजकुमारी ने उससे कहा — "अगर तुम मुझे यह बता दो कि यह इतना सारा पैसा तुम्हारे पास कहाँ से आया तो मैं तुमसे शादी कर लूँगी।"

वह लड़का उस बटुए की वजह से अमीर तो हो गया था पर वह था बहुत ही बड़ा बेवकूफ। उसने राजकुमारी का विश्वास कर लिया और उसको अपना बटुआ दिखा दिया। राजकुमारी ने उसके बटुए में कोई खास रुचि न दिखाने का बहाना किया और उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला कर उसका वह जादू का बटुआ एक वैसे ही नकली बटुए से बदल दिया।

[12] Crown – the then currency in European countries

जब उस बेचारे लड़के को इस बात का पता चला तो उसको अपना काम चलाने के लिये जो कुछ भी उसके पास था वह सब कुछ बेच देना पड़ा। और अब वह फिर से उतना ही गरीब हो गया था जितना कि उस समय था जब वह अपने घर से निकला था।

इस बीच उसको पता चला कि उसका बीच वाला भाई बहुत अमीर हो गया था। उसने उसको ढूँढा और उससे मिल कर उसको गले लगया। फिर उसने उससे पूछा कि वह इतना अमीर कैसे हो गया।

उसके भाई ने बताया कि जब उसके पास पैसे नहीं रहे तो उसने भी उस मकान की दीवार से अपने हिस्से की ईंट हटा ली और उसको तोड़ा तो उसमें से उसको एक शाल[13] मिला। उस शाल को ओढ़ते ही वह दूसरों की निगाह से ओझल हो जाता था।

सो जब वह भूखों मर रहा था तब वह शाल ओढ़ कर गायब हो गया और एक बेकरी की दूकान में घुस कर एक डबल रोटी चुरा लाया। उस शाल को ओढ़े रहने की वजह से कोई उसको देख भी नहीं सका।

उसके बाद उसने कई चॉदी का सामान बेचने वालों को, एक सिलाई का सामान बेचने वाले को, राजा का सन्देश ले जाने वालों

[13] Translated for the word “Cloak”. See the picture above.

को लूटा और तब तक लूटता रहा जब तक कि वह काफी अमीर नहीं हो गया।

यह सुन कर बड़े भाई ने कहा — "अगर ऐसा है तो क्या तुम मेरा एक काम करोगे? मुझे अपना शाल एक खास काम के लिये उधार दोगे? वह काम कर के मैं तुम्हारा शाल तुमको वापस कर दूँगा।"

अपने बड़े भाई से प्यार की वजह से उसने वह शाल उसको उधार दे दिया। बड़े भाई ने उस शाल को ओढ़ा और घर छोड़ कर चल दिया। अब उसे कोई नहीं देख सकता था।

तुरन्त ही उसने अपने दॉये और बॉये दोनों हाथों से वह हर चीज़ उठानी शुरू कर दी जो भी उसके सामने आयी और जो उसको अच्छी लगी। जब उसके पास काफी सारा सामान हो गया तो वह राजा के महल आया।

उसको और ज़्यादा अमीर हो कर वापस आया देख कर राजकुमारी ने पूछा — "अरे इतने दिनों तक तुम कहॉ थे और इतनी सारी दौलत तुम्हारे पास कहॉ से आयी? तुम मुझे बताओ तो बस फिर हम तुरन्त ही शादी कर लेते हैं।"

वह लड़का बेवकूफ तो था ही पर लगता है कि कुछ ज़्यादा ही बेवकूफ था। क्योंकि उसको पहली बार अपना बटुआ और अपनी सारी धन दौलत खो कर भी अक्ल नहीं आयी सो उसने फिर से उस

राजकुमारी को सब कुछ बता दिया। उसने उसको वह शाल दिखा भी दिया।

राजकुमारी ने पहले की तरह पहले तो उस शाल में कोई रुचि नहीं दिखायी पर फिर उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला कर उसको बेहोश कर दिया और उसका वह जादुई शाल एक दूसरे वैसे ही नकली शाल से बदल दिया।

जब वह उठा तो उसने अपना शाल ओढ़ा और यह सोचते हुए कि अब तो उसे कोई देख नहीं रहा वह आराम से महल में अपना बटुआ ढूँढने के लिये इधर उधर घूमने लगा। पर चौकीदारों ने उसको देख लिया और चोर समझ कर उसको बहुत मारा और महल से बाहर फेंक दिया।

अब आगे क्या करना है यह सोचते हुए वह बड़ा भाई अपने घर लौट आया और वहाँ वह जो कुछ कर सकता था करने लगा। वहाँ पहुँच कर उसको पता लगा कि उसका सबसे छोटा भाई भी बहुत अमीर हो गया है और वह एक बड़े महल में रह रहा है। उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर हैं।

उसने सोचा अब मैं अपने सबसे छोटे भाई के पास जाता हूँ और उससे सहायता माँगता हूँ। मुझे यकीन है कि वह मुझे खाली हाथ वापस नहीं भेजेगा। यह सोच कर वह उसके पास गया।

उधर जब बहुत दिनों तक सबसे छोटे भाई को अपने सबसे बड़े भाई की खबर नहीं मिली तो उसने सोचा कि शायद वह मर गया

होगा पर जब उसने उसको देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसने उसका बड़े उत्साह से स्वागत किया।

उसने उसको यह भी बताया कि वह इतना अमीर कैसे हो गया। उसने उससे कहा — "अब तुम यह सुनो जो मैं कह रहा हूँ। यह तो तुमको मालूम ही है कि पिता जी हमारे लिये तीन ईंटें छोड़ गये थे और मेरे हिस्से में आखिरी वाली ईंट आयी थी।

एक बार जब मुझे पैसों की बहुत जरूरत हुई तो मैंने उस ईंट को इस इरादे से वहाँ से निकाला कि मैं उसको बेच कर कुछ पैसे कमा लूँगा पर जैसे ही मैंने उसको वहाँ से निकाला तो मुझे उस ईंट के पीछे एक सींग दिखायी दिया।

उस सींग को देखते ही मुझे उसको बजाने की इच्छा हुई। मैंने उसे बजाया तो उसमें से बहुत सारे सिपाही निकल पड़े और मुझसे बोले — "जनरल, हमारे लिये क्या हुक्म है?"

यह सुन कर वह सींग मैंने फिर अपने होठों से हटाया तो वे सब सिपाही गायब हो गये। इससे मेरी समझ में आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये।

मैं अपने उन सिपाहियों के साथ कई शहरों में गया और वहाँ जा कर मैने कई लड़ाइयाँ लड़ीं और वहाँ की जनता से बहुत सारे पैसे ऐंठे।

जब मैंने देखा कि मेरे पास मेरी ज़िन्दगी के लिये काफी पैसा हो गया तो मैं यहॉ वापस आ गया और अपना यह महल बनवा कर यहॉ आराम से रहने लगा।"

बड़े भाई ने जब यह सुना तो उसने उससे वह सींग उसको देने की प्रार्थना की और कहा कि जैसे ही उसका काम हो जायेगा वह उसको उसी समय वापस कर देगा। छोटे भाई ने भी उसको वह सींग दे दिया और वह बड़ा भाई उस सींग को ले कर वहॉ से चला गया।

वह उस सींग को ले कर एक दूसरे ऐसे शहर में पहुँचा जहॉ बहुत अमीर लोग रहते थे। वहॉ जा कर उसने अपना सींग बजाया तो उसने देखा कि उसमें से तो बहुत सारे सिपाही निकल रहे थे।

जब वह सारा मैदान सिपाहियों से भर गया तब उसने उनको सारा शहर लूटने के लिये कहा। उन सिपाहियों ने तुरन्त ही शहर वालों से उनका सोना चॉदी और बहुत सारे तरीके का खजाना लूट लिया।

वह खजाना ले कर वह फिर से उसी राजकुमारी के पास जा पहुँचा। हालॉकि वह उस राजकुमारी के जाल में दो बार फॅस चुका था पर अपनी बेवकूफी से एक बार फिर वह उसके जाल में फॅस गया।

उसने उसको फिर से अपनी अमीरी का भेद बता दिया। राजकुमारी ने एक बार फिर उसकी शराब में बेहोशी की दवा मिला

कर उसको बेहोश कर दिया और उसके जादुई सींग को एक दूसरे सादे सींग से बदल दिया।

जब वह खाना खा कर उठा तो राजा और रानी ने उसको इस लिये महल से निकाल दिया क्योंकि वह पिये हुए था। बड़े बेइज्जत हो कर उसने अपनी बची हुई दौलत ली और एक दूसरे शहर को चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल से गुजरा जहॉ उसको बारह डाकू मिल गये। उसने इस उम्मीद में अपना सींग बजाया कि उसमें से सिपाही निकल आयेंगे और वे उसकी उन डाकुओं से रक्षा करेंगे पर वह सींग तो नकली था सो उससे कुछ भी नहीं हुआ।

डाकू उसका सारा सामान ले गये और उसको बहुत मार पीट कर अधमरा कर के वहीं छोड़ गये। पर उसका सींग उसके मुॅह में ही रहा और वह उसे बजाता ही रहा। काफी देर के बाद उसको समझ में आया कि उसका वह सींग तो नकली था।

फिर उसको लगा कि उसने तो अपने दोनों भाइयों को भी धोखा दिया क्योंकि उसने दोनों से उनकी चीज़ें ले लीं और खो दीं।

यह सोच कर उसको बहुत बुरा लगा और उसने एक पहाड़ की चोटी से कूद कर अपनी जान देने की सोची। सो उसने एक पहाड़ की चोटी ढूॅढी और उसके काई[14] वाले किनारे पर जा कर वहॉ से नीचे कूद गया।

[14] Translated for the word “Moss”

पर जाको राखे सॉइयॉ मार सके ना कोय। इत्तफाक की बात कि उसके गिरने के रास्ते के बीच में एक अंजीर[15] का पेड़ उगा हुआ था और बाहर की तरफ को निकला हुआ था। गिरते समय वह उस पेड़ की शाखाओं में अटक कर रह गया और लटक गया।

उस पेड़ पर बहुत सारी काली अंजीरें लगी हुई थीं। उसने सोचा कि मैं ये अंजीरें खा लेता हूँ तो कम से कम भर पेट खाना खा कर ही मरूँगा। सो वह वहॉ लटका लटका अंजीरें तोड़ तोड़ कर खाने लगा।

उसने दस अंजीर खायीं, फिर बीस खायीं, फिर तीस खायीं। अंजीर खाते खाते उसको लगा कि उसके सिर पर सींग उग रहे हैं। जितनी वह अंजीर खाता जा रहा था उसके शरीर पर उतने ही सींग उगते जा रहे थे।

पहले वे उसके सिर पर उगे, फिर चेहरे पर, फिर नाक पर और फिर उसके सारे शरीर पर उग आये। अब उसके शरीर पर उस अंजीर के पेड़ की शाखों से भी ज़्यादा सींग थे जो उसको उस पेड़ से गिरने से बचाये हुए थीं।

[15] Translated for the word “Fig”. See its picture above.

यह सब देख कर तो अब उसको और ज़्यादा लगने लगा कि उसको मर ही जाना चाहिये। सो उसने उस अंजीर के पेड़ को छोड़ दिया और वह अपने सींगों के साथ फिर नीचे गिरने लगा।

पर उसकी किस्मत तो देखो कि रास्ते में एक और अंजीर का पेड़ लगा हुआ था वह उसमें जा कर अटक गया। इस पेड़ में पहले पेड़ के मुकाबले में और ज़्यादा अंजीरें लगी हुई थीं। और यह पेड़ काली अंजीरों का नहीं बल्कि सफेद अंजीरों का पेड़ था।

उसने सोचा कि अब इससे ज़्यादा और कितने सींग मेरे ऊपर उगेंगे क्योंकि अब तो मेरे शरीर पर सींग उगने की कहीं जगह ही नहीं रह गयी है सो मैं ये सफेद अंजीर और खा लेता हूँ तभी मरूँगा। यह सोच कर उसने उस पेड़ की सफेद अंजीरें खानी शुरू कर दीं।

उसने मुश्किल से तीन अंजीर खायी होंगी कि उसको लगा कि उसके तीन सींग कम हो गये हैं। यह देख कर वह वे अंजीरें खाता रहा तो उसने देखा कि हर एक अंजीर खाने के बाद उसका एक सींग कम हो जाता था।

वह इतनी अंजीर खा गया जिससे उसके शरीर पर उगे सारे सींग गायब हो गये। और अब उसकी खाल भी पहले से भी ज़्यादा साफ सुन्दर और चिकनी हो गयी थी।

जब उसके सारे सींग गायब हो गये तो तो वह उस सफेद अंजीर के पेड़ से नीचे उतर आया और फिर से पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।

वह फिर उस काली अंजीर के पेड़ पर आया और वहॉ से उसने काफी सारी काली अंजीरें तोड़ लीं और उनको अपने मफलर में बॉध लिया और शहर चल दिया।

उसने एक किसान का वेश बनाया और अपनी उन काली अंजीरों को एक टोकरी में रख कर शाही महल में बेचने के लिये ले चला।

साल का यह समय ऐसा था कि इस समय अंजीरों का मौसम नहीं था सो महल के चौकीदारों ने जब एक किसान को अंजीरें बेचते हुए देखा तो उसको बुलाया और राजा ने उससे उन अंजीरों की पूरी टोकरी खरीद ली।

किसान राजा के घुटने चूम कर अपनी अंजीर बेच कर तुरन्त ही वहॉ से चला गया।

दोपहर को राजा ने अपने परिवार को बुलाया और सब लोग अंजीर खाने बैठे। राजकुमारी को अंजीर बहुत पसन्द थीं सो वह जल्दी जल्दी कई सारी अंजीरें खा गयी। वे सब लोग उन अंजीरों को खा खा कर बहुत खुश हो रहे थे।

पर जब उन्होंने अंजीर खा कर खत्म कर लीं तब उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा तो पाया कि सारे लोगों के शरीर पर सींग उग

आये हैं। और राजकुमारी के शरीर पर तो सबसे ज़्यादा सींग थे क्योंकि सबसे ज़्यादा अंजीरें तो उसी ने खायी थीं।

यह सब देख कर तो वे बहुत डर गये। वे शहर के हर डाक्टर के पास गये पर किसी को यह पता नहीं चल सका कि शाही परिवार को यह क्या हो गया था। राजा ने तुरन्त ही अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उनके सींग ठीक करेगा उसकी वह हर इच्छा पूरी करेगा।

जब बड़े भाई ने यह घोषणा सुनी तो अबकी बार उसने सफेद अंजीरों के पेड़ से सफेद अंजीरें तोड़ीं और उनको ले कर वह शाही महल चल दिया। इस बार उसने एक डाक्टर का वेश बना लिया था

वहाँ जा कर वह बोला — "मैं आप सबको इन सींगों से छुटकारा दिला सकता हूँ और मैं इनको बहुत जल्दी ही हटा दूँगा।"

यह सुन कर राजकुमारी चिल्ला कर अपने पिता से बोली — "पिता जी, पहले मेरे सींग निकलवा दीजिये।" राजा ने उस डाक्टर को पहले राजकुमारी के सींग निकालने के लिये कहा।

डाक्टर राजकुमारी को एक अकेले कमरे में ले गया और वहाँ जा कर उसने अपना डाक्टर का वेश उतार दिया और फिर उससे पूछा — "क्या तुम मुझे पहचानती हो? हाँ या न?"

राजकुमारी कुछ झिझकते हुए बोली "हाँ।"

"अच्छा तो अब तुम मेरी बात सुनो जो मुझे तुमसे कहनी है। जब तुम मेरा बटुआ जिसमें से पैसे निकलते हैं, वह शाल जो अपने

पहनने वाले को दूसरों से छिपा देता है और वह सींग जिसमें से सिपाही निकलते हैं वापस कर दोगी तभी मैं तुम्हारे शरीर पर से ये सींग हटाऊँगा।

पर अगर तुम इनको देने से मना करोगी तो मैं तुम्हारे शरीर पर इससे कहीं ज़्यादा सींग लगा दूँगा।"

राजकुमारी को वे सींग एक मिनट के लिये भी अच्छे नहीं लग रहे थे और किसको पता था कि इस लड़के के पास कुछ और भी जादुई चाल हों सो उसने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसकी वे सब चीज़ें उसे वापस दे दीं।

उसने राजकुमारी को उतनी ही सफेद अंजीर खिलायीं जितने सींग उसके शरीर पर थे। उन सफेद अंजीरों के खाते ही उसके शरीर पर से सारे सींग गायब हो गये और वह बिल्कुल ठीक हो गयी।

वही इलाज उसने राजा रानी और दूसरे लोगों का भी किया जिनके शरीर पर काली अंजीर खाने से सींग उग आये थे। वे भी सब ठीक हो गये। राजा ने उसके बाद राजकुमारी की शादी उससे कर दी।

बटुआ तो उसका अपना था वह उसने अपने पास रख लिया पर वह शाल और सींग उसके दोनों छोटे भाइयों के थे सो उनको उसने अपने दोनों भाइयों को वापस कर दिये।

अब तो वह राजा का दामाद[16] था सो वह ज़िन्दगी भर राजा का दामाद ही बन कर रहा। अब उसको किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

[16] Translated for the word “Son-in-law” – daughter’s husband.

4 बूचैटीनो[17]

दूसरे फलों की यह लोक कथा अंजीर फल की है और यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली देश में एक बच्चा रहता था जिसका नाम था बूचैटीनो। एक दिन उसकी माँ ने कहा — "बूचैटीनो, ज़रा जा कर सीढ़ियों पर झाड़ू तो लगा दे बेटा।"

बूचैटीनो एक आज्ञाकारी बेटा था। उसको दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह तुरन्त गया और सीढ़ियाँ साफ करने लगा। सीढ़ियाँ साफ करते समय उसको वहाँ एक पैनी मिल गयी।

उसने सोचा — "अरे मैं इस पैनी का क्या करूँ? या तो मैं इसके खजूर खरीद लूँ? पर नहीं, उसकी तो मुझे गुठलियाँ फेंकनी पड़ेंगी।

तो फिर मैं इसके कुछ सेब खरीद लेता हूँ। नहीं नहीं, उसके तो मुझे बीच का हिस्सा फेंकना पड़ेगा। तब फिर मैं कुछ गिरियाँ खरीद लेता हूँ। मगर उनका भी मुझे छिलका फेंकना पड़ेगा।

[17] Buchettino – a folktale from Italy.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885.
Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form for free of charge.

तब फिर मैं क्या करूँ? क्या खरीदूँ? हॉ मैं इस पैनी की अंजीर खरीद लेता हूँ। सो तुरन्त ही उसने एक पैनी की अंजीर खरीद लीं और उनको ले कर वह एक पेड़ के नीचे खाने बैठ गया।

जब वह पेड़ के नीचे बैठा अंजीर खा रहा था तो वहॉ से एक ओगरे[18] गुजरा। उसने बूचैटीनो को अंजीर खाते देखा तो उससे बोला —

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा

यह सुन कर बूचैटीनो ने एक अंजीर उसकी तरफ फेंक दी। पर वह नीचे जमीन पर गिर पड़ी। यह देख कर ओगरे फिर बोला —

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा

इस पर बूचैटीनो ने उस ओगरे की तरफ एक और अंजीर फेंक दी। पर इत्तफाक से वह भी जमीन पर गिर पड़ी। यह देख कर ओगरे फिर बोला —

[1818] Ogre – An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

बूचैटीनो, मेरे प्यारे बूचैटीनो
मुझे एक छोटी सी अंजीर दो अपने प्यारे प्यारे हाथों से
अगर तुम नहीं दोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा

बेचारे बूचैटीनो को ओगरे की चाल का पता ही नहीं चला और न ही उसको यह पता चला कि वह ओगरे उसको फँसाने के लिये और उसको पकड़ने के लिये यह सब कर रहा था। अब वह क्या करे?

अबकी बार वह अपने पेड़ के सहारे थोड़ा सा लेट गया और तब उसने अपने छोटे छोटे हाथों से एक अंजीर ओगरे की तरफ फेंकी। बस ओगरे को मौका मिल गया उसने हाथ बढ़ा कर बूचैटीनो को पकड़ लिया और उसको अपने थैले में रख लिया।

थैले को उसने अपने कन्धे पर डाला और खूब ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया —

प्रिये ओ प्रिये, आग पर केटली रखो
क्योंकि आज मैंने बूचैटीनो को पकड़ लिया है
प्रिये ओ प्रिये, आग पर केटली रखो
क्योंकि आज मैंने बूचैटीनो को पकड़ लिया है

जब ओगरे अपने घर के पास पहुँचा तो उसने अपना थैला जमीन पर रख दिया और कुछ और करने के लिये वहाँ से चला गया।

बूचैटीनो ने जब अपने आस पास सब शान्त सुना तो उसने अपने पास रखे चाकू से वह थैला फाड़ डाला और उसमें से बाहर निकल आया।

बाहर निकल कर उस थैले को पत्थरों से भर दिया और गाता हुआ वहॉ से भाग गया —

ओ मेरी टॉगों तुमको भागने में कोई शर्म नहीं है
जबकि तुमको भागने की जरूरत हो

कुछ देर में ही ओगरे वापस लौटा और लापरवाही से अपना थैला उठा कर घर में घुसा और अपनी पत्नी से बोला — "क्या तुमने आग पर केटली रख दी?"

पत्नी तुरन्त ही बोली — "हॉ रख दी।"

इस पर ओगरे बोला — "आज हम बूचैटीनो को पकायेंगे। ज़रा यहॉ आओ और उसको बाहर निकालने में मेरी सहायता करो।"

दोनों ने मिल कर वह थैला उठाया और अंगीठी की तरफ ले चले। वहॉ जा कर वे बूचैटीनो को केटली डालने ही वाले थे कि उन्होंने देखा कि वहॉ बूचैटीनो तो था नहीं बल्कि उनके थैले में तो पत्थर भरे थे।

ज़रा सोचो उन पत्थरों को देख कर उस ओगरे का क्या हाल हुआ होगा। वह तो यह धोखा खा कर पागल सा ही हो गया होगा।

अपने इस पागलपन में उसने तो अपने दाँतों से अपने हाथ ही काट लिये। वह इस चाल को सह नहीं सका और बूचैटीनो को बदला लेने के लिये फिर से पकड़ने चल दिया।

अगले दिन वह सारे शहर में घूमता फिरा और सब छिपने वाली जगहों को देखता फिरा कि कहीं उसको बूचैटीनो मिल जाये। आखिर बूचैटीनो उसको एक छत पर बैठा दिखायी दे गया।

वह ओगरे की तरफ देख कर उसकी इतनी हँसी उड़ा रहा था कि उसका मुँह उसके कानों तक फैल रहा था।

पहले तो ओगरे ने सोचा कि वह उसके ऊपर अपना गुस्सा दिखाये पर फिर उसने अपने आप को रोक लिया और बूचैटीनो से बहुत ही नम्रता से पूछा — "बूचैटीनो, ज़रा यह तो बताओ कि तुम वहाँ इतनी ऊपर चढ़े कैसे?"

बूचैटीनो ने पूछा — "क्या तुम सचमुच ही यह जानना चाहते हो? तो सुनो। मैंने प्लेटों के ऊपर प्लेटें रखीं, गिलास के ऊपर गिलास रखे, पैन[19] के ऊपर पैन रखे, केटली के ऊपर केटली रखी और यहाँ चढ़ कर बैठ गया।"

[19] Used for Frying Pan.

"अच्छा ऐसा है? तो थोड़ा इन्तजार करो।" यह कह कर ओगरे ने प्लेटें गिलास केटली पैन इकट्ठे किये और उनका एक पहाड़ सा बना लिया। फिर उसके ऊपर उसने बूचैटीनो को पकड़ने के लिये चढ़ना शुरू किया।

जैसे ही वह उस पहाड़ के ऊपर पहुँचा तो यह क्या? फड़ाक। वह सारा पहाड़ नीचे गिर पड़ा और इस तरह से वह ओगरे एक बार फिर से धोखा खा गया।

बूचैटीनो यह देख कर बहुत खुश हुआ और अपनी माँ के पास भाग गया। माँ ने उसको इतना खुश देख कर एक छोटी सी कैन्डी उसके छोटे से मुँह में रख दी।

5 मकड़ा और कौए[20]

यह लोक कथा भी अंजीर की है पर यह कथा पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में अकाल पड़ा और किसी के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था। किसी का मतलब बस केवल कौओं को छोड़ कर और किसी के पास भी खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

रोज वे कौऐ अंजीर तोड़ने के लिये बहुत दूर उड़ कर नदी के बीच वाले एक टापू पर जाते थे। वहॉ अंजीर का पेड़ खड़ा हुआ था। वहॉ से वे ये फल खाने के लिये घर ले आते थे।

जब मकड़े ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही एक तरकीब सोची। उसने अपने पीछे के हिस्से पर मधुमक्खी का मोम लगाया, मिट्टी का एक टूटा बर्तन लिया और कौओं के पास गया। वहॉ जा कर उसने उनसे एक जलता हुआ कोयला मॉगा।

वह जब कौओं के पास पहुॅचा तो कौए खाना खाने में लगे हुए थे। उनके चारों तरफ बहुत सारी अंजीरें पड़ी हुई थीं।

---

[20] Spider and the Crows – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Translated in English by Dianne Stewart. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form for free of charge.

मकड़ा वहॉ पहुँच कर और चालाकी से एक अंजीर के ऊपर बैठता हुआ बोला — "प्यारे दोस्तों नमस्कार। क्या मुझे एक जलता हुआ कोयला मिल सकता है?"

कौओं ने उसको एक जलता हुआ कोयला दे दिया। जलता हुआ कोयला ले कर उसने कौओं को धन्यवाद दिया और वह जिस अंजीर पर बैठा था उस अंजीर को अपने पीछे चिपकाये चिपकाये अपने घर वापस आ गया।

कौओं को उसके ऊपर कोई शक नहीं हुआ क्योंकि चालाक मकड़ा उनके साथ बहुत ही नम्र था और जब वह वहॉ से गया तो वह थोड़ा पीछे भी चला था तो उनको उसके पीछे का हिस्सा भी दिखायी नहीं दिया।

घर आ कर मकड़े ने उस कोयले को बुझा दिया और कौओं के पास फिर से और आग लेने के लिये पहुँच गया। इस बार मकड़े ने बैठने के लिये सबसे बड़ी और खूब पकी हुई अंजीर चुनी। कुछ देर बाद वह वहॉ से फिर से जलता हुआ कोयला और अंजीर ले कर चला आया। पर इस बार वह वहॉ गन्दा कर के भी चला आया।

यही उसने तीसरी बार भी किया। पर इस बार कौओं को कुछ शक हुआ सो उन्होंने उससे पूछा — "तुम बार बार हमारे पास जलता हुआ कोयला लेने के लिये क्यों आते हो?"

मकड़ा बोला — "जब तक मैं उस कोयले को ले कर घर पहुँचता हूँ वह कोयला जल जाता है और बार बार मेरे साथ यही होता है।"

एक बूढ़ा कौआ बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे पूरा यकीन है कि तुम खुद ही उसे बुझा देते हो ताकि इसका बहाना ले कर तुम यहाँ फिर आ सको। तुम हमारे खाने के पीछे हो, ओ चालाक जानवर।"

यह सुन कर मकड़े ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया — "ओह नहीं, यह बात नहीं है। यह सच नहीं है। कोयला अपने आप ही जल कर खत्म हो जाता है। उफ़, जबसे मेरे माता पिता मरे हैं तबसे मेरी ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो गयी है।

वे जब तक ज़िन्दा थे उन्होंने मुझसे हमेशा यही कहा कि अगर मुझे किसी चीज़ की जरूरत हो तो मैं अपने दोस्तों कौओं के पास जाऊँ।

हाँ हाँ यही कहा था उन्होंने मुझसे। और देखो तो तुम लोग मुझसे किस तरह का बर्ताव कर रहे हो।" और यह कह कर उसने फिर से सुबकना शुरू कर दिया।

उस बूढ़े कौए ने एक अंजीर उठायी और मकड़े से बोला — "अच्छा अच्छा अब रोना बन्द करो और यह ले जाओ। अगर तुम कल सुबह जल्दी आ जाओगे तो हम तुमको अंजीर के पेड़ के पास तक ले चलेंगे।"

मकड़ा तो यही चाहता था। उसने कौओं को धन्यवाद दिया और जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था उतनी तेज़ी से दौड़ कर वह अपने घर आ गया।

उस रात जब कौए सो रहे थे तो मकड़े ने एक तिनकों का गट्ठर लिया और उसको उनके घोंसलों के पास ले जा कर उसमें आग लगा दी।

जब उस गट्ठर की लपटें काफी ऊँची उठने लगीं तो वह चिल्लाया — "सुबह हो गयी, सुबह हो गयी। देखो तो सुबह के सूरज ने आसमान कितना लाल कर दिया।"

पर उसी बूढ़े कौए ने जवाब दिया — "नहीं ओ मकड़े, यह तो तुमने आग जलायी है। तुम तब तक इन्तजार करो जब तक मुर्गा बोलता है।"

यह सुन कर मकड़ा एक मुर्गी के घर में घुस गया और वहाँ जा कर मुर्गों को तंग करने लगा जब तक कि मुर्गियाँ चीं चीं नहीं करने लगीं और एक बड़े मुर्गे ने बाँग नहीं लगा दी। वह फिर कौओं के घोंसलों के पास आया और चिल्लाया — "जागो। सवेरा हो गया।"

उस बूढ़े कौए ने फिर जवाब दिया — "धोखेबाज मकड़े, तुमने तो मुर्गियों को जगाया है यह मुर्गा अपने आप नहीं बोला। आओ,

हम तब तक इन्तजार करते हैं जब तक कि प्रार्थना की पहली आवाज[21] लगती है।"

वह मकड़ा तुरन्त ही एक झाड़ी के पीछे गया और वहॉ से उसने आवाज लगायी — "अल्लाह की जय हो। अल्लाह की जय हो।"

बूढ़े कौए ने फिर कहा — "नहीं नहीं। मैं उस आवाज को अच्छी तरह पहचानता हूॅ। यह तो तुम मकड़े हो जो आवाज लगा रहे हो। तुम घर चले जाओ। जब सूरज निकलेगा तो मैं तुमको खुद बुला लूॅगा।"

अब वह मकड़ा सिवाय इन्तजार करने के और कुछ नहीं कर सकता था सो वह अपने घर चला गया और जा कर सो गया।

कुछ देर में रोशनी होने लगी और कौए जागने लगे। मकड़ा भी वहॉ आ गया। हर कौए ने उसको अपना एक एक पंख दिया और उन उधार लिये हुए पंखों से वह मकड़ा उन कौओं के साथ उस अंजीर के पेड़ की तरफ उड़ चला जो नदी के बीच में खड़ा था।

पर हर बार जब भी कोई कौआ कोई अंजीर तोड़ना चाहता वह चिल्लाता — "मैंने इसको पहले देखा है इसलिये यह अंजीर मेरी है।" और फिर वह उस अंजीर को तोड़ कर अपने थैले में रख लेता।

[21] Here the "crow" means that first call to Allah which Muslims do in the morning in their mosque – called Azaan.

यह सिलसिला इसी तरह से चलता रहा जब तक कि उस पेड़ पर के सारे फल खत्म नहीं हो गये। इस तरह मकड़े ने सारे फल अपने लिये तोड़ लिये और कौओं को एक भी फल नहीं मिला।

वह बूढ़ा कौआ बोला — "अब मुझे मालूम हुआ कि तुम सचमुच में चालबाज हो।" गुस्से में आ कर सब कौओं ने उससे अपने अपने पंख छीन लिये जो उन्होंने उसको दिये थे और उसको वहीं अकेला छोड़ कर उड़ गये।

अब वह मकड़ा वहाँ अकेला उस अंजीर के पेड़ के ऊपर चारों तरफ से पानी से घिरा बैठा रहा। ज़िन्दगी में पहली बार उसकी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

बाद में जब अँधेरा होने लगा तो वह रोने लगा। आखीर में उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ इस पेड़ पर अपनी सारी ज़िन्दगी नहीं बिताना चाहता तो मुझे कौओं की तरह हवा में कूदना पड़ेगा। सो उसने हवा में एक कूद लगायी। पर वह तो पानी में मगरों के बीच जा पड़ा।

एक मगर बोला — "अरे यह यहाँ क्या चीज़ है? क्या हम इसको खा सकते हैं?"

मकड़ा तुरन्त बोला — "मजाक मत करो।" और फिर सुबकना शुरू कर दिया।

सुबकते हुए वह बोला —"मैं तो तुममें से ही एक हूँ। क्या तुम को पता नहीं कि हर आदमी बरसों से मुझे ढूँढ रहा है। तुम्हारे बाप दादाओं के समय में जब मैं छोटा था मैं तभी भाग गया था। और तबसे कोई मुझे ढूँढ ही नहीं सका। तुम मेरे परिवार के पहले आदमी हो जिनसे मैं मिला हूँ।"

मकड़ा इतनी ज़ोर से रोया कि उसके ऑसू जमीन तक फैल गये। मगरों ने भी अपने मगर के ऑसू[22] रोये।

"बेचारा।" कह कर वे भी अपनी नाक बहुत ज़ोर से सुड़कते हुए बहुत ज़ोर से रोये।

फिर बोले — "तुम नदी के पास जो हमारा घर है और जहॉ हम अपने अंडे देते हैं वहॉ हमारे साथ रह सकते हो।"

पर उनमें से एक मगर को शक हो गया। उसने सोचा कि हमको इस मकड़े की ठीक से जॉच करनी चाहिये कि यह हममें से एक है भी या नहीं।

सो उसने एक दूसरे मगर से धीरे से कहा — "आओ, इस अजनबी को हमको थोड़ा सा कीचड़ का सूप पीने को देना चाहिये। अगर यह उसको पी लेता है तब तो यह सच बोल रहा है, पर अगर यह उसे नहीं पीना चाहता तो हमको तुरन्त ही पता चल जायेगा कि यह झूठ बोल रहा है और मुझे तो यह लगता है कि यकीनन यह हममें से एक नहीं है।"

[22] Crocodile tears is an idiom for crying fakely.

ऐसा ही किया गया। पर जब मकड़े ने एक घड़ा[23] भर कर कीचड़ का सूप देखा तो उसने बहाना किया कि वह तो उस सूप को देख कर बहुत खुश था।

फिर उसने उस सूप को पीने का बहाना करते हुए कहा — "तुमको इस सूप को बनाने का मेरी दादी का यह नुस्खा कहॉ से मिला?"

पर उसने उनसे बातें करते करते अपने पिछले पैरों से अपने पीछे चुपचाप एक गड्ढा खोदा और अपने आगे वाले पैरों से उस घड़े की तली में एक छोटा सा छेद किया।

"यह सूप तो बहुत ही स्वादिष्ट था।" कहते हुए वह घड़ा उसने अपने पीछे रख दिया और वहॉ उस घड़े का सारा सूप नीचे निकल गया।

सारे मगरों ने जब खाली घड़ा देखा तो एक साथ बोले — "अरे यह तो हममें से ही एक है।" सो उन्होंने उस मकड़े को अपने घर में जहॉ छोटे छोटे मगर थे और एक सौ एक मगर के अंडे थे सोने के लिये कह दिया।

मकड़े ने आने से पहले मगर के बच्चों से कहा — "याद रखना बच्चो, अगर तुम लोग रात में कोई आवाज़ सुनो तो डरना नहीं क्यों

[23] Translated for the word "Gourd", which is the hard outer cover of a pumpkin like fruit. It can be of several shapes and is used to keep wet or dry things. See their picture above.

कि वह मेरी डकार की आवाज़ होगी जो तुम्हारी मॉ के इतने स्वादिष्ट सूप बनाने की वजह से आयेगी।"

जब सब मगर सो गये तो उसने मगर का एक अंडा उठाया और आग में फेंक दिया। "फट" की आवाज़ करते हुए वह अंडा फूट गया। यह सुन कर बच्चों ने आपस में कहा — "यह तो हमारे अजीब दादा के डकार लेने की आवाज़ है।"

और बड़े मगरों ने उस फट की आवाज़ को सुन कर कहा — "चुप, अपने परिवार के लोगों के बारे में ऐसी बात नहीं करते।"

पर मकड़ा बोला — "कोई बात नहीं। ये तो मेरे पोते पोतियॉ हैं जो ये कहना चाहते हैं इनको कहने दो।"

इस तरह सारी रात वह मकड़ा उन अंडों को आग में भूनता रहा और खाता रहा और इस तरह उसने वहॉ रखे सारे अंडे खत्म कर दिये।

सारी रात मगर फट फट की आवाज सुनते रहे और हर बार हर फट की आवाज़ पर बच्चे कहते रहे — "यह हमारे दादा जी हैं जो डकार ले रहे हैं।"

सुबह तक केवल एक अंडा ही बच रहा। जब बड़े मगरों ने बच्चे मगरों को अंडों को पलटने के लिये कहा तो मकड़ा तुरन्त बोला — "तुम फिक न करो मैंने यह काम पहले ही कर दिया है।"

इस पर बड़े मगरों ने कहा कि अंडों को अब गिन लिया जाये। तो मकड़ा फिर जल्दी से बोला — "मैं एक एक कर के उनको तुम्हारे सामने लाता हूँ तुम उनको गिन लेना।"

सो वह आखिरी बचा हुआ अंडा घर में से उठा कर ले आया। मगरों ने उसे देखा और उस पर एक निशान बना दिया। मकड़ा उस अंडे को ले कर फिर से उस छेद में गायब हो गया।

उसने उस निशान को चाट कर साफ किया और फिर वही अंडा ले कर बाहर आ गया। मगरों ने फिर उस अंडे के ऊपर निशान लगाया और मकड़ा फिर उसको ले कर उस छेद में गायब हो गया।

इस तरह वह उसी अंडे को बार बार लाता रहा। मगर भी अंडों को गिन गिन कर निशान लगाते रहे — एक, दो, तीन, चार। जब तक वे एक सौ एक नहीं हो गये। यह सब रोज चलता रहा और मगर रोज ही यह कहते रहे कि हमारे सब अंडे सुरक्षित है।

एक दिन मकड़ा बोला — "मैं बहुत खुश हूँ कि मैंने अपने परिवार वालों को फिर से पा लिया है। पर अब मैं अपनी पत्नी और बच्चों को भी यहाँ लाना चाहता हूँ ताकि हम सब एक साथ रह सकें।"

मगरों ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जाओ और उनको भी यहीं ले आओ। पर जल्दी ही वापस आना ताकि तुम हमारे साथ फिर से खेल सको और अंडे गिनने में हमारी सहायता कर सको।"

चालाक मकड़ा बोला — "यकीनन। यह तो बड़ा अच्छा खेल है। अगर तुम लोग इस नदी को पार करने में मेरी सहायता कर दो तो मैं बहुत जल्दी ही वापस आ जाऊँगा।"

सो एक मगर ने उसको एक नाव में बिठा दिया और दो मगरों ने उस नाव को खे दिया।

पर उन दोनों नाव को खेने वाले मगरों में से एक को इस मकड़े पर कुछ शक हो गया। जब वे नदी के बीच में थे वह पलटा और बोला — "तुम ज़रा मेरा इन्तजार करो मैं अभी वापस आता हूँ। मैं ज़रा अंडे देख आऊँ।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग लिया।

घर जा कर उसको केवल एक ही निशान लगा अंडा मिला। वह तुरन्त वापस आया और चिल्ला कर दूसरे मगरों को बताया कि वहाँ तो केवल एक ही अंडा है।

सारे मगर चिल्लाये — "इतना बड़ा धोखेबाज। उसको तुरन्त वापस लाओ। वह हममें से एक नहीं है।"

पर जो मगर नाव खे रहा था वह थोड़ा सा बहरा था। मगर ने उससे पूछा कि दूसरे मगर उससे क्या कहना चाह रहे थे। मकड़ा बोला — "सुनो, वे लोग कह रहे हैं कि तुम जल्दी करो क्योंकि नदी में पानी बढ़ने वाला है।"

और उसको नदी के उस पार जल्दी ले जाने के लिये कोंचता रहा जब तक कि नदी का दूसरा किनारा नहीं आ गया और वह मगरों से सुरक्षित नहीं हो गया।

6 सालमन्ना अंगूर[24]

दूसरे फलों की लोक कथाओं की यह लोक कथा अंगूर की एक लोक कथा है जो हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में अंगूरों की यह जाति लोगों की जान बचाती है।

एक बार एक राजा था जिसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। वह शादी के लायक थी। उधर पड़ोस के राज्य के एक राजा के तीन बेटे थे और वे तीनों उस राजकुमारी को प्यार करते थे।

सो एक दिन वे राजकुमारी से शादी का प्रस्ताव ले कर राजा के पास गये तो राजकुमारी के पिता ने कहा — "जहॉ तक मेरा सवाल है मेरे लिये तो तुम तीनों ही बराबर हो।

मैं तुम तीनों में से किसी को भी यह नहीं कह सकता कि तुम तीनों में से फलॉ राजकुमार मुझे ज़्यादा अच्छा लगता है पर मैं तुम लोगों में आपस में जलन भी नहीं पैदा करना चाहता।

इसलिये ऐसा करते हैं कि क्यों न तुम सब छह छह महीने के लिये दुनियॉ घूमो और जो भी राजकुमारी के लिये सबसे अच्छी भेंट ले कर आयेगा वही मेरा दामाद[25] बनेगा।"

---

[24] The Salamanna Grapes (Story No 65) – a folktale from Italy from its Montale Pistoiese area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Its most stories are available in HIndi from hindifolktales@gmail.com as e-book form free of charge.

[25] Son-in-law – daughter's husband

सो वे तीनों भाई साथ साथ निकल पड़े। चलते चलते वे लोग एक ऐसी जगह आये जहॉ से सड़क तीन दिशाओं में जाती थी। वे लोग वहीं पर ठहर गये और छह महीने बाद वहीं पर मिलने का वायदा कर के तीनों ने अलग अलग सड़क पकड़ी और अपने अपने रास्ते चल दिये।

सबसे बड़ा भाई तीन, चार, पॉच महीने तक चलता रहा पर उसको कहीं कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जो राजकुमारी को भेंट देने के लायक होती।

तब छठे महीने में एक सुबह को बहुत दूर के एक शहर में उसने अपनी खिड़की के नीचे एक ठेले वाले[26] को यह आवाज लगाते सुना — "बढ़िया कालीन ले लो, बढ़िया कालीन ले लो।"

उसने खिड़की से बाहर झॉका तो नीचे एक कालीन वाले को कालीन बेचते देखा। कालीन बेचने वाले ने उससे पूछा — "क्या आप एक बढ़िया कालीन खरीदेंगे?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "जब कुछ नहीं मिलेगा तब देखूॅगा। कालीन तो मेरे महल में सब जगह बिछे हुए है, यहॉ तक कि मेरी तो रसोई में भी कालीन बिछा हुआ है।"

पर कालीन बेचने वाले ने जिद की — "पर मुझे यकीन है कि आपके घर में ऐसा जादुई कालीन नहीं होगा जैसा मेरे पास है।"

[26] Translated for the word "Hawker"

"इस कालीन में क्या खास बात है भाई?"

"इस कालीन में यह खास बात है कि जब आप इस पर पैर रखेंगे तो यह आपको हवा में उड़ा कर दूर दूर तक ले जायेगा।"

राजकुमार ने चुटकी बजायी और सोचा — "यही सबसे अच्छी भेंट है राजकुमारी के लिये। मैं इसे ही उसके लिये खरीद लेता हूँ।"

उसने कालीन बेचने वाले से पूछा — "इसका क्या दाम है?"

"सौ काउन[27]।"

"ठीक है।" उसने सौ काउन गिने और वह कालीन उससे खरीद लिया।

जैसे ही उसने उस कालीन के ऊपर पैर रखा वह कालीन तो उसको ले कर हवा में उड़ चला – पहाड़ों के ऊपर, घाटियों में हो कर और फिर वह वहाँ उसी सराय में आ गया जहाँ तीनों भाइयों ने अपनी छह महीने की यात्रा से लौट कर मिलने का वायदा किया था।

उसके दोनों भाई अभी तक नहीं लौटे थे।

X X X X X X X

बीच वाला भाई भी दूर दूर तक गया पर वह भी कोई ऐसी चीज़ नहीं पा सका जिसको वह राजकुमारी के लिये भेंट में ले जा सकता।

[27] Crown is the currency used in those days in Europe

वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि एक दिन उसको एक दूरबीन बेचने वाले की आवाज सुनायी पड़ी — "दूरबीन ले लो दूरबीन। ओ नौजवान, दूरबीन खरीदोगे?"

राजकुमार ने कहा — "मैं और दूरबीन ले कर क्या करूँगा? मेरे घर में तो बहुत सारी दूरबीन हैं।"

दूरबीन बेचने वाला बोला — "मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि आपके घर में बहुत सारी दूरबीनें जरूर होंगी पर आपने ऐसी जादुई दूरबीनें कभी नहीं देखी होंगी।"

"ऐसी क्या खास बात है इन दूरबीनों में?"

दूरबीन बेचने वाला बोला — "इन दूरबीनों से आप केवल सौ मील दूर का ही नहीं बल्कि दीवार के उस पार का भी देख सकते हैं।"

राजकुमार यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा "राजकुमारी के लिये यही बहुत अच्छी भेंट है मैं इसी को खरीद लेता हूँ।"

उसने दूरबीन बेचने वाले से पूछा — "कितने की दी है यह दूरबीन?"

"सौ काउन की एक दूरबीन।"

उसने भी सौ काउन उस दूरबीन बेचने वाले को दिये और उससे एक दूरबीन खरीद ली।

दूरबीन ख़रीद कर वह भी उसी सराय में आ गया जहाँ उसका बड़ा भाई ठहरा हुआ था। वहाँ वे दोनों अब अपने सबसे छोटे भाई का इन्तजार करने लगे।

X X X X X X X

सबसे छोटे भाई को आख़िरी दिन तक कुछ नहीं मिला। वह अब अपनी सारी आशाऐं छोड़ चुका था। सो उसने ख़ाली हाथ ही घर लौटने का निश्चय किया।

जब वह घर वापस आ रहा था तो रास्ते में उसको एक फल बेचने वाला मिला। वह चिल्लाता जा रहा था — "सालमन्ना अंगूर ले लो, सालमन्ना अंगूर। ये बहुत बढ़िया सालमन्ना अंगूर हैं।"

इस राजकुमार ने कभी सालमन्ना अंगूर का नाम नहीं सुना था क्योंकि वे उसके देश में उगते ही नहीं थे। सो वह उस फल बेचने वाले के पास गया और उससे पूछा — "ये सालमन्ना अंगूर क्या होते हैं?"

फल बेचने वाला बोला — "ये सालमन्ना अंगूर कहलाते हैं और इनसे ज़्यादा अच्छे अंगूर दुनियाँ भर में कहीं नहीं होते। ये एक और आश्चर्यजनक काम करते हैं।"

"वह क्या?"

"एक अंगूर किसी ऐसे आदमी के मुँह में रखो जो अपनी आखिरी साँसें ले रहा हो तो वह तुरन्त ही ठीक हो जाता है।"

राजकुमार खुशी से चिल्लाया — "क्या तुम ठीक कह रहे हो? अगर ऐसा है तो मैं इनमें से कुछ खरीद लेता हूँ। कितने के हैं ये?"

"हालाँकि ये अंगूर एक एक कर के बेचे जाते हैं पर मैं आपके लिये इनका खास कम दाम लगा दूँगा – सौ काउन का एक अंगूर।"

राजकुमार के पास केवल तीन सौ काउन थे सो उनसे वह केवल तीन अंगूर ही खरीद सका। उसने उनको एक छोटे से बक्से में रखा और अपने भाइयों से मिलने के लिये सराय चल दिया।

जब वे तीनों भाई सराय में मिले तो तीनों ने एक दूसरे से पूछा कि उन्होंने क्या क्या खरीदा।

सबसे बड़ा लड़का बोला — "ओह केवल एक छोटा सा कालीन।"

बीच वाला लड़का बोला — "मैंने एक छोटी सी दूरबीन खरीदी।"

सबसे छोटा वाला लड़का बोला — "और मैंने केवल एक छोटा सा फल खरीदा, ज़्यादा कुछ नहीं।"

और तीनों अपने घर की तरफ चल पड़े कि उनमें से एक लड़का बोला — "पता नहीं हमारे घर में अभी क्या हो रहा होगा। और राजकुमारी के महल में भी।"

सो बीच वाले लड़के ने अपनी दूरबीन अपने घर की तरफ की तो देखा कि वहॉ सब ठीक चल रहा था। फिर उसने अपने पड़ोसी राज्य की तरफ देखा जहॉ उसकी प्रेमिका का महल था तो वह तो चीख ही पड़ा।

भाइयों ने पूछा — "क्या हुआ?"

बीच वाला भाई बोला — "मैं इस दूरबीन से अपनी प्रेमिका का महल देख सकता हूॅ। पर वहॉ बहुत सारी गाड़ियों की लाइन लगी है। लोग रो रहे हैं और अपने बाल नोच रहे हैं।

"और महल के अन्दर?"

"महल के अन्दर मुझे एक डाक्टर दिखायी दे रहा है, एक पादरी दिखायी दे रहा है। वे दोनों राजकुमारी के पलंग के पास खड़े हैं। राजकुमारी अपने बिस्तर पर चुपचाप पड़ी हुई है। उसका रंग पीला पड़ा हुआ है और वह मरी जैसी लग रही है।

जल्दी चलो भाइयो जल्दी। इससे पहले कि हमको देर हो जाये हमको जल्दी ही वहॉ पहुॅचना चाहिये।"

"पर हम वहॉ जल्दी कभी नहीं पहुॅच सकते। वह तो पचास मील दूर है।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "तुम लोग चिन्ता न करो। तुम दोनों मेरे इस कालीन पर बैठ जाओ और हम लोग बहुत जल्दी ही वहॉ पहुॅच जायेंगे।"

सो तीनों उस कालीन पर बैठ गये और कालीन उन तीनों को ले कर उड़ चला। पलक झपकते ही वह कालीन तीनों राजकुमारों को ले कर राजकुमारी के कमरे में जा कर एक बहुत ही साधारण से कालीन के ऊपर उतर गया।

सबसे छोटे भाई ने सालमन्ना अंगूरों के चारों तरफ लिपटी हुई रुई पहले से ही हटा रखी थी। उसने झट से एक अंगूर निकाला और राजकुमारी के मुँह में रख दिया।

वह उस अंगूर को निगल गयी और तुरन्त ही उसने अपनी ऑखें खोल दीं। उस लड़के ने जल्दी से एक और अंगूर उसके मुँह में रख दिया जिससे उसके चेहरे का रंग वापस आ गया।

फिर उसने तीसरा और आखिरी अंगूर भी उसको खिला दिया। उसको खाते ही उसने एक गहरी सॉस ली और अपनी बॉहें उठा दीं। वह अपने बिस्तर पर बैठ गयी और उसने अपनी दासियों को हुक्म दिया कि वे उसको उसके सबसे सुन्दर कपड़े पहना कर सजा दें।

सब लोग बहुत खुश थे कि अचानक सबसे छोटा भाई बोला — "मैं जीत गया और अब राजकुमारी मेरी है। बिना मेरे सालमन्ना अंगूर खाये तो अब तक तो वह कभी की मर ही गयी होती।"

बीच वाले भाई ने कहा — "नहीं भाई, अगर मैं अपनी दूरबीन से नहीं देखता और तुमको यह नहीं बताता कि राजकुमारी बीमार है

तो तुम्हारे अंगूर अकेले क्या कर लेते? इस लिये राजकुमारी मेरी है और मैं ही उससे शादी करने का हकदार हूँ।"

सबसे बड़ा भाई बोला — "नहीं भाई नहीं, मुझे अफसोस है कि राजकुमारी तुममें से किसी की भी नहीं है केवल मेरी है और इसे मुझसे कोई नहीं छीन सकता।

तुम लोगों का सहयोग तो मेरे सहयोग के सामने कुछ भी नहीं। अगर मेरा कालीन तुम सबको यहाँ समय से नहीं लाता तो तुम दोनों वहाँ बैठे बैठे क्या कर सकते थे।"

इस तरह राजा जो झगड़ा उन तीनों राजकुमारों मे नहीं चाहता था वह और ज़ोर ज़ोर से होने लगा।

राजा ने फिर उस झगड़े का अन्त इस तरह किया कि उसने अपनी बेटी की शादी किसी चौथे आदमी से कर दी जिसके पास कुछ भी नहीं था।

7 ह्वान और डॉग[28]

तरबूज की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के कोरिया देश में कही सुनी जाती है।

बहुत समय पुरानी बात है कि कोरिया देश में दो भाई रहते थे। उनमें से एक बहुत अमीर था, उसका नाम था डॉग। जबकि दूसरा भाई बहुत गरीब था, उसका नाम था ह्वान।

डॉग के कोई बच्चा नहीं था जबकि ह्वान के कई बच्चे थे जिनको वह ठीक से खाना भी नहीं खिला पाता था। पर गरीब होने पर भी वह और उसकी पत्नी दोनों ही बहुत ही दयालु थे। यहाँ तक कि उसके बच्चे भी हर एक की भरसक सहायता करते थे।

डॉग का एक बहुत बड़ा शानदार मकान था जिसमें एक चौकोर ऑगन था, कई अस्तबल थे, गायों के रखने के कई घर थे और उसके घर के चारों ओर एक ऊँची दीवार भी थी।

जबकि उसका छोटा भाई ह्वान एक छोटी सी गोल झोंपड़ी में रहता था जिसमें नारियल की सींकों की छत थी और जाड़े में ठंड से बचने का भी कोई साधन नहीं था। उसमें केवल एक ही कमरा था जहाँ ह्वान अगर पैर पसार कर सोता तो उसके पैर दरवाजे से बाहर निकल जाते।

[28] Hwan and Dang – a folktale from Korea, Asia.

मगर उसकी पत्नी और बच्चे भूखे रहने पर भी सन्तुष्ट रहते।

हालॉकि ह्वान हर वह काम करता जो उसे मिल जाता और उसकी पत्नी सिलाई करती और जूते बनाती फिर भी कई बार ऐसा होता कि दोनों को कोई काम नहीं मिलता और वे ज़्यादा जूते बनाने के लिये पैसे नहीं जोड़ पाते। बच्चे भूखे रोते और मॉ का दिल दुखता।

एक दिन ह्वान काम की तलाश में बाहर गया हुआ था और घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था तो मॉ ने सोचा कि क्यों न ह्वान के अमीर भाई डॉग से कुछ चावल उधार ले लिया जाये। सो उसने अपने सबसे बड़े बेटे को उसके ताऊ के घर भेजा।

जब वह ताऊ के बड़े ऑगन में था तो उसने गाय के घर में अन्दर झॉका। उसमें खूब मोटी ताजी गायें बॅधी थीं। सूअर भी खूब स्वस्थ थे और स्वस्थ मुर्गे मुर्गियॉ दाना चुगते हुए इधर से उधर घूम रहे थे।

कुछ कुत्तों की निगाह उस बेचारे गरीब लड़के पर गयी तो वे भौंकते हुए उसकी ओर दौड़े। उन्होंने उसके कपड़े फाड़ दिये तो वह उनसे बहुत डर गया।

पर फिर वह हिम्मत कर के उनसे पुचकार कर बोला तो उन्होंने भौंकना बन्द कर दिया यहॉ तक कि फिर एक कुत्ते ने उसके हाथ भी चाटे जैसे वह अपने साथियों की करतूत पर शर्मिन्दा हो।

इस शोर को सुन कर अन्दर से कई नौकर चाकर आ गये और उन्होंने उस लड़के से वहाँ से भाग जाने को कहा तो वह लड़का बोला — "मैं तुम्हारे मालिक का भतीजा हूँ, मुझे अन्दर जाने दो।" उन्होंने उसे इस बात पर तीखी नजरों से देखा पर फिर उसको उसके ताऊ के पास ले गये। उसके ताऊ बरामदे में बैठे लम्बा पाइप पी रहे थे।

डॉग ने पूछा — "तुम कौन हो?"

लड़के ने उनको इज़्ज़त से झुक कर जवाब दिया — "मैं आपका भतीजा हूँ। मुझे यहाँ मेरी माँ ने भेजा है। हमारे घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है और हम लोग तीन दिन से भूखे हैं।

पिता जी काम की खोज में बाहर गये हैं। अगर आप हमें थोड़ा सा चावल उधार दे देते तो... । हम बाद में आपका चावल आपको वापस कर देंगे।"

डॉग बड़ा पत्थर दिल था। पहले तो वह बैठा बैठा पाइप पीता रहा फिर कुछ देर बाद बोला — "मेरा चावल तो ताले में बन्द है और मेरा यह हुक्म है कि मेरे हुक्म के बिना भंडार न खोले जायें।

आटे के भंडार में भी ताला लगा है। अगर मैं तुम्हें घर में से कुछ दूँगा तो मेरे कुत्ते तुमसे उसे छीन लेंगे। इसलिये मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। तुम यहाँ से चले जाओ।"

लड़का बेचारा अपने घर वापस लौट गया जहॉ उसकी मॉ अपने छोटे छोटे रोते हुए बच्चों को चुप करा रही थी। गरीब औरत बेचारी क्या करे। लड़का खाली हाथ वापस लौट आया था।

उसको अपने उन जूतों का ख्याल आया जो उसने ज़्यादा बार नहीं पहने थे। सो उसने उन जूतों को ले कर अपने लड़के को बाजार भेजा। किसी तरह वह उन जूतों को बेच सका जिससे उसने उस दिन के लिये कुछ चावल, मुट्ठी भर दाल और कुछ तरकारी खरीदी।

अगले दिन ह्वान पहाड़ों से इकट्ठी की हुई लकड़ी ले कर घर लौटा। इसके बाद वे लोग जाड़े भर बस थोड़े बहुत खाने पर ही ज़िन्दा रहे।

वसन्त आने पर दक्षिण दिशा से चिड़ियों के झुंड वापस आने लगे। वे सभी ह्वान की झोंपड़ी के पास रहना चाहते थे। कुछ चिड़ियों ने तो उसकी झोंपड़ी के अन्दर ही घोंसला बना लिया था।

ह्वान ने उन्हें देखा तो पत्नी से बोला — "मुझे डर लगता है। इन चिड़ियों ने यहॉ अपना घर बना रखा है। हमारी झोंपड़ी इतनी कमजोर है कि हवा के एक ही झोंके से गिर सकती है। फिर बेचारी ये चिड़ियॉ क्या करेंगी।"

कुछ चिड़ियों ने झोंपड़ी के पीछे की झाड़ियों में अपना घोंसला बना रखा था। बेचारे बच्चे और ह्वान उन घोंसलों को कभी कभी जा कर देख आते थे।

जब अंडों में से बच्चे निकल आये तो ह्वान के बच्चे भी अपने खाने में से ज़रा सा खाना उनके घोंसलों में रख आते। धीरे धीरे वे चिड़िया के बच्चे उनके पालतू से हो गये।

एक दिन वे चिड़ियों के बच्चे उड़ना सीख रहे थे कि उनमें से एक बच्चा ह्वान की झोंपड़ी के ऊपर बने घोंसलों के पास आ बैठा।

सबसे बड़े लड़के ने देखा कि एक सॉप उसी बच्चे के पास से रेंग रहा था। चिड़िया के बच्चे ने भी उसे देखा और उससे बच कर भागने की कोशिश में उड़ा लेकिन उड़ नहीं पाया और नीचे गिर गया।

गिरते समय उसके दोनों पैर एक पुरानी डाली में उलझ गये। सॉप उसकी ओर अभी भी बढ़ रहा था।

वह लड़का उसकी कोई सहायता नहीं कर पा रहा था क्योंकि वह सॉप बहुत ऊँचाई पर था और वह अभी बहुत छोटा था।

उसने अपने पिता को पुकारा। उसका पिता तुरन्त ही वहॉ आ गया और आ कर उस चिड़िया के बच्चे को बचा लिया। लेकिन बेचारे चिड़िया के बच्चे के पैरों को काफी चोट आ गयी थी। अपनी पत्नी की सहायता से ह्वान ने उसके पैरों में मरहम लगाया और उसको एक गर्म जगह पर बिठा दिया।

धीरे धीरे उस बच्चे की चोट ठीक होने लगी। एक दो दिन में ही वह चिड़िया अपना खाना फुदक फुदक कर खाने लगी और दो चार दिन में तो वह अपने साथियों के साथ उड़ने भी लगी।

फिर पतझड़ आया और अब उसके बाद जाड़ा आने वाला था। एक शाम को ह्वान और उसका परिवार अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठा था कि उन्होंने एक टेढ़ी टॉग की चिड़िया कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी गाती देखी।

एक बच्चा बोला — "ऐसा लगता है कि वह हमें धन्यवाद दे रही है और हमसे विदा ले रही है क्योंकि अब सब चिड़ियॉ ठंड की वजह से दक्षिण दिशा को जा रही हैं।"

यह उनके लिये ठीक भी था क्योंकि वे अब उस जगह जा रहीं थीं जहॉ कभी कोहरा नहीं पड़ता और जहॉ चिड़ियों के राजा का दरबार लगता था। वहॉ वह उन सबका स्वागत करेगा और उनकी बहादुरी की कहानियॉ सुनेगा।

जब चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को देखा जिसकी टॉगें टूटी हुई थीं तो उसने उससे पूछा कि उसे क्या हुआ था।

चिड़िया ने उसको अपना पूरा हाल बताया किस तरह वह एक गरीब परिवार की वजह से सॉप की पकड़ में आते आते बची। उसी परिवार ने उसकी देखभाल की और उसी ने उसे खाना खिलाया।

चिड़ियों का राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "अगले वसन्त में वापस जाते समय तुम फिर मेरे पास आना मैं उस भले परिवार के लिये तुम्हें कुछ दूँगा।"

फिर वसन्त आया और सब चिड़ियॉ जाने के लिये तैयार हुईं तो चिड़ियों के राजा ने उस चिड़िया को बुलाया और उसे एक बीज दे कर कहा — "यह बीज उस भले परिवार को दे देना।"

बेचारे ह्वान और उसके परिवार के लिये यह ठंड बडी भयानक थी। फिर एक दिन वसन्त में उसके सबसे छोटे बच्चे ने देखा कि एक टूटी टॉग वाली चिड़िया उनके कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर बैठी हुई है मगर आज वह गाना नहीं गा रही है।

बच्चे ने घर के और लोगों को बुला कर उस चिड़िया को उनको दिखाया तो उन्होंने देखा कि उस चिड़िया की चोंच में एक दाना दबा है।

जब चिड़िया ने देखा कि उस परिवार के लोग उसे देख रहे हैं तो उसने वह बीज नीचे गिरा दिया और गाना शुरू कर दिया मानो वह कुछ कहना चाह रही हो। फिर वह उड़ गयी।

ह्वान देखने गया कि चिड़िया ने क्या गिराया तो उसने देखा कि वह एक तरबूज के बीज जितना बड़ा एक बीज था। उसके एक तरफ कोरियन भाषा में लिखा था "बड़ा गूदेदार फल" और दूसरी तरफ बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखा था "मुझे मुलायम जमीन में बो दो और खूब सींचो"।

ह्वान ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस पर लिखा था। वह जानता था कि उस गूदेदार फल की बेल खूब बड़ी होती है इसलिये उसने वह बीज अपनी झोंपड़ी के पास ही बो दिया। चार दिन बाद ही उसमें से दो छोटी छोटी पत्तियॉ निकल आयीं।

पूरा परिवार उसको देखने के लिये बाहर आता था कि वह बेल कितनी जल्दी बढ़ती है। वह वाकई जल्दी जल्दी बढ़ रही थी। जल्दी ही उस फल की बेल उसकी झोंपड़ी पर फैल गयी।

कुछ दिनों बाद वह बेल फूलने लगी और फिर बहुत जल्दी ही उसमें तीन फल लगे। वे फल भी बहुत जल्दी ही बढ़ गये। अब ह्वान उनको काटने की सोच रहा था क्योंकि वे फल तो कच्चे भी बहुत स्वाद होते थे।

परन्तु उसकी पत्नी ने कहा — "ज़रा पक जाने तक इन्तजार करो। कोहरे से जब उनका छिलका थोड़ा सख्त हो जायेगा तब उसे काटेंगे। उसके अन्दर का गूदा हम लोग खा लेंगे और उसके खोल के प्याले बना लेंगे।"

ह्वान को अपनी पत्नी की सलाह अच्छी लगी सो उसने कुछ दिन और इन्तजार किया। कुछ दिन में वे फल पक गये और बेल में कुछ डंठलों के सिवा और कुछ भी नहीं बचा। तीनों बड़े फल ह्वान की झोंपड़ी की छत पर रखे थे। वह उन्हें तोड़ कर नीचे ले आया।

क्योंकि उन फलों का छिलका बहुत सख्त था इसलिये उन फलों को काटने के लिये उसको एक आरी लानी पड़ी। उसने पहला फल

काटा तो वह बेहोश होने से बचा क्योंकि उसमें दो सुन्दर लड़के थे जो मेज पर बैठे थे। उनके हाथों में शराब की बोतलें थीं, मेज पर प्याले थे और एक बक्सा था।

यह सब देख कर ह्वान की पत्नी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। तभी उनमें से एक लड़का बोला — "डरो नहीं, यह भेंट आपको चिड़ियों के राजा ने भेजी है क्योंकि आपने उनकी चिड़िया की सहायता की थी।"

दूसरे लड़के ने बताया कि उन बोतलों में ऐसी शराब थी जो मुर्दा आदमी में भी जान डाल सकती थी और अन्धे को देखने की ताकत दे सकती थी और छोटे बक्से में तम्बाकू था।

अगर कोई गूँगा उस तम्बाकू को पिये तो वह फिर से बोल सकता था। और उस छोटी सुनहरी बोतल में एक ऐसी शराब थी जो बुढ़ापे पर रोक लगा कर रखती थी।"

यह सब कहने के बाद वे गायब हो गये। अब तुम सोच सकते हो कि ह्वान और उसकी पत्नी उन सबको देख कर कितने खुश हुए होंगे। सो वह सब तो उन्होंने उठा कर रख लिया और अब उनको दूसरे दो फल काटने की उत्सुकता होने लगी।

सो उन दोनों ने दूसरे फल को काटना शुरू किया। इस फल को भी काटना बहुत कठिन था। मगर इसको काटने पर भी उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही।

उस फल में हर तरीके की पोशाकें और बढ़िया सिल्क व साटन के हर रंग के थान निकल पड़े। फिर लिनन और सूती कपड़ा निकला। वह सब उस फल के अन्दर कैसे समाया हुआ था यह सब देखने में बड़ा आश्चर्यजनक था।

लेकिन जैसा कि तुमको मालूम है कि उनके पास खाने को कुछ नहीं था इसलिये वे लोग अब यह आशा करने लगे कि शायद तीसरे फल में कुछ खाने के लिये हो।

सो उन्होंने वह सब सामान तो सँभाल कर रख दिया और तीसरा फल काटने की कोशिश करने लगे।

लेकिन तीसरे फल को काटने पर उसमें से छह बढ़ई अपने औजारों के साथ निकले। वे बोले तो कुछ नहीं पर उन्होंने तुरन्त ही एक मकान बनाना शुरू कर दिया, बड़ी शान्ति से और बड़ी जल्दी से।

कुछ ही देर में एक बहुत बड़ा मकान बन कर तैयार हो गया जिसमें एक गोल ऑगन था। गायों, सूअरों और घोड़ों को रखने की खूब जगह थी।

उस जगह के बनते ही खूब सारे बैल और टट्टू उस मकान के दरवाजे से घुसना शुरू हो गये जिन पर चावल तथा दूसरा खाने का सामान लदा हुआ था।

उसके बाद काफी सारे आदमी तथा स्त्रियॉ आये जो लाइन बना कर खड़े हो गये और ह्वान के हुक्म का इन्तजार करने लगे।

अब तो ह्वान और उसके परिवार को विश्वास हो गया कि वे सभी सपना देख रहे थे। लेकिन सपना ही सही यह सब कुछ उनके लिये अच्छा ही हो रहा था।

उन्होंने नौकरों से कहा कि वे सब कुछ ठीक से और सफाई से रखें। फिर कुछ नौकरों को उन्होंने खाना बनाने के लिये कहा और कुछ को नहाने की तैयारी करने को कहा।

वे सब वस्तुओं को जल्दी ही इस्तेमाल कर लेना चाहते थे ताकि सपना खत्म होने पर वे दुखी न हों। पर वह तो सब सच था। उन सबने गर्म पानी से नहा धो कर बढ़िया बढ़िया कपड़े पहने और फिर खूब अच्छा खाना खाया। तुम सोच सकते हो कि वह सब उनको कितना अच्छा लग रहा होगा।

अगले दिन यह सब पड़ोसियों ने देखा तो वह सब ह्वान से मिलने के लिये आये।

उड़ते उड़ते यह खबर उसके भाई डॉग के पास भी पहुँची। सारे पड़ोसी तो ह्वान के भाग्य पर खुश थे परन्तु डॉग उससे ईर्ष्या करने लगा और उसे चोर कहने लगा।

उसने उससे कहा — "ओ बदज़ात कमीने, तुम पूरा का पूरा घर, नौकर और जानवर किस तरह चुरा सके? मुझे सब बताओ वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।"

ह्वान का मन बहुत साफ था सो उसने शुरू से आखीर तक सारा किस्सा डॉग को बता दिया और डॉग सोचता रहा कि अगर

उसका भाई यह सब कर सकता है तो वह क्यों नहीं कर सकता। बस बिना कुछ कहे सुने वह तुरन्त ही घर चला गया।

बच्चो, क्या तुम बता सकते हो कि घर जा कर उसने क्या किया होगा?

घर जा कर उसने खुद तो सारी चिड़ियों को मारना शुरू कर ही दिया और साथ में अपने नौकरों को भी ऐसा ही करने को कहा।

इस तरह बहुत सारी चिड़ियॉ मर गयीं और काफी देर बाद डॉग केवल एक चिड़िया ज़िन्दा पकड़ सका। उसने पहले उसे लॅगड़ा किया फिर उस टॉग पर मरहम लगाया और एक गर्म जगह पर बिठा दिया और उसको खाना देने लगा।

इस तरह उसने सब कुछ वैसा ही किया जैसा कि उसके भाई ने किया था। वह चिड़िया जल्दी ही ठीक हो गयी और उड़ गयी। साथ में जो उसके पट्टियॉ बॅधी थीं वह उसके पैरों में बॅधी की बॅधी रह गयीं क्योंकि डॉग इतनी जल्दी में था कि वह उनको खोलना ही भूल गया था।

पतझड़ में जब वह चिड़िया दक्षिण गयी तो चिड़िया के राजा ने उससे पूछा — "अरे, तुम्हें क्या हुआ?"

उस चिड़िया ने राजा को सब बताया कि किस तरह एक बेरहम आदमी ने बहुत सारी चिड़ियों को मारा और उसकी टॉग तोड़ दी।

राजा ने सिर हिलाया — "अच्छा, अच्छा।"

अगले वसन्त में जब सब चिडियॉ कोरिया वापस जाने लगीं तो चिड़ियों के राजा ने उस टूटी टॉग वाली चिड़िया को एक बीज दिया और उसे उस धनी डॉग को दे देने के लिये कहा।

एक दिन डॉग अपने बरामदे में बैठा बैठा पाइप पी रहा था। धूप खिल रही थी कि एक चिड़िया गाती हुई वहॉ आयी। यही वह आशा कर रहा था सो उस चिड़िया को देखते ही उसने अपना पाइप पीना छोड़ दिया और उसकी चोंच की ओर देखने लगा।

चिड़िया की चोंच में एक बीज था। यह देख कर वह सब कुछ भूल कर उस चिड़िया की ओर भागा। चिड़िया बेचारी डर गयी और वह बीज वहीं छोड़ कर उड़ गयी।

डॉग ने वह बीज खुद उठाया, अपने नौकरों को छूने भी नहीं दिया, जा कर खुद बोया, इस आशा में कि वह बहुत धनी हो जायेगा। वह खुद ही उस बीज को देखता भालता रहा और उसकी रखवाली करता रहा।

इस बीज की बेल ह्वान की बेल से बहुत ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी और जल्दी ही वह भी डॉग के बड़े से घर पर चारों ओर छा गयी। फिर भी वह बढ़ती रही, बढ़ती रही और डॉग के अस्तबल, गायों के घर और सूअरों के घर पर भी छा गयी।

इस बेल में तीन फल की बजाय छह फल लगे और ये इतने बड़े और भारी थे कि लगता था कि इनके बोझ से डॉग के घर की छत ही गिर जायेगी।

डॉग ने कई बढ़ई छत के लिये, कई बढ़ई फलों को काटने के लिये बुलाये।

उसने सोचा कि अच्छा हो अगर वह पहले से ही कुछ आदमियों को फलों की रखवाली के लिये नौकर रख ले क्योंकि सभी जानते थे कि ये फल खजानों का घर हैं इसलिये सभी उनकी ताक में लगे थे।

सभी बढ़इयों और नौकरों को पैसा देना बहुत खर्चीला था। दूसरे बारिश की वजह से उसके मकान की छतें भी टूटने लगीं थीं। उनका प्लास्टर उखड़ने लगा था। बारिश का पानी लगभग सभी कमरों में टपक रहा था।

डॉग की पत्नी रोज शिकायत करती थी और डॉग रोज उसको दिलासा देता — "सब ठीक हो जायेगा तुम फिक्र न करो। हमें जो धन मिलेगा उसको पाने के लिये अगर कुछ और कष्ट भी सहना पड़े तो हमें सह लेना चाहिये।"

आखिर समय आया। डॉग ने कई बढ़इयों को किराये पर रखा। लट्ठे, पहिये, रस्सियों का प्रबन्ध कर के उन फलों को ठीक से नीचे उतार लिया।

अब वे फल उसकी ऊँची दीवार के पीछे बिल्कुल सुरक्षित थे। डॉग ने अपने घर के सभी दरवाजे बन्द कर दिये। सभी नौकरों को बाहर भेज दिया। अब ऑगन में केवल चार लोग थे — डॉग, उसकी पत्नी, एक बढ़ई और उसका एक सहायक।

डॉग ने बढ़ई से कहा कि वह फल काटना शुरू करे पर इस समय बढ़ई सौदेबाजी करने लगा।

डॉग को इस बात पर बहुत गुस्सा आया। वह किसी और को अब अन्दर लाना नहीं चाहता था इसलिये वह बढ़ई को मॉगे हुए पैसों पर ही राजी हो गया।

अब दोनों आदमियों ने आरी से उस फल को काटना शुरू किया। काफी कठिनाई के बाद में जब वह फल कटा तो उसमें से गाने वालों, नाचने वालों और नटों का एक झुंड निकला मानो वह डॉग के घर का ऑगन न हो कर कोई मेले की जगह हो।

डॉग को यह सब बिल्कुल पसन्द नहीं आया। उसको यह सब कुछ गलत सा लगा। उन सबने बाहर निकलते ही गाना बजाना और नाचना शुरू कर दिया जैसे वे किसी भीड़ के सामने नाच गा रहे हों।

डॉग की पत्नी ने सोचा कि यह सब ठीक ही हो रहा था। ये सभी लोग उसके सौभाग्य के सूचक हैं और आने वाले धन की खुशी मनाने आये हैं। परन्तु डॉग तो बस केवल धनी होना चाहता था।

नट लोग ऑगन में रस्सी पर नाचने के लिये डंडे गाड़ रहे थे कि डॉग ने उनको वहॉ से जाने के लिये कहा।

पर आश्चर्य वे वहॉ से नहीं गये और बोले — "तुमने हमें बुलाया सो हम आ गये। अब हमें पॉच हजार नकद दो तभी हम यहॉ से जायंगे। अगर तुम नहीं दोगे तो हम यहीं तुम्हारे पास रहेंगे और तब तक नहीं जायेंगे जब तक तुम हमें पैसे नहीं दोगे।"

अब डॉग के पास उनको पैसे देने के सिवा और कोई चारा नहीं था तो उसने उनको पैसे दिये और उनको ऑगन से बाहर निकाल कर ही दम लिया।

फिर वह गुस्से से बढ़ई की ओर पलटा और बोला — "यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है। जब तक तुम अपना यह बदसूरत और बदशगुनी चेहरा ले कर यहॉ नहीं आये थे तब तक ये फल सोने से भरे हुए थे।"

बढ़ई कुछ नहीं बोला पर वह अपने ऊपर लगाये गये इस इलजाम से बिल्कुल खुश नहीं था कि इसमें उसका कोई हाथ था और सौदा तो फिर सौदा था।

उन्होंने एक फल खोल दिया था और अभी पॉच फल बाकी थे सो एक बार उन्होंने फिर फल काटना शुरू किया।

दूसरे फल में से क्या निकला? उसमें से निकला बौद्ध साधुओं का एक झुंड जो गंजे सिर था और केसरिया कपड़े पहने था। उन्होंने डॉग से मन्दिर के लिये चन्दा मॉगा। डॉग उनकी इस बात से बहुत परेशान हुआ।

पर अभी भी उसका उन फलों में पूरा विश्वास था और वह नहीं चाहता था कि ये साधु लोग उसका खजाना देखें और फिर और अधिक धन की मॉग करें इसलिये उसने उनको भी पॉच हजार नकद चन्दा दिया और दरवाजे से बाहर कर दिया।

अब तीसरा फल काटा गया। उसमें से बहुत सारे दुखी आदमी निकले और उनके पीछे चार आदमी एक लाश को अरथी पर लिये थे। वे दुखी आदमी फल से बाहर निकलते ही खूब ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

उनके रोने की आवाज से तो ह्वान का सारा ऑगन गूँज उठा। उसने जब उनको जाने को कहा तो वे बोले — "हमें कुछ पैसे दो ताकि हम इस लाश का अन्तिम संस्कार कर सकें।"

बहुत दुखी हो कर डॉग ने उनको भी पॉच हजार नकद दिया और उनसे किसी तरह छुटकारा पाया।।

अब डॉग की पत्नी को लगने लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है सो उसने भी बढ़ई को डॉटा कि उसी की वजह से यह सब हो रहा है।

बढ़ई ने जवाब दिया — "अगर ऐसा है तो मेरी मजदूरी मुझे दे दीजिये मैं चला जाता हूँ।"

डॉग और उसकी पत्नी ने सोचा कि अब इस समय यह बढ़ई गया तो नया बढ़ई खोजना कठिन होगा और अभी तो तीन फल और थे तोड़ने के लिये इसलिये डॉग उसको किये हुए काम के पैसे देने को राजी हो गया और बाकी काम के पैसे भी उसने उसको पहले ही दे दिये।।

और अब वह बढ़ई चौथा फल काटने लगा। अब डॉग और उसकी पत्नी उस फल को चिन्ता भरी नजर से देखने लगे कि न जाने उसमें से क्या निकलेगा।

पर इस बार पहले से कुछ अच्छा था। उसमें से कोरिया के प्रान्तों के गाने और नाचने वाली लड़कियों के समूह निकल रहे थे। हर समूह ने अपने प्रान्त का गाना गाया और नाच किया और वे सब मिल कर इतना गाये नाचे कि डॉग करीब करीब पागल सा हो गया।

एक ने हवा के देवता के बारे में गाया तो दूसरे ने कोयल के बारे में ओर तीसरे ने एक पुराने पेड़ के बारे में। चौथे समूह ने एक इतना लम्बा गीत गाया कि लगता था कि वह कभी खत्म ही नहीं होगा। वह गीत घन्टों□सप्ताहों□महीनों और वर्षो के बारे में था।

यह सब कुछ बहुत सुन्दर था क्योंकि उनकी पोशाकें बहुत सुन्दर, चमकीली और भड़कीली थीं। उनका गला बहुत ही मीठा सुरीला था। लेकिन बुरी बात यह हुई कि यह सब करने के बाद उन्होंने भी पॉच हजार नकद मॉग लिये। डॉग को उनको भी पॉच हजार नकद देने पड़े।

जब वे सब लड़कियॉ चलीं गयीं तो डॉग की पत्नी अपने पति से बोली — "स्वामी, अब और फल न खोलिये।"

मगर वह बढ़ई बीच में ही बोला कि उसने जिस काम के पैसे लिये हैं वह उस काम को पूरा किये बिना वहॉ से नहीं जायेगा।

मगर सच तो यह था कि उसको यह सब देखने में बड़ा आनन्द आ रहा था। डॉग और उसकी पत्नी का व्यवहार उसके संग अच्छा नहीं था इसलिये वह उनको परेशान होते देख कर भी खुश हो रहा था। इसलिये उसने जल्दी से पॉचवॉ फल भी काट दिया।

पहले तो उसमें कुछ पीले रंग की चीज़ दिखायी दी मगर वह सोना नहीं था। उसमें से सिपाहियों की सेना, फिर कुछ पुलिस के आदमी और उनके बाद डरावने रूप का एक मजिस्ट्रेट निकला।

डॉग उन सबको देख कर इतना डर गया कि भागने की कोशिश करने लगा मगर उनके रक्षकों ने उसे पकड़ लिया। मजिस्ट्रेट ने एक सिपाही से कहा "मेरा वह लाल बक्सा लाओ।"

डॉग डरा हुआ कॉपता हुआ सा खड़ा देखता रहा। मजिस्ट्रेट ने उस बक्से में से एक लम्बा सा कागज निकाला जिसमें लाल रंग की एक सील लगी थी।

सील तोड़ कर उसने उसे पढ़ा — "आज से डॉग फलॉ आदमी का नौकर है इसलिये उसे उस आदमी को हर साल टैक्स देना चाहिये।"

यह सुन कर डॉग रो पड़ा और बोला — "मगर मेरे पास अब पैसे है कहॉ जो मैं टैक्स दे सकूँ?"

मजिस्ट्रेट शान्तिपूर्वक बोला — "कोई बात नहीं। हमें जो भी कुछ इस घर में मिलेगा हम वही ले लेंगे।" और घर छोड़ने से पहले उन्होंने उसकी सारी कीमती चीज़ें अपने साथ ले लीं।

पर अभी तो छठा फल बाकी था। उसमें से क्या निकला?

बच्चो, उसमें से निकला एक मदारी। निराश डॉग ने देखा कि इस बार वह केवल एक छोटा सा आदमी था सो वह उसका गला पकड़ कर उसे बाहर निकालने जा ही रहा था कि उस मदारी ने जूडो का एक दॉव मारा और डॉग उसके पैरों में आ गिरा।

मदारी ने अब उसके कपड़े फाड़ने शुरू कर दिये और उसके कपड़ों की पट्टियों से उसके हाथ पैर बॉध दिये और फिर वह हॅसते हुए उसके ऊपर से कूद गया।

डॉग की पत्नी ने जो गहने किसी तरह सिपाहियों से बचा लिये थे उसने वे सब उस मदारी को दे दिये और उससे वहॉ से जाने को कहा।

बढ़ई भी अपने साथी और उस मदारी के साथ हाथ में हाथ डाल कर चलता बना। डॉग और उसकी पत्नी निराशा से अपना घर देख रहे थे। उनका पूरा घर बर्बाद हो चुका था और जो कुछ बच भी गया था लोग उसे लूट कर ले गये।

उस दिन के बाद से उन्हें अपने छोटे भाई ह्वान की दया पर ही जीना पड़ा। ह्वान क्योंकि दयावान था इसलिये उसने अपने भाई की सब बुराइयों को भूल कर सहायता की।

8 शहतूत के पेड़ का बच्चा[29]

शहतूत के फल की यह कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की दंत कथाओं से ली है।

चीन देश में शहतूत के पेड़ बहुत होते हैं और रेशम भी बहुत होता है। रेशम के कीड़े इस शहतूत के पेड़ की पत्तियों पर ही पलते हैं।

तीन हजार सात सौ साल पहले चीन में जब सिया साम्राज्य[30] था तब वहाँ एक कुँआरी बुढ़िया रहती थी। उसके पास पहाड़ पर एक खेत था जिसको वह अकेली ही बिना किसी दोस्त और पड़ोसी की सहायता के देखती भालती थी।

बीज बोने से और फसल काटने से पहले वह हमेशा जेड बादशाह[31] को भेंट चढ़ाती थी। और किसी भी जानवर को जो वह जंगल में मारती थी पकाने से पहले वह अपने पुरखों को भेंट चढ़ाती थी। इस तरह से वह अपनी सारी ज़िन्दगी आसमान और धरती के साथ मिल कर रहती चली आ रही थी।

---

[29] The Child of Mulberry Tree – a legend from China, Asia. Adapted from the book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi version is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[30] Hsia Dynasty or Xia Dynasty (2070 – 1600 BC) – supposed to be the FIrst Dynasty. According to tradition, the dynasty was established by the legendary Yu the Great after Shun, the last of the Five Emperors, gave his throne to him. The Xia was later succeeded by the Shang dynasty (1600–1046 BC).

[31] Jade Emperor – the Emperor of Sky

एक रात उसने सपने में देखा कि जेड बादशाह एक बादल पर सवार हो कर धरती पर उतरे और उसके सामने आ कर ठहर गये। उन्होंने उस बुढ़िया से कहा — "तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है और तुम बहुत दयावान हो। मैंने देखा है कि तुम हमेशा ही आसमान को भेंट देती रही हो।

तुम्हारी इस सेवा का इनाम यह है कि मैं तुमको एक सलाह देता हूँ जो तुम्हारी ज़िन्दगी बचायेगा। कल तुम अपने चावल कूटने वाले पत्थर[32] में से पानी निकलता हुआ देखोगी।

जैसे ही उसमें से पानी निकल कर बहना शुरू हो तुम पूर्व की तरफ भाग जाना और किसी भी हालत में पीछे मुड़ कर नहीं देखना जब तक कि तुम अगले गॉव तक न पहुँच जाओ।"

इतना कह कर वह जेड बादशाह तुरन्त ही गायब हो गये। उस बुढ़िया को जेड बादशाह से यह भी पूछने का मौका नहीं मिला कि उसको पीछे मुड़ कर क्यों नहीं देखना चाहिये।

जब वह सुबह जागी तो जो कुछ भी उसने सपने में देखा था वह सब उसको याद रहा पर उसने इसके बारे में सोचा भी नहीं और वह दिन भर अपना चावल इकट्ठा करने की तैयारी में लगी रही।

शाम को वह अपने घर के बाहर अपने पत्थर के बर्तन में चावल कूटने बैठी तो उसकी तली से पानी बह निकला तब उसको

[32] Translated for the "Mortar and Pestle". See its picture above

जेड बादशाह के शब्द याद आये। वह तुरन्त अपने पड़ोसियों को इस बारे में चेतावनी देखने गयी।

जैसे जैसे वह भागती जा रही थी वह चिल्लाती जा रही थी "मेरे पीछे आओ, मेरे पीछे आओ"। गॉव वाले उसकी इस पागलों जैसी चीख को सुन कर डर के मारे कोई सवाल भी नहीं पूछ पा रहे थे और वे भी उसके पीछे पीछे भागे जा रहे थे।

और उसकी ऑखों में डर देख कर तो उनको यह विश्वास भी हो गया कि कुछ बहुत ही बुरा होने वाला है। हालॉकि उनको खतरे की कोई भी बात लग नहीं रही थी फिर भी वे खेतों के बीच से हो कर उस बुढ़िया के पीछे पीछे भागे जा रहे थे।

उनके आगे आसमान साफ था और जमीन पर भी कुछ बुरा नहीं हो रहा था पर उनके पीछे पानी जो उस चावल कूटने वाले बर्तन में से बहना शुरू हुआ था वह मकानों के अन्दर बाहर से होता हुआ उनके पीछे पीछे तेज़ी से चला आ रहा था।

उसके इस तेज़ी से बहने से जो भी झाड़ियॉ आदि उसके रास्ते में आ रही थीं वह उन सबको उखाड़ता जा रहा था। पानी खेतों में हो कर बहता जा रहा था और वह सारे गॉव में फैल गया था।

अब तक वे लोग पास के गॉव के पास तक आ गये थे। अभी तक तो उस स्त्री ने पीछे मुड़ कर देखा नहीं था पर अब वह अपनी उत्सुकता नहीं रोक पायी और पीछे मुड़ कर पानी की उस दीवार को देखा जो उसके पीछे पीछे आ रही थी।

वह तुरन्त पूर्व की तरफ मुड़ी पर इस समय तक तो उसको देर हो चुकी थी। दूसरे लोग तो वहॉ से गायब हो गये थे और पानी उस स्त्री को अपनी लपेट में ले रहा था।

उसके पैर कीचड़ में धॅस गये थे और जब तक पानी उसकी गर्दन तक पहुॅचा वह लकड़ी की बन चुकी थी।

उसने अपने हाथ उठा कर सहायता के लिये पुकारा भी पर किसी ने उसकी चिल्लाहट भी नहीं सुनी। जैसे ही उसने सहायता के लिये पुकारने के लिये अपने हाथ उठाये तो उसके हाथ एक पेड़ की शाखें बन गये।

जब पानी रुक गया तो जहॉ वह स्त्री खड़ी थी वहॉ एक शहतूत का पेड़[33] खड़ा हुआ था। वह पेड़ उस पड़ोस के गॉव के पास ही था जहॉ तक वह स्त्री आ गयी थी।

यह गॉव एक बहुत ही अमीर आदमी यू सीन शी[34] का था। उसकी एक सिल्क का कपड़ा बुनने वाली ने अपनी दोस्तों से सुना कि गॉव के बाहर शहतूत का एक पेड़ अचानक ही प्रगट हो गया है सो वह उसको देखने के लिये और अपने सिल्क के कीड़ों के खाने के लिये शहतूत के कुछ पत्ते लाने के लिये चल दी।

[33] Translated for the word “Mulberry Tree”. See its picture above. Silk worms live on this tree and eat the leaves of this tree only.

[34] Yu Sin Shih

उस दिन खूब धूप निकल रही थी और हवा भी नहीं थी। वहॉ पहुँच कर उसने देखा कि वहॉ तो वाकई शहतूत का एक पेड़ खड़ा है जो पहले वहॉ नहीं था। उसने उस पेड़ से काफी सारी पत्तियॉ तोड़ लीं।

पर तभी उसको एक बच्चे के रोने की आवाज सुनायी दी। उसने आस पास देखने की कोशिश की कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी पर जब उसको अपने आस पास कोई दिखायी नहीं दिया तो उसको यह पक्का हो गया कि रोने की वह आवाज उस शहतूत के पेड़ के तने में से ही आ रही थी।

उसने धीरे धीरे उस पेड़ के तने के चारों तरफ अपने हाथ फेरे तो उसको एक जगह कुछ मुलायम सी महसूस हुई। वह जगह इतनी मुलायम थी कि वह उसमें अपना हाथ घुसा सकती थी सो उसने उसके अन्दर अपना हाथ घुसा दिया।

घुसाते घुसाते उसका हाथ उस पेड़ के तने के बीच के हिस्से तक पहुँच गया और वहॉ उसके हाथों ने एक बच्चे का कोमल मॉस महसूस किया। बहुत सॅभाल कर उसने उस बच्चे को उस शहतूत के पेड़ के तने से बाहर निकाल लिया।

उसने यह समझ लिया था कि वह कोई मामूली बच्चा नहीं था सो उसने उस बच्चे को शहतूत के पेड़ की पत्तियों में लपेटा जो उसने अपने सिल्क के कीड़ों के खाने के लिये इकट्ठा की थीं और उसको अपने घर ले गयी।

अब क्योंकि वह बच्चा नदी के किनारे खड़े एक पेड़ से मिला था उस सिल्क बुनने वाली ने उस नाम आई यिन[35] रख दिया।

वह बच्चा ला कर उसने अपने मालिक यू सीन शी को दे दिया और यू सीन शी ने वह बच्चा पालने के लिये अपने नौकरों को दे दिया।

बच्चा उस मालिक के नौकरों की देख रेख में बड़ा होता गया। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया वह बहुत अक्लमन्द और गुणवान होता गया। वह हमेशा ही जरूरतमन्द लोगों की सहायता करने को तैयार रहता था।

उस समय चीन में बादशाह ची कुई[36] का राज था। वह एक बहुत ही बेरहम और मारने पीटने वाला राजा था। सभी उसके राज्य में उसके कारनामों से दुखी थे चाहे वे कुलीन हों या किसान। ऐसे हालात में एक क्रान्तिकारी नेता चिंग तॉग[37] वहॉ क्रान्ति लाने की कोशिश कर रहा था।

जब वह लोगों में अपनी क्रान्ति जगाने के सिलसिले में इधर उधर आ जा रहा था तो उसने आई यिन के अच्छे चरित्र के बारे में बहुत कुछ सुना। वह उससे मिला तो बहुत खुश हुआ और उससे अपने कामों में शामिल होने के लिये कहा।

[35] I Yin – name of the child of Mulberry Tree
[36] Chieh Kuei – name of the King of China
[37] Ching Tang – name of a Revolutionary leader

आई यिन ने दो बार तो मना कर दिया पर जब उसने उससे तीसरी बार भी जिद की तो वह उसके साथ हो लिया।

कई साल की कोशिशों के बाद वहाँ क्रान्ति आ गयी और ची कुई बादशाह को राजगद्दी से उतार दिया गया। ची कुई बादशाह को गद्दी से उतार कर चिंग ताँग ने शाँग साम्राज्य[38] की स्थापना की और आई यिन को अपना वजीर बना लिया।

उस आदमी ने जो बाढ़ के पानी और शहतूत के पेड़ से पैदा हुआ था चीन में सौ साल से भी ज़्यादा राज किया।

[38] Shang Dynasty (1766-1122 BC) – ruled in 2nd Millenium BC succeeding the Hsia (Xia) Dynasty and followed by the Zhou Dynasrty – 1766-1122 BC

9 मोमोटारो या खूबानी का बच्चा[39]

खूबानी फल की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश की एक बहुत ही मशहूर पुरानी और लोकप्रिय लोक कथा है। यह वहाँ का हर बच्चा पढ़ता है। तो लो तुम भी पढ़ो वहाँ की यह मशहूर पुरानी और लोकप्रिय लोक कथा अब हिन्दी में।

बहुत दिनों पुरानी बात है कि जापान देश में एक जगह एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। एक दिन वह बूढ़ा पहाड़ों पर घास काटने गया और वह बुढ़िया नदी पर कपड़े धोने गयी।

जब वह बुढ़िया कपड़े धो रही थी कि नदी में उछलती कूदती एक बहुत बड़ी सी कोई चीज़ आयी। जब बुढ़िया ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई। उसने पास पड़ा एक बाँस का टुकड़ा उठाया और उससे उसे अपने पास खींच लिया।

जब उसने उसे उठाया तो देखा कि वह तो एक बहुत बड़ी खूबानी[40] थी। उसने जल्दी जल्दी अपने कपड़े धोये और वह खूबानी ले कर घर लौटी ताकि वह अपने बूढ़े को उसे खाने के लिये दे सके।

[39] Momotaro or Little Peachling - folktale from Japan, Asia . Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_18.html

[40] Peach or Persian Apple,

घर आ कर जब उसने वह खूबानी काटी तो उसमें से एक बच्चा निकला। उस बच्चे को देख कर वे दोनों बूढ़े लोग बहुत खुश हुए। उन्हों उसका नाम मोमोटारो रख दिया। मोमोटारो माने छोटी खूबानी क्योंकि वह बड़ी खूबानी में से निकला था।

दोनों बूढ़े लोग उसको बहुत प्यार से पालने लगे। बड़ा हो कर वह बहुत ताकतवर, मजबूत और साहसी आदमी बना। उसको देख कर बूढ़े माता पिता को उससे बहुत सी उम्मीदें लग गयीं सो उन्होंने उसकी पढ़ाई पर और ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया।

जब मोमोटारो ने देखा कि वह तो अब बहुत ताकतवर हो गया है तो उसने शैतानों के टापू से उनका बहुत सारा खजाना घर लाने की सोची। उसने अपने बूढ़े माता पिता से सलाह ली तो उन्होंने भी उसकी ताकत को देखते हुए खुशी खुशी उसको वहॉ जाने की इजाज़त दे दी।

मोमोटारो ने अपनी मॉ से अपने लिये कुछ खाना बनाने को कहा तो उसकी मॉ ने उसके लिये बाजरे के पकौड़े बना दिये। वह पकौड़े उसने अपने थैले में रखे और शैतानों के टापू पर जाने के लिये उसने और भी बहुत कुछ तैयारियॉ कीं और चल दिया।

रास्ते में सबसे पहले उसे एक कुत्ता मिला। उसने मोमोटारो से पूछा — "मोमोटारो, यह तुम्हारी कमर की पेटी में क्या बॅधा है?"

मोमोटारो बोला — "इसमें मेरे पास बाजरे का बहुत ही बढ़िया जापानी खाना है।"

कुत्ता बोला — "थोड़ा सा मुझे भी दो तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" मोमोटारो ने बाजरे के कुछ पकौड़े अपने थैले में से निकाल कर उस कुत्ते को दे दिये और वह पकौड़े खा कर कुत्ता मोमोटारो के साथ चल दिया।

आगे चल कर उनको एक बन्दर मिला। मोमोटारो ने उसे भी अपने कुछ पकौड़े दिये और वह भी उन दोनों के साथ चल दिया। इस तरह अब तीनों शैतानों के टापू पर चल दिये।

आगे चल कर उनको एक चिड़िया मिली। उसने भी मोमोटारो से पूछा कि वह अपनी कमर में क्या बाँध कर ले जा रहा था।

जब मोमोटारो ने उसे बताया कि वह बाजरे से बना बहुत ही बढ़िया जापानी खाना ले जा रहा था तो उसने भी मोमोटारो से थोड़ा सा खाना माँगा और उसके साथ चलने की प्रार्थना की।

सो मोमोटारो ने उसको भी थोड़ा सा खाना दिया और उसको भी अपने साथ ले लिया। अब चारों शैतानों के टापू की तरफ बढ़े।

बहुत जल्दी ही चारों शैतानों के टापू पर आ पहुँचे और सब एक साथ दरवाजा तोड़ते हुए टापू में घुसे। मगर सबसे आगे मोमोटारो था और उसके पीछे उसके तीनों साथी।

शैतानों के टापू पर उन्हें बहुत सारे शैतान मिले और वे सब मोमोटारो से लड़ने के लिये तैयार थे फिर भी मोमोटारो बिना लड़ाई के ही टापू में अन्दर घुसता चला गया।

आखीर में वह शैतानों के सरदार अकान्डोजी[41] के पास आ पहुँचा। वहाँ मोमोटारो की लड़ाई अकान्डोजी से शुरू हुई। अकान्डोजी ने मोमोटारो को एक लोहे के डंडे से मारा पर मोमोटारो पहले से ही तैयार था। वह कुछ नीचे झुक कर अकान्डोजी का वार बचा गया।

आखीर में दोनों ने एक दूसरे को पकड़ लिया और मोमोटारो ने बड़ी आसानी से उस नीचे गिरा कर रस्सी से बाँध दिया ताकि वह हिल भी न सके। और यह सब उसने बिना किसी चालबाजी के किया।

इसके बाद तो अकान्डोजी ने मोमोटारो से कह ही दिया कि वह उसको अपना सारा खजाना दे देगा।

"ठीक है।" कह कर उसने उसका सारा खजाना बटोरा, उसको ठीक से लगाया और सबको ले कर घर चल दिया।

उसने अपने तीनों साथियों को धन्यवाद दिया कि उन्हीं की वजह से वह शैतानों के टापू के सरदार को जीत सका। उसने उन सबको खजाने में से कुछ हिस्सा भी दिया।

मोमोटारो के बूढ़े माता पिता ने मोमोटारो को जब खजाने के साथ आते देखा तो वे खुशी से फूले न समाये। मोमोटारो ने भी उनको अपनी साहसी यात्रा की कहानियाँ सुनायीं। इसके बाद तो

[41] Akandoji – name of the Chief of Devils

वह अपने गॉव में सबसे ज़्यादा अमीर और इज़्ज़तदार आदमी बन गया और वे सब सुख से रहने लगे।

10 जादुई नाशपाती का पेड़[42]

नाशपाती फल की यह लोक कथा हमने तुम्हार लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश से ली है। यह एक बड़ी मजेदार कथा है।

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक बार चीन में एक किसान अपनी बहुत ही मीठी और रसीली नाशपातियॉ[43] बेचने के लिये बाजार गया।

क्योंकि उसकी नाशपातियॉ बहुत ही मीठी और रसीली थीं इसलिये वह सोच रहा था कि उसको उनके बहुत अच्छे दाम मिल जायेंगे। बाजार में जा कर वह एक अच्छी सी जगह देख कर अपनी नाशपातियॉ बेचने के लिये बैठ गया और आवाज लगाने लगा — "बढ़िया वाली नाशपाती ले लो, बढ़िया वाली नाशपाती ले लो।"

उसकी आवाज सुन कर एक फटे कपड़े पहने बूढ़ा साधु[44] उसके पास आया और उसने उससे एक नाशपाती मॉगी।

---

[42] The Magic Pear Tree – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://spiritoftrees.org/the-magic-pear-tree Retold by Alida Gersie

[43] Translated for the word "Pear". See its picture above

[44] Translated for the word "Monk" – this is a rank in Buddhist religious community.

किसान बोला — " मैं तुमको एक नाशपाती क्यों दूँ? तुम तो बहुत ही आलसी आदमी हो। और तुमने तो अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी एक दिन भी ईमानदारी से काम नहीं किया।"

यह सुन कर साधु को थोड़ा आश्चर्य तो हुआ पर फिर भी वह वहाँ से गया नहीं बल्कि उसने अपनी प्रार्थना फिर से दोहरायी। किसान उसकी इस हरकत से और गुस्सा हो गया और उसने उस साधु को और भी बुरा भला कहा।

साधु बोला — "ठीक है जनाब। मैं आपकी गाड़ी में लदी नाशपाती तो नहीं गिन सकता क्योंकि वे तो सैंकड़ों में हैं और मैंने तो आपसे केवल एक नाशपाती ही माँगी थी। फिर इतनी सी बात ने आपको इतना गुस्सा क्यों कर दिया?"

इस बीच उस किसान और साधु के चारों तरफ काफी लोग इकट्ठा हो गये। यह सोचते हुए कि उसके यह कहने से यह समस्या हल हो जायेगी उनमें से एक आदमी ने किसान से कहा — "तुम इस साधु को एक छोटी सी नाशपाती दे क्यों नहीं देते? यह बेचारा एक ही नाशपाती तो माँग रहा है। तुम्हारे पास तो सैंकड़ों में हैं।"

दूसरा बोला — "जैसा वह बूढ़ा कह रहा है वैसा ही कर दो न। केवल एक नाशपाती की ही तो बात है।"

पर किसान तो किसी की सुन ही नहीं रहा था – नहीं तो नहीं। बस।

साधु ने उस बूढ़े को सिर झुका कर धन्यवाद दिया और बोला — "तुमको तो मालूम है कि मैं एक साधु हूँ। जब मैं साधु बना था तो मैंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था। अब न तो मेरे पास घर है और न ही मेरे पास कपड़े हैं जिनको मैं अपना कह सकूँ।

मेरे पास खाना भी नहीं है सिवाय उस खाने के जो लोग मुझे दे देते हैं। ऐसे आदमी को तुम एक नाशपाती देने से कैसे इनकार कर सकते हो जब कि मैं तुमसे माँग रहा हूँ? मैं इतना मतलबी नहीं हो सकता जितना कि तुम मुझे समझ रहे हो।

मैं तुम सब लोगों को जो नाशपाती मैंने बोयी हैं उनको खाने का न्यौता देता हूँ। अगर तुम लोग मेरे न्यौते को स्वीकार कर लोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

यह सुन कर तो वहाँ खड़े लोग चौंक गये। वे सोचने लगे कि जब इस साधु के पास इतनी सारी नाशपाती थीं कि यह सबको खिला सकता है तो इसने इस आदमी से एक नाशपाती माँगी ही क्यों।

पर देखने में ऐसा नहीं लग रहा था जैसे उसके पास कुछ हो। तो फिर उसके कहने का मतलब क्या था?

फिर एक बड़ी उम्र वाले आदमी ने किसान से एक नाशपाती खरीद कर उसको दे दी। उस साधु ने अपनी नाशपाती बड़े ध्यान से खायी जब तक कि उसका एक बहुत ही छोटा सा बीज रह गया।

नाशपाती खा कर उसने वहीं एक गड्ढा खोदा और उस बीज को जमीन में दबा दिया।

फिर उसने भीड़ से एक गिलास पानी माँगा तो एक आदमी ने उसको एक गिलास पानी दे दिया। वह पानी उसने उस बीज को दे दिया। देखते ही देखते उसमें से पहले कल्ला फूटा फिर कुछ हरी पत्तियाँ निकलीं और फिर वे पत्तियाँ भी बहुत जल्दी ही बढ़ती चली गयीं।

वहाँ खड़े लोगों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। पर उनके आश्चर्य का तब तो बिल्कुल ही ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि उस बीज में से तो पत्तियाँ और शाखाऐं निकलती ही चली गयीं निकलती ही चली गयीं और उनके सामने एक छोटा सा नाशपाती का पेड़ खड़ा था।

वह छोटा सा पेड़ वहीं नहीं रुका बल्कि और भी तेज़ी से बढ़ता ही जा रहा था और वे सारे लोग दम साध कर चुपचाप उस पेड़ को बढ़ता हुआ देख रहे थे।

पत्तियों और शाखाओं के बाद उसमें कलियाँ आयीं, फिर फूल आये और फिर वह सारा पेड़ मीठी रसीली नाशपातियों से भर गया।

साधु का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसने उस पेड़ से एक एक कर के नाशपाती तोड़ीं और भीड़ में खड़े सब लोगों को बाँट दीं। सब लोग वे नाशपाती खा कर ताज़ादम हो गये।

पर इससे पहले कि लोग यह जान पायें कि यह सब क्या हो रहा है उस साधु ने एक कुल्हाड़ी ली और उस पेड़ को काट डाला। पेड़ को उसने अपने कन्धे पर रखा और अपने रास्ते चला गया।

किसान तो यह सब देख कर बिल्कुल ही भौंचक्का रह गया। उसको तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि कुछ पल पहले एक पूरा बढ़ा हुआ नाशपाती का पेड़ उसकी अपनी नाशपाती की गाड़ी के पास खड़ा हुआ था और वह पूरा का पूरा पेड़ जो नाशपातियों से लदा हुआ था अब वह उस साधु के कन्धे पर रखा जा रहा था।

तभी उसकी निगाह अपनी नाशपाती की गाड़ी पर गयी तो उसने देखा कि उसकी अपनी गाड़ी तो खाली पड़ी थी। उसमें एक भी नाशपाती नहीं थी। बल्कि उसकी गाड़ी का एक हैन्डिल भी गायब था।

तब उस किसान को पता चला कि क्या हुआ था। उस बूढ़े साधु ने उसकी गाड़ी के एक हैन्डिल से अपनी नाशपाती का पेड़ उगाया और उसी की नाशपातियॉ उस पेड़ पर लगा दी थीं। उसने उस साधु को इधर उधर देखने की कोशिश की पर वह तो उसे कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

नाशपाती का वह पेड़ जो वह साधु इतनी आसानी से काट कर ले गया था कुछ दूर जा कर सड़क के एक किनारे मिला। वह उसकी गाड़ी का गायब हुआ वाला हैन्डिल था।

किसान तो यह सब देख कर आग बबूला हो रहा था पर भीड़ थी कि इस पर हॅसे जा रही थी हॅसे जा रही थी।

तुमको भी हॅसी आयी या नहीं?

11 एक छोटी लड़की जो नाशपाती के साथ बेची गयी[45]

नाशपाती फल की एक और लोक कथा। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक आदमी के पास एक नाशपाती का पेड़ था जिसमें हर साल चार टोकरी नाशपाती आती थी। वह ये नाशपाती राजा को दे आया करता था।

एक साल ऐसा हुआ कि उसमें केवल साढ़े तीन टोकरी नाशपाती ही आयीं जबकि राजा को उसको चार टोकरी नाशपाती दे कर आनी थी। अब वह क्या करे।

जब उसको कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उसने चौथी टोकरी में अपनी सबसे छोटी लड़की को रख दिया। उसको नाशपाती और उसके पत्तों से ढक दिया और उस टोकरी को बाकी की तीन टोकरियों के साथ राजा के महल में दे आया।

सारी टोकरियॉ राजा के रसोई भंडार में ले जायी गयीं। वहॉ वह लड़की उन नाशपातियों के नीचे छिपी रही। पर जब उसको

[45] The Little Girl Sold With the Pears – a folktale from Italy.
Adapted from the book “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

वहॉ कुछ और खाने को नहीं मिला तो वह अपने ऊपर रखी हुई नाशपातियों को ही खाने लगी।

कुछ समय बाद नौकरों ने देखा कि उन टोकरियों में से नाशपातियॉ कुछ कम हो रही थीं और साथ में उन्होंने कुछ कुतरी हुई नाशपातियॉ भी देखीं।

उन्होंने सोचा कि जरूर ही कहीं या तो कोई चूहा है और या फिर कोई मोल[46] है जो नाशपातियॉ कुतर रहा है। हमें टोकरी के अन्दर देखना चाहिये कि उसके अन्दर तो कुछ नहीं है।

सो उन्होंने एक टोकरी में से ऊपर से कुछ नाशपातियॉ और उसके कुछ पत्ते हटाये तो उसमें उनको वह छोटी लड़की दिखायी दे गयी।

उन्होंने उससे पूछा — "अरे तुम यहॉ क्या कर रही हो? चलो हमारे साथ चलो और चल कर राजा की रसोई में काम करो।"

उन्होंने उसको वहॉ से निकाल लिया और उसको परीना[47] नाम दे दिया। परीना इतनी होशियार लड़की थी कि बहुत थोड़े समय में ही वह राजा की बहुत सारी नौकरानियों से भी अच्छा काम करने लगी।

[46] Mole is an animal like a big squirrel. See its picture above.

[47] Perina – the name of the girl

वह सुन्दर भी इतनी थी कि कोई उसको प्यार किये बिना रह ही नहीं सकता था।

राजा का एक बेटा था जो उसी की उम्र का ही था। वह तो उसको छोड़ता ही नहीं था। वह हमेशा ही उसके साथ साथ रहता। वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे।

जैसे जैसे वह लड़की बड़ी होती गयी दूसरी नौकरानियॉ उससे और ज़्यादा जलने लगीं। पहले तो कुछ समय तक तो वे चुप रहीं पर फिर वे परीना को यह इलजाम देने लगीं कि वह यह शान बघारती है कि वह जादूगरनी का खजाना चुरा सकती है।

राजा को इस बात की हवा लगी तो उसने उस लड़की को बुला भेजा। उसने उससे पूछा — "क्या तुम यह कह रही थीं कि तुम जादूगरनी का खजाना चुरा कर ला सकती हो?"

"नहीं जहॉपनाह नहीं, मैंने तो ऐसी कुछ भी शान नहीं बघारी।"

राजा ने ज़ोर दे कर कहा — "नहीं, तुमने ऐसा कहा है। मैंने ऐसा ही सुना है और अब तुमको अपना कहा कर के दिखाना पड़ेगा।" और यह कह कर उसने परीना को उस जादूगरनी का खजाना लाने के लिये अपने महल से बाहर भेज दिया।

परीना महल से निकल कर चलती रही चलती रही जब तक कि रात नहीं हो गयी।

रात होने पर वह एक सेब के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ रुकी नहीं बल्कि चलती ही गयी।

उसके बाद वह एक खूबानी[48] के पेड़ के पास आयी पर वह वहॉ भी नहीं रुकी। लेकिन फिर वह एक नाशपाती के पेड़ के पास आयी। वहॉ वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गयी और सो गयी।

सुबह सवेरे जब वह उठी तो उसने एक बुढ़िया को पेड़ के नीचे खड़े देखा। वह बोली — "मेरी बच्ची, तुम वहॉ ऊपर क्या कर रही हो?"

परीना ने उसको अपनी कहानी सुना दी कि वह किस मुसीबत में फॅस गयी थी। बुढ़िया बोली — "तुम यह तीन पौंड चिकनाई लो, यह तीन पौंड डबल रोटी लो और यह तीन पौंड बाजरा लो और इस रास्ते चली जाओ।"

परीना ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दी। आगे चल कर वह एक डबल रोटी बनाने वाले की बेकरी पर आयी जहॉ तीन स्त्रियॉ ओवन साफ करने के लिये अपने बाल नोच रही थीं।

[48] Translated for the word "Peach tree"

परीना ने उनको वह तीन पौंड बाजरा दिया जो उन्होंने ओवन साफ करने में इस्तेमाल कर लिया और उस लड़की को आगे जाने के लिये कहा।

वह फिर आगे बढ़ी तो उसको तीन बड़े कुत्ते मिले जो वहॉ से किसी भी आने जाने वाले के ऊपर भौंकते थे और उनके पीछे दौड़ते थे। परीना ने उनको तीन पौंड डबल रोटी फेंकी तो वह उन्होंने खा ली और परीना को उसके रास्ते जाने दिया।

उसके बाद वह मीलों चली तो एक खून जैसी लाल रंग की नदी के पास आ पहुॅची। वह सोच ही नही सकी कि वह उसे कैसे पार करे।

फिर उसे याद आया कि उस बुढ़िया ने उससे यह कहने के लिये कह रखा था —

कितना सुन्दर लाल पानी है, पर मुझे जल्दी जाना है नहीं तो मैं तुम्हें जरूर चखती

सो उस बुढ़िया की बात याद कर के उसने वहॉ ऐसा ही कह दिया। ऐसा कहते ही उस नदी का पानी दो हिस्सों में बॅट गया और वह उसमें से बने रास्ते में से उस नदी को पार कर गयी।

नदी के दूसरी तरफ परीना ने दुनियॉ का एक बहुत ही सुन्दर और बड़ा महल देखा। पर उसका दरवाजा इतनी जल्दी से खुल और बन्द हो रहा था कि उसके अन्दर किसी का भी घुसना मुमकिन नहीं था।

सो परीना ने उस दरवाजे के कब्जों[49] में तीन पौंड चिकनाई लगायी तब कहीं जा कर वह बहुत धीरे से बन्द होने और खुलने लगा।

अब परीना उस महल के अन्दर चली गयी। उसने देखा कि खजाना एक मेज पर एक सन्दूकची में रखा है। उसने उस सन्दूकची को उठा लिया और वह उसको उठा कर वहॉ से ले कर जाने ही वाली थी कि वह सन्दूकची बोली — "ओ दरवाजे, इसको मार दे।"

दरवाजा बोला — "मैं इसे नहीं मार सकता क्योंकि इसने मेरे कब्जों में चिकनाई लगायी है जिनको किसी ने न जाने कबसे देखा तक नहीं है।"

परीना दरवाजे में से हो कर निकल गयी। जब वह नदी पर आयी तो वह सन्दूकची बोली — "ओ नदी इसको डुबो दे, इसको डुबो दे।"

नदी बोली — "मै इसको नहीं डुबो सकती क्योंकि इसने मुझसे कहा है कि मेरा लाल पानी कितना सुन्दर है।"

लड़की अब चलते चलते कुत्तों के पास तक आयी तो सन्दूकची ने कुत्तों से कहा — "कुत्तों इसको मार दो, इसको काट लो।"

पर कुत्तों ने कहा — "नहीं, हम इसको नहीं काट सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड डबल रोटी खिलायी है।"

[49] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

फिर वह लड़की चलते चलते बेकरी की दूकान पर आयी तो सन्दूकची ने ओवन से कहा — "इसको जला डालो, ओ ओवन इसको जला डालो।"

पर ओवन की जगह उन तीन स्त्रियों ने जवाब दिया — "हम इसको नहीं जला सकते क्योंकि इसने हमको तीन पौंड बाजरा दिया है और अब हमें इसको साफ करने के लिये अपने बाल नहीं नोचने पड़ेंगे।"

अब परीना करीब करीब अपने घर आ पहुँची थी। उसको भी उस सन्दूकची को देखने की उतनी ही उत्सुकता थी जितनी कि दूसरी छोटी लड़कियों को होती है सो उसने उस सन्दूकची को खोल कर उसमें झाँकने की सोची।

जैसे ही उसने वह सन्दूकची खोली तो उसमें से एक सुनहरी मुर्गी और उसके कई चूज़े निकल पड़े। वे तो उस सन्दूकची में से निकलते ही इधर उधर इतनी तेज़ी से भाग गये कि कोई उनको पकड़ ही नहीं सकता था।

परीना उनके पीछे पीछे भागी। वह सेब के पेड़ के पास से गुजरी पर वे चूज़े तो वहाँ थे ही नहीं। वह खूबानी के पेड़ के पास आयी पर वे तो वहाँ भी नहीं थे।

फिर वह नाशपाती के पेड़ के पास आयी तो वहाँ उसको वह बुढ़िया अपने हाथ में जादू की डंडी लिये खड़ी दिखायी दी और वे मुर्गी और उसके चूज़े उसके चारों तरफ दाना खा रहे थे।

वह बुढ़िया शू शू करती उनके पीछे भागी तो वह मुर्गी और उसके बच्चे फिर से सन्दूकची में घुस गये।

परीना उस सन्दूकची को ले कर जब महल वापस लौटी तो राजा का बेटा उससे मिलने के लिये बाहर आया और बोला — "जब मेरे पिता तुमसे कोई इनाम माँगने को कहें तो उनसे नीचे वाले कमरे में रखा कोयले का बक्सा माँग लेना।"

महल के दरवाजे की सीढ़ियों पर परीना का स्वागत करने के लिये राजा की नौकरानियाँ, राजा और सारा दरबार खड़ा था। परीना ने वह सुनहरी मुर्गी और उसके चूज़े राजा को दे दिये।

राजा बोला — "माँगो तुम क्या माँगती हो परीना? तुम जो भी माँगोगी मैं तुमको वही दूँगा।"

परीना बोली — "मुझे नीचे के कमरे में रखा कोयले का बक्सा चाहिये।"

राजा तो उसकी यह अजीब सी माँग सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसको उसकी यह माँग कुछ अजीब सी जरूर लगी पर वह क्या करता। उसने उसको वायदा किया था कि वह जो माँगेगी वह उसको वही देगा सो राजा के नौकर नीचे के कमरे से वह कोयले का बक्सा तुरन्त ही उठा कर ले आये।

परीना ने उस बक्से को खोला तो उसमें से राजा का बेटा कूद कर बाहर आ गया जो उस बक्से के अन्दर छिपा बैठा था।

राजा ने खुशी खुशी परीना की शादी अपने बेटे से कर दी और सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

12 औलिव[50]

नाशपाती फल की एक और लोक कथा। यह कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक अमीर ज्यू की पत्नी अपनी बच्ची को जन्म देते ही मर गयी सो उस ज्यू को अपनी नयी पैदा हुई बच्ची को पालने पोसने के लिये एक किसान के पास छोड़ना पड़ा। यह किसान ईसाई था।

पहले तो वह किसान इस बोझ को उठाना नहीं चाहता था। उसने कहा — "मेरे अपने बच्चे हैं और मैं आपकी बच्ची को हिब्रू[51] रीति रिवाजों के अनुसार नहीं पाल सकता।

क्योंकि वह हमेशा मेरे बच्चों के साथ रहेगी और हम लोग तो ईसाई हैं तो उनके साथ रहते रहते वह ईसाई रीति रिवाजों को अपना लेगी और वह आपको अच्छा नहीं लगेगा।"

ज्यू बोला — "कोई बात नहीं। पर बस तुम मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी कर दो कि इसको पाल लो। मैं तुमको इसका बदला जरूर दूँगा।

अगर मैं इसको इसकी दस साल की उम्र होने तक लेने के लिये नहीं आया तो तुम जैसा चाहो इसके साथ वैसा करना। क्योंकि इस

[50] Olive (Story No 71) – a folktale from Montale Pistoiese area, Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[51] Hebrew customs and traditions

का मतलब यह होगा कि शायद मैं फिर कभी न आ पाऊँगा। फिर यह बच्ची हमेशा के लिये तुम्हारे पास ही रहेगी।"

इस तरह उस ज्यू और उस किसान में यह समझौता हो गया कि वह अपनी बेटी को अगर दस साल की होने तक न ले जाये तो वह उसके साथ जो चाहे करे और वह बच्ची भी फिर उसी के पास रहेगी। इसके बाद वह ज्यू दूर देशों की यात्रा पर अपने काम पर निकल पड़ा।

बच्ची उस किसान की पत्नी की देख रेख में बड़ी होने लगी। वह लड़की इतनी सुन्दर और अच्छी थी कि वह उस किसान को ऐसी लगती थी जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो।

बच्ची बड़ी होने लगी, वह चलने लगी, फिर वह दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगी और फिर जैसी जैसी उसकी उम्र होती गयी वह वैसा वैसा ही काम भी करने लगी। पर किसी ने भी कभी उसको ईसाई धर्म के बारे में नहीं बताया।

उसने हर आदमी को अपनी अपनी प्रार्थना करते सुना पर उसको यह नहीं पता था कि वे लोग किस धर्म की प्रार्थना करते थे। जब तक वह नौ साल की हुई तब तक वह इन सब बातों से बिल्कुल ही अनजान रही।

जब वह दस साल की हुई तो वह किसान और उसकी पत्नी यह आशा करते रहे कि बस अब किसी भी दिन वह ज्यू अपनी बेटी को लेने के लिये आने वाला होगा।

पर उसका 11वॉ साल भी निकल गया, 12वॉ भी, 13वॉ भी और 14वॉ भी पर वह ज्यू नहीं आया। अब किसान को लगने लगा कि शायद वह मर गया और अब वह कभी अपनी बेटी को लेने नहीं आयेगा।

वह अपनी पत्नी से बोला — "हम लोगों ने काफी इन्तजार कर लिया अब हम इस बच्ची को बैप्टाइज़[52] करा देते हैं।"

सो उन्होंने उसको बड़ी धूमधाम से बैप्टाइज़ करा दिया और ईसाई बना दिया। सारे शहर को बुलाया गया था। उन्होंने उसका नाम औलिव[53] रख दिया। फिर उसको उन्होंने स्कूल भेज दिया ताकि वह वहॉ पढ़ने लिखने के साथ साथ कुछ लड़कियों वाली बातें भी सीख सके।

जब वह अठारह साल की हुई तो वह वाकई में एक बहुत ही अच्छी लड़की बन चुकी थी। उसको सब तौर तरीके आ गये थे और वह बहत सुन्दर भी हो गयी थी। सब उसको बहुत प्यार करते थे।

किसान और उसकी पत्नी भी उसको देख कर बहुत खुश थे और उनके दिमाग में बहुत शान्ति थी। कि एक दिन उनके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और उन्होंने देखा कि वहॉ तो वह ज्यू खड़ा था।

---

[52] Baptize – a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.
[53] Olive

वह बोला — "मैं अपनी बेटी को लेने आया हूँ।"

यह सुनते ही माँ चिल्लायी "क्या? तुम तो यह कह कर गये थे कि अगर तुम दस साल तक नहीं आये तो इसका हम जो चाहे वह कर सकते हैं और फिर यह हमारे पास रहेगी।

इसलिये तबसे यह अब हमारी बेटी है। अब तो यह अठारह साल की हो गयी है अब तुम्हारा इसके ऊपर क्या अधिकार है। हमने इस को बैप्टाइज़ भी करा दिया है और औलिव अब एक ईसाई लड़की है।"

ज्यू बोला — "इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह ईसाई हो या हिब्रू पर बेटी तो यह मेरी ही है न। मैं इससे पहले आ नहीं सका क्योंकि मैं बस आ ही नहीं सकता था पर यह लड़की मेरी है और अब मैं इसको लेने के लिये आया हूँ।"

सारा परिवार एक आवाज में चिल्लाया — "पर हम उसको तुमको नहीं देंगे। यह निश्चित है।"

काफी लड़ाई झगड़ा हुआ तो ज्यू यह मामला कचहरी में ले कर गया। कचहरी ने उसको लड़की को ले कर जाने की इजाज़त दे दी क्योंकि आखिर वह लड़की तो उसी की थी।

अब उस गरीब किसान और उसके परिवार के पास और कोई चारा नहीं था कि वह कचहरी की बात माने। वे सब खूब रोये और सबसे ज़्यादा तो औलिव ही रोयी क्योंकि अपने असली पिता को तो वह जानती तक नहीं थी।

रोते रोते वह उन अच्छे लोगों को छोड़ कर जिन्होंने उसको इतने प्यार से पाला अपने असली पिता के पास चली गयी।

उसको विदा करते समय उसकी मॉ ने "औफिस औफ द ब्लैस्ड वरजिन"[54] की एक किताब उसको दी और कहा कि वह यह कभी न भूले कि वह एक ईसाई है। और इसके बाद वह लड़की चली गयी।

जब वे घर पहुॅचे तो उस ज्यू ने औलिव से पहली बात यह कही — "हम लोग ज्यू हैं और तुम भी। तुम अब वैसा ही करोगी जैसा हम करते हैं। अगर मैंने तुमको कभी भी वह किताब पढ़ते हुए देख लिया जो तुमको उस औरत ने दी है तो बस भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।

पहली बार तो मैं उसको आग में फेंक दूॅगा और तुम्हारी पिटाई करूॅगा। और अगर दूसरी बार मैंने तुमको उसको पढ़ते देख लिया तो तुम्हारे हाथ काट डालूॅगा और तुमको घर से बाहर निकाल दूॅगा। इसलिये ख्याल रखना कि तुम क्या कर रही हो क्योंकि जो मैंने तुमसे कहा है मैं वही करूॅगा इसमें कोई शक नहीं है।"

जब औलिव को इस तरह की धमकी मिली तो वह बेचारी क्या करती। वह बाहर से यही दिखाती रही कि वह ज्यू थी। पर अन्दर अपने कमरा को ताला लगा कर वह "औफिस और लिटैनीज़ औफ ब्लैस्ड वरजिन" पढ़ती।

[54] A copy of the "Office of Blessed Virgin" – a special type of religious book in Christians

उस समय उसकी वफादार नौकरानी पहरा देती रहती कि कहीं ऐसा न हो कि उसका पिता उसको वह सब पढ़ते देख ले।

पर उसकी सारी सावधानी बेकार गयी क्योंकि एक दिन उस ज्यू ने उसको अनजाने में पकड़ लिया जब कि वह घुटनों के बल झुक रही थी और वह किताब पढ़ रही थी। बस उसने गुस्से में आ कर उससे वह किताब छीन ली और उसको आग में फेंक दिया और फिर उसको बहुत बेरहमी से मारा भी।

पर इससे औलिव ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी नौकरानी को बाजार भेज कर वैसी ही एक और किताब मॅगवा ली और उसको पढ़ना शुरू कर दिया।

पर इस घटना के बाद से ज्यू को शक हो गया था तो वह भी उसके ऊपर बराबर नजर रखे हुए था। आखिर उसने उसको फिर से पकड़ लिया।

इस बार बिना कुछ बोले वह उसको एक बढ़ई के काम करने वाले की जगह ले गया और वहॉ उससे उसकी मेज पर हाथ फैलाने के लिये कहा।

फिर उसने एक तेज़ चाकू लिया और उससे उसके दोनों हाथ काट डाले और उसको एक जंगल में ले जा कर छोड़ आने के लिये कहा।

वहॉ वह लड़की बेचारी मरे हुए से भी ज़्यादा बुरी हालत में पड़ी रही। और अब जब उसके हाथ ही नहीं थे तो वह कर भी क्या सकती थी।

वह वहॉ से उठी और उठ कर चल दी। चलते चलते वह एक बहुत बड़े महल के पास आ निकली। पहले तो उसने सोचा कि वह उस महल के अन्दर जाये और कुछ भीख मॉगे पर उसने देखा कि उस महल के चारों तरफ तो एक चहारदीवारी खिंची हुई है और उसमें कोई दरवाजा नहीं है।

पर उस चहारदीवारी के अन्दर एक बहुत सुन्दर बागीचा था। उस चहारदीवारी के ऊपर से झॉकता हुआ उसको एक नाशपाती का पेड़ दिखायी दे गया जिस पर पकी हुई पीली नाशपाती लदी हुईं थीं।

उसके मुॅह से निकला "काश मुझे उनमें से एक नाशपाती मिल जाती। क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे उन तक पहुॅचा जा सके?"

उसके मुॅह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि वह दीवार फट गयी और उस नाशपाती के पेड़ की शाखें नीचे झुक गयीं।

वह शाखों इतनी नीचे झुक गयीं कि औलिव जिसके हाथ ही नहीं थे उन शाखों पर लगी नाशपातियों को अपने मुॅह में पकड़ कर खा सकती थी। जब उन नाशपातियों को खा कर उसका पेट भर

गया तो वह पेड़ फिर से ऊँचा हो गया और दीवार भी बन्द हो गयी।

औलिव फिर से जंगल में चली गयी। अब उसको नाशपातियों का भेद पता चल गया था। सो अब वह रोज ग्यारह बजे उस नाशपाती के पेड़ के पास आती और खूब फल खाती और रात बिताने के लिये जंगल वापस लौट जाती।

ये नाशपातियॉ बहुत बढ़िया थीं। एक सुबह उस राजा ने जो उस महल में रहता था नाशपाती खाने की सोची तो उसने अपने नौकर को कुछ नाशपातियॉ लाने के लिये बागीचे में भेजा।

नौकर कुछ दुखी सा लौट कर आया और उसने आ कर राजा को बताया — "मैजेस्टी, ऐसा लगता है कि कोई जानवर इन नाशपातियों को उनके बीज की जगह तक खा रहा है।"

"हम उसको पकड़ने की कोशिश करेंगे।"

राजा ने पेड़ की डंडियों से एक झोंपड़ी बनवायी और रोज रात को वह उसमें लेट कर नाशपाती के चोर को पकड़ने के लिये पहरा देता रहा। पर इस तरह से तो उसकी नींद भी खराब होती रही और चोर भी नहीं पकड़ा गया और नाशपातियॉ भी कोई कुतरता ही रहा। क्योंकि वह चोर रात में तो आता नहीं था।

तो उसने दिन में पहरा देने का विचार किया। ग्यारह बजे उसने दीवार खुलती देखी। नाशपाती का पेड़ झुकते देखा। औलिव ने पहले एक नाशपाती खायी, फिर दूसरी, फिर तीसरी... ।

राजा ने जो गोली चलाने को तैयार था यह सब देख कर आश्चर्य में अपनी बन्दूक नीचे रख दी। वह तो बस नाशपाती खाती हुई उस लड़की को ही देखता रह गया।

नाशपाती खा कर वह दीवार के बाहर गायब हो गयी थी। उसके जाते ही दीवार भी बन्द हो गयी थी।

उसने अपने नौकरों को तुरन्त ही बुलाया और उनको उस लड़की के पीछे भागने के लिये कहा। भागते भागते वे जंगल में पहुँच गये और वहाँ वह लड़की उनको एक पेड़ के नीचे सोती मिल गयी। वे उसको पकड़ कर राजा के पास ले आये।

राजा ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो? और मेरी नाशपाती चुराने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

जवाब में लड़की ने अपने दोनों हाथ आगे कर दिये।

उन हाथों को देख कर राजा के मुँह से निकला — "उफ बेचारी। ऐसा कौन बेरहम आदमी है जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया?"

इस पर उस लड़की ने उसको अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजा बोला — "मुझे अब नाशपाती की चिन्ता नहीं है पर मुझे अब तुम्हारी चिन्ता है। चलो तुम मेरे साथ चल कर रहो। मेरी रानी माँ तुमको जरूर ही रख लेंगी और तुम्हारी ठीक से देख भाल भी करेंगी।"

सो औलिव राजा के साथ चली गयी और राजा ने उसको अपनी मॉ से मिलवाया। पर राजा ने मॉ से न तो नाशपाती का जिक्र किया और न ही पेड़ के झुकने का और न ही दीवार के अपने आप खुलने बन्द होने का ही कोई जिक्र किया।

उसको लगा कि उसकी मॉ कहीं उस लड़की को जादूगरनी[55] न समझ ले और उसे बाहर न निकाल दे या उससे कहीं नफरत न करने लगे।

रानी ने औलिव को अपने घर में रखने से इनकार तो नहीं किया पर उसको रखने में कोई रुचि भी नहीं जतायी। वह उसको बहुत थोड़ा सा खाना देती थी। वह भी इसलिये कि राजा उस बेहाथ वाली लड़की की सुन्दरता की वजह से उसकी तरफ बहुत आकर्षित था।

उस लड़की के बारे में वह राजा क्या सोचता था उन सब विचारों को उसके दिमाग से निकालने के लिये एक दिन मॉ ने अपने बेटे से कहा — "तुम अगर चाहो तो तुमको और कितनी भी सुन्दर सुन्दर राजकुमारियॉ मिल जायेंगीं।

तुम नौकर, घोड़े और पैसा लो और चारों तरफ घूम कर आओ तुमको जरूर ही अपनी पसन्द की कोई न कोई राजकुमारी मिल जायेगी।"

[55] Translated for the word "Witch"

मॉ की बात मान कर राजा ने नौकर घोड़े और पैसे लिये और चल दिया राजकुमारी को ढूँढने। वह कई देशों में घूमा।

छह महीने बाद जब वह घर लौट कर आया तो मॉ से बोला — "तुम ठीक कहती थी मॉ। दुनियॉ में राजकुमारियॉ तो बहुत हैं पर तुम मुझसे नाराज न होना मॉ, लेकिन औलिव जैसी दयालु और सुन्दर राजकुमारी और कोई नहीं है। इसलिये मैने निश्चय किया है कि मै शादी करूँगा तो औलिव से ही करूँगा।"

मॉ चिल्लायी — "क्या? जंगल से लायी गयी एक बिना हाथ वाली लड़की से तुम शादी करोगे? तुम उसके बारे में कुछ जानते भी तो नहीं। क्या तुम अपने आपको इस तरह से बदनाम करोगे?"

पर उसने मॉ की बात बिल्कुल नहीं सुनी और उससे तुरन्त ही शादी कर ली। रानी मॉ के लिये एक बिना जान पहचान की लड़की को अपनी बहू बना कर घर ले आना बहुत बड़ी बात थी जिसे वह सहन न कर सकी।

वह औलिव के साथ हमेशा ही बहुत बुरा बर्ताव करती थी पर यह भी ध्यान रखती कि वह राजा के सामने उसके साथ वैसा बर्ताव न करे ताकि कहीं ऐसा न हो कि राजा नाखुश हो जाये। पर औलिव ने राजा की मॉ के खिलाफ राजा से कभी कुछ नहीं कहा।

इसी बीच औलिव को बच्चे की आशा हो आयी। यह जान कर राजा को बड़ी खुशी हुई। पर इत्तफाक से उसी समय उसके एक

पड़ोसी देश के राजा ने उसके राज्य के ऊपर हमला कर दिया तो उसको अपने देश की रक्षा के लिये उससे लड़ने जाना पड़ा।

जाने से पहले वह औलिव को अपनी माँ को सौंपना चाहता था पर रानी माँ ने कहा — "मैं यह जिम्मेदारी नहीं ले सकती क्योंकि मैं तो खुद ही यह महल छोड़ कर कौनवैन्ट[56] जा रही हूँ।"

इसलिये औलिव को उस महल में अकेले ही रहना पड़ा। सो राजा ने उससे उसको रोज एक चिट्ठी लिखने के लिये कहा।

और इस तरह राजा लड़ाई पर चला गया, रानी माँ कौनवैन्ट चली गयी और औलिव नौकरों के साथ अकेली महल में रह गयी। रोज एक आदमी औलिव की चिट्ठी ले कर महल से राजा के पास जाता था। इस बीच औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया।

उसी समय रानी माँ की एक बूढ़ी चाची रानी माँ को महल की खबर देने के लिये कौनवैन्ट गयी। यह जान कर कि औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया है रानी माँ कौनवैन्ट छोड़ कर महल वापस लौट आयी। उसका कहना था कि वह अपनी बहू की सहायता करने महल वापस आ रही थी।

उसने चौकीदारों को बुलाया और जबरदस्ती औलिव को बिस्तर से उठाया, उसके दोनों हाथों में एक एक बच्चा दिया और उन चौकीदारों से कहा कि वे उसको जंगल में वहीं छोड़ आयें जहाँ राजा ने उसको पाया था।

[56] Convent – the building or buildings occupied by such a society; a monastery or nunnery.

उसने चौकीदारों से कहा — "इसको भूखा मरने के लिये वहीं छोड़ देना। अगर तुम लोग मेरा हुक्म नहीं मानोगे और इस बारे में एक शब्द भी किसी और से कुछ भी कहोगे तो तुम्हारे सिर काट दिये जायेंगे।"

उसके बाद उसने राजा को लिख दिया कि उसकी पत्नी बच्चों को जन्म देते समय मर गयी और साथ में बच्चे भी मर गये।

राजा उसके झूठ पर विश्वास कर ले इसके लिये उसने तीन मोम के पुतले बनवाये और बड़ी शान से शाही चैपल[57] में उनका अन्तिम संस्कार किया और उनको दफ़न कर दिया।

इस रस्म के लिये उसने काले कपड़े भी पहने और बहुत रोयी भी। उधर राजा भी न तो अपनी लड़ाई से इस बदकिस्मत घटना के लिये घर ही आ सका और न ही वह इस सब में अपनी मॉ का कोई झूठ देख सका।

अब हम औलिव के पास चलते हैं। वह बेचारी बिना हाथ की अपने दोनों बच्चों को लिये बीच जंगल में भूखी प्यासी पड़ी थी।

वह किसी तरह से अपने दोनों बच्चों को लिये हुए एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ एक पानी का तालाब था और वहॉ एक बुढ़िया कपड़े धो रही थी।

[57] Royal Chapel – a private or subordinate place of prayer or worship; oratory.

औलिव बोली — "मॉ जी, मेहरबानी कर के अपने एक पानी से भरे कपड़े को मेरे मुँह में निचोड़ दीजिये। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

उस बुढ़िया ने जवाब दिया — "नहीं मैं तुमको पानी नहीं पिलाऊँगी। तुम खुद अपना सिर इस तालाब में झुकाओ और अपने आप पानी पियो।"

"पर क्या आप देख नहीं रहीं कि मेरे हाथ नहीं हैं और मुझे अपने बच्चों को भी अपनी बॉहों में पकड़ना है?"

"कोई बात नहीं। कोशिश तो करो।"

सो औलिव घुटनों के बल झुकी पर जैसे ही वह पानी पीने के लिये तालाब के ऊपर झुकी उसकी दोनों बॉहों से एक के बाद एक उसके दोनों बच्चे फिसल गये और पानी में गायब हो गये।

"ओह मेरे बच्चे, ओह मेरे बच्चे। मेरी सहायता करो मेरे बच्चे डूब रहे हैं।" पर वह बुढ़िया तो हिल कर भी नहीं दी।

वह बोली — "तुम डरो नहीं, वे डूबेंगे नहीं, तुम उनको निकाल कर देखो।"

"पर यह मैं कैसे करूँ मेरे तो हाथ ही नहीं हैं।"

"अपनी बॉहों को तुम पानी में डालो तो।"

औलिव ने अपनी बिना हाथ की बॉहें पानी में डालीं तो उसको लगा कि उसकी बॉहें तो बढ़ रहीं हैं और उसके हाथ फिर से आ

गये हैं। अपने उन हाथों से उसने अपने बच्चे पकड़ लिये और उनको सुरक्षित पानी से बाहर निकाल लिया।

वह बुढ़िया बोली — "अब तुम अपने रास्ते जा सकती हो। अब तुम्हारे पास अपना काम करने के लिये हाथों की कोई कमी नहीं है। बाई।" इससे पहले कि औलिव उसको धन्यवाद देती वह बुढ़िया तो वहॉ से गायब हो चुकी थी।

शरण की खोज में जंगल में घूमती हुई औलिव अब एक नये घर में आ गयी थी। उस घर का दरवाजा खुला पड़ा था सो वह शरण मॉगने के लिये उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर जा कर उसने देखा कि घर तो खाली पड़ा था। वहॉ कोई नहीं था और एक चूल्हे के ऊपर एक बर्तन में दलिया उबल रहा था। वहीं पास में कुछ और खाने का सामान भी रखा हुआ था।

सो औलिव ने पहले अपने बच्चों को खाना खिलाया फिर खुद खाया। फिर वह एक कमरे में गयी जहॉ एक बिस्तर लगा हुआ था और दो पालने रखे थे। उसने अपने बच्चों को पालने में सुलाया और वह खुद उस बिस्तर पर लेट गयी और सो गयी।

वह उस मकान में बिना किसी को देखे और बिना किसी चीज़ की जरूरत महसूस करते हुए रहती रही। उसको वहॉ सब कुछ अपने आप ही मिल रहा था।

अब हम राजा के पास चलते हैं। राजा की लड़ाई खत्म हो गयी थी। वह घर लौटा तो उसने देखा कि सारा शहर तो दुख मना रहा है। उसकी मॉ ने उसकी पत्नी और उसके दो बच्चों की मौत पर उसको तसल्ली देने की बहुत कोशिश की पर जैसे जैसे समय बीतता गया वह उसकी कमी से और ज़्यादा दुखी होता गया।

एक दिन अपना दिल बहलाने के लिये उसने शिकार पर जाने का इरादा किया। वह शिकार के लिये जंगल पहुॅचा ही था कि कुछ देर बाद तूफान आ गया और वह तूफान से बचने के लिये कोई जगह ढूॅढने लगा।

तूफान बहुत तेज़ था। राजा ने सोचा — "इस तूफान में तो मैं मर ही जाऊॅगा और फिर बिना औलिव के मैं जी कर करूॅगा भी क्या सो अगर में मर भी जाऊॅ तो क्या है।"

वह यह सब कह ही रहा था कि उसको दूर कहीं बड़ी धुॅधली सी रोशनी चमकती दिखायी पड़ी सो वह शरण पाने की उम्मीद में उधर ही चल पड़ा। चलते चलते वह एक घर के सामने आ गया। वहॉ आ कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो औलिव ने दरवाजा खोला।

राजा ने औलिव को पहचाना नहीं और औलिव भी कुछ बोली नहीं। वह राजा को अन्दर ले गयी और आग के पास बिठाया। फिर औलिव और बच्चे उसका दिल बहलाने के लिये उसके साथ खेलते रहे।

राज औलिव को देखता रहा कि उस लड़की की शक्ल औलिव से कितनी मिलती जुलती थी पर यह देख कर कि इसके हाथ तो बिल्कुल सामान्य थे उसने अपना सिर ना में हिलाया कि नहीं यह औलिव नहीं हो सकती।

बच्चे उसके चारों तरफ खेल कूद रहे थे। उनकी तरफ प्यार से देखते हुए वह बोला — "अगर आज मेरे बच्चे ज़िन्दा होते तो वे भी ऐसे ही होते पर वे तो अब मर चुके हैं। उनकी मॉ भी मर गयी है और मैं यहॉ अकेला बैठा हूॅ।"

इस बीच औलिव मेहमान का बिस्तर लगाने के लिये चली गयी। उसने वहीं से बच्चों को बुलाया और उनसे फुसफुसा कर बोली — "जब हम फिर से दूसरे कमरे में वापस जायें तो तुम मुझसे कहानी सुनाने के लिये कहना।

मैं तुमको मना करूॅ या तुमको धमकी दूॅ तभी भी तुम कहानी सुनाने की जिद करते रहना। ठीक?"

"ठीक है मॉ हम ऐसा ही करेंगे।"

जब वे सब फिर आग के पास आगये तो बच्चे बोले — "मॉ कोई कहानी सुनाओ न।"

"तुम क्या सोचते हो यह कोई समय है कहानी सुनाने का? अब बहुत देर हो रही है और देखो यह हमारे मेहमान भी थके हुए हैं इन को भी तो सोना है। चलो तुम भी सो जाओ।"

"नहीं मॉ कहानी सुनाओ न।"

"अगर तुम चुप नहीं रहोगे तो मैं तुम्हारी पिटाई करूँगी।"

राजा बोला — "बच्चे हैं बेचारे। तुम इतने छोटे बच्चों की पिटाई कैसे कर सकती हो? इनको कहानी सुना दो न। इनको खुश रखा करो। मुझे भी अभी नींद नहीं आ रही है और फिर मैं भी तुम्हारी कहानी सुन लूँगा।"

यह सुन कर औलिव बैठ गयी और उसने कहानी सुनानी शुरू की। धीरे धीरे राजा उस कहानी को गम्भीर हो कर सुनने लगा और जैसे जैसे वह कहानी आगे बढ़ती जाती थी वह उसको सुनने के लिये और ज़्यादा उत्सुक होता जाता था और कहता जाता था "फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ।"

क्योंकि यही कहानी तो उसकी पत्नी की भी थी पर उसकी इतनी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह इतनी बड़ी उम्मीदों के पुल बाँध सकता कि वह उससे यह कह सकता कि तुम ही तो मेरी औलिव हो। क्योंकि उसकी कहानी का वह हिस्सा तो अभी तक आया ही नहीं था जिसमें उसके हाथ ठीक हो जाते हैं।

अन्त में वह रो पड़ा और उससे पूछा — "पर उसके हाथों का क्या हुआ जिन्हें काट डाला गया था?

तब औलिव ने उसको उस बुढ़िया धोबिन वाली घटना बतायी। सुनते ही राजा खुशी से चिल्लाया — "सो वह तुम ही हो?" कह कर उसने औलिव को गले लगा लिया। बरसों के बिछड़े मिल गये।

पर इस खुशी के तुरन्त बाद ही राजा चिन्ता में पड़ गया और बोला — "मुझे तुरन्त ही महल लौट कर अपनी माँ को उसके किये की वह सजा देनी चाहिये जो उनको मिलनी चाहिये।"

औलिव बोली — "नहीं नहीं ऐसा नहीं करो। अगर तुम मुझसे सचमुच प्यार करते हो तो तुम मुझसे वायदा करो कि तुम माँ पर बिल्कुल भी हाथ नहीं उठाओगे। अभी जो कुछ उन्होंने किया है वह इस पर अपने आप ही अफसोस करेंगी।

वह सोच रही होंगी कि वह राज्य की भलाई के लिये नाटक कर रही हैं। उनकी ज़िन्दगी बख्श दो। उनके उन सब कामों के लिये उनको माफ कर दो जो उन्होंने मेरे साथ किये। जब मैंने उनको माफ कर दिया तो तुम भी उनको माफ कर दो।"

सो राजा महल लौट गया और वहाँ जा कर उसने अपनी माँ को कुछ नहीं बताया। माँ बोली — "मैं तुम्हारे बारे में परेशान थी। इस तूफान में जंगल में तुम्हारी रात कैसी बीती?"

"माँ मेरी रात तो बहुत अच्छी बीती।"

माँ को कुछ शक हुआ तो आश्चर्य से बोली — "क्या?"

"हाँ माँ। वहाँ मुझे रात को एक घर मिल गया था। वहाँ बड़े दयालु लोग थे जिन्होंने मुझे आराम से रखा। औलिव की मौत के बाद यह पहला मौका था कि मैं इतना खुश था। पर एक बात बताओ माँ, क्या औलिव सचमुच में मर गयी?"

"इस बात के कहने का क्या मतलब है तुम्हारा? सारा शहर उसके दफन पर मौजूद था।"

"मॉ मैं भी उसको एक बार अपनी ऑखों से देखना चाहूँगा और उसकी कब्र पर एक बार फूल चढ़ाना चाहूँगा।"

यह सुन कर रानी को गुस्सा आ गया और वह गुस्से से बोली — "पर यह शक क्यों? क्या एक बेटे का अपनी मॉ की तरफ यही फर्ज बनता है कि वह उसकी बात पर शक करे?"

"छोड़ो भी मॉ, अब बहुत झूठ हो गया। औलिव आओ अन्दर आ जाओ।"

उसने औलिव को अन्दर बुला लिया तो वह अपने बच्चों को साथ ले कर अन्दर आ गयी। रानी जो अब तक गुस्से से लाल पीली हो रही थी डर से सफेद पड़ गयी।

पर औलिव बोली — "नहीं मॉ जी आप डरिये नहीं, हम आपको दुखी करने नहीं आये हैं। हमारे लिये एक दूसरे को पाने की खुशी किसी भी चीज़ से ज्यादा बड़ी है।"

इसके बाद रानी मॉ कौनवैन्ट चली गयी और राजा और औलिव ने अपनी बाकी की जिन्दगी खुशी आराम और शान्ति से गुजारी।

13 जियोवानूज़ा लोमड़ी[58]

नाशपाती की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश से ली है।

एक बार एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसके एक ही बेटा था। उसका यह बेटा बहुत सीधा और दुनियॉ की बहुत सारी बातों से अनजान था। उसके इस बेटे का नाम जोसेफ[59] था।

जब उसका पिता मरने लगा तो उसने अपने बेटे जोसेफ से कहा — "बेटा, अब मैं मर रहा हूॅ पर मेरे पास तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है। बस यह मकान है और यह नाशपाती का पेड़ है जो इस मकान के पास लगा है।" और यह कह कर वह मर गया।

अब जोसेफ उस मकान में अकेला रहता था और अपने घर के नाशपाती के पेड़ की नाशपातियॉ तोड़ कर बेचा करता था। उसी से उसकी रोजी रोटी चलती थी।

जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता तो ऐसा लगता था कि जैसे अब वह भूखा मर जायेगा क्योंकि उसको रोटी कमाने का और कोई तरीका आता नहीं था।

---

[58] Giovannuza Fox – a folktale from Italy from its Catania area.
Adapted from the book : "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". Translated by George Martin.

[59] Joseph

पर आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता था तभी भी उस पेड़ की नाशपाती खत्म नहीं होती थीं। जब वे सारी नाशपाती तोड़ ली जाती थीं तो उनकी जगह दूसरी नाशपातियॉ आ जाती थीं।

इस तरह जाड़े के मौसम में भी वह एक सुन्दर रसीली नाशपाती का पेड़ बना रहता था और सारे साल नाशपातियों से लदा रहता था।

एक सुबह जब जोसेफ रोज की तरह उस पेड़ से नाशपाती तोड़ने गया तो उसने देखा कि उनको उससे पहले उसकी नाशपातियॉ कोई और ही तोड़ कर ले गया है।

उसने सोचा अब मैं क्या करूॅ। अगर लोग मेरी नाशपाती इस तरह चुरा कर ले जाते रहेंगे तो मेरा क्या होगा। मैं आज सारी रात जागता हूॅ और देखता हूॅ कि यह काम किसने किया।

शाम को जब अॅधेरा हुआ तो वह नाशपाती के पेड़ के नीचे अपनी बन्दूक ले कर बैठ गया। पर बहुत जल्दी ही उसको नींद आ गयी और वह सो गया। जब वह जागा तो किसी ने उसकी सारी पकी नाशपातियॉ तोड़ ली थीं।

वह अगले दिन फिर पहरे पर बैठा पर बीच में ही फिर सो गया और उसकी नाशपातियॉ फिर से चोरी हो गयीं। तीसरी रात अपनी बन्दूक के साथ साथ वह चरवाहे वाला बाजा भी अपने साथ ले गया।

जब वह नाशपाती के पेड़ के नीचे बैठा तो जागते रहने के लिये वह बाजा बजाने लगा। कुछ देर तक तो उसने अपना वह बाजा बजाया पर बाद में वह उसे बजाते बजाते थक गया सो उसने उसे बजाना बन्द कर दिया।

जब जोसेफ के बाजे की आवाज आनी बन्द हो गयी तो जियोवानूज़ा लोमड़ी ने जो अब तक जोसेफ की नाशपातियॉ चुरा रही थी सोचा कि जोसेफ शायद सो गया है। वह दौड़ी दौड़ी आयी और नाशपाती तोड़ने के लिये नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गयी।

जोसेफ ने तुरन्त अपनी बन्दूक उठायी और उसको मारने के लिये उसकी तरफ निशाना साधा कि वह लोमड़ी बोली — "मुझे मत मारो जोसेफ। अगर तुम मुझे एक टोकरी नाशपाती दे दोगे तो मैं तुमको बहुत अमीर बना दूँगी।"

"पर जियोवानूज़ा, अगर मैं तुमको एक टोकरी नाशपाती दे दूँगा तो फिर मैं क्या खाऊँगा?"

"उसकी तुम चिन्ता न करो। अगर जैसा मैं कहती हूँ वैसा तुम करोगे तो तुम यकीनन अमीर बन जाओगे।"

सो जोसेफ ने उसको एक टोकरी अपनी सबसे अच्छी नाशपातियॉ दे दीं। वह उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी। वहॉ जा कर वह उनसे बोली — "मैजेस्टी, मेरे मालिक ने आपके

लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और आपसे यह प्रार्थना की है कि आप इनको स्वीकार करें।"

राजा आश्चर्य से बोला — "नाशपाती? और साल के इस मौसम में? यह तो पहली बार है कि इतनी सुन्दर नाशपाती मैं साल के इस समय में देख रहा हूँ। तुम्हारा मालिक कौन है?"

जियोवानूज़ा ने जवाब दिया — "काउन्ट पीयर ट्री[60]।"

राजा ने पूछा — "पर साल के इस समय में उसको नाशपाती मिलती कहाँ से हैं?"

लोमड़ी बोली — "उनके पास ऐसी बहुत सारी आश्चर्यजनक चीज़ें हैं। वह तो दुनियाँ के सबसे अमीर आदमी हैं।"

राजा ने उत्सुकता से पूछा — "क्या मुझसे भी ज़्यादा?"

"जी मैजेस्टी, आपसे भी ज़्यादा।"

राजा बहुत ही न्यायपूर्ण था सो उसने लोमड़े से पूछा — "तो मैं इसके बदले में उनको क्या दूँ?"

लोमड़ी बोली — "उसकी आप चिन्ता न करें। उनके देने के लिये तो आप सोचें भी नहीं। वह तो खुद ही बहुत अमीर हैं। आप जो भेंट भी उनको देंगे वह उनको बहुत छोटी ही लगेगी।"

राजा कुछ हिचकते हुए बोला — "तो काउन्ट पीयर ट्री को इन नाशपातियों के लिये मेरी तरफ से बहुत बहुत धन्यवाद देना।"

---

[60] Count Pear Tree – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

जियोवानूज़ा वहॉ से वापस लौट आयी और जोसेफ के पास आयी। जोसेफ ने जब उसको देखा तो उससे कहा — "तुम तो कह रही थीं कि तुम मुझे अमीर बना दोगी पर तुम तो उन नाशपातियों के बदले में कुछ लायी ही नहीं।"

लोमड़ी बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। मैं फिर कहती हूॅ कि तुम बहुत अमीर हो जाओगे।"

अगले दिन वह फिर एक नाशपाती की टोकरी ले कर राजा के पास गयी और बोली — "मैजेस्टी, क्योंकि आपने पहली नाशपाती की टोकरी स्वीकार कर ली थी इसलिये मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये यह दूसरी नाशपाती की टोकरी भेजी है।"

राजा बोला — "अरे मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि ये नाशपातियॉ इस मौसम में आ रही हैं और ये तो लगता है कि जैसे अभी अभी तोड़ी गयी हैं।"

लोमड़ी बोली — "यह तो कुछ भी नहीं है। मेरे मालिक के लिये नाशपाती की कोई खास कीमत नहीं है क्योंकि उनके पास तो और भी बहुत ज़्यादा कीमती चीज़ें हैं।"

राजा कुछ हिचकिचाते हुए बोला — "पर मैं उनके इन अहसानों का बदला कैसे चुकाऊॅगा जो उनकी हैसियत के मुताबिक हो?"

लोमड़ी बोली — "यह कोई मुश्किल काम नहीं है। आपकी बेटी शादी के लायक है। आप उसकी शादी मेरे मालिक से कर दीजिये।"

राजा की ऑखें तो आश्चर्य से फैल गयीं। वह बोला — "यह तो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी क्योंकि वह तो मुझसे भी ज़्यादा अमीर हैं। क्या वह मेरी बेटी को स्वीकार करेंगे?"

लोमड़ी बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। और जब यह बात मेरे मालिक को बुरी नहीं लग रही तो फिर यह बात आपको तो बुरी लगनी ही नहीं चाहिये। काउन्ट पीयर ट्री को तो बस आपकी बेटी चाहिये।

उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दहेज बड़ा है या छोटा। क्योंकि आप कितना भी बड़ा दहेज देंगे वह उनको अपनी बड़ी दौलत के सामने छोटा ही लगेगा। बस उनको तो आपकी बेटी चाहिये।"

राजा बोला — "बहुत अच्छे। तो तुम उनको बोलना कि वह यहॉ आये और हमारे साथ खाना खायें।"

सो जियोवानूज़ा लोमड़ी वापस जोसेफ के पास गयी और बोली — "मैंने राजा से कहा है कि तुम काउन्ट पीयर ट्री हो और तुम उसकी बेटी से शादी करना चाहते हो।"

जोसेफ बोला — "बहिन, यह तुमने क्या किया? अब जब राजा मुझको देखेगा तो वह तो मेरा सिर ही काट देगा।"

लोमड़ी बोली — "यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। तुम इसकी बिल्कुल चिन्ता मत करो। वह ऐसा कुछ नहीं करेगा।"

यह कह कर वह एक दर्जी के पास गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री को सबसे बढ़िया पोशाक चाहिये तो तुम्हारे पास जो भी सबसे बढ़िया पोशाक हो वह मुझे दे दो। मैं तुम्हें उसकी कीमत बाद में दे दूँगी।" दर्जी ने लोमड़ी को एक काउन्ट के पहनने लायक कपड़े दे दिये।

उसके बाद वह लोमड़ी एक घोड़ा बेचने वाले के पास गयी और उससे बोली — "क्या तुम मुझे मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री के लिये एक सबसे बढ़िया घोड़ा दोगे? हमको कीमत से कोई मतलब नहीं है। हम उसकी कीमत तुमको कल दे देंगे।" उसने लोमड़ी को एक सबसे अच्छा घोड़ा दे दिया।

इस तरह से वह लोमड़ी जोसेफ के लिये एक बहुत बढ़िया सूट और एक बहुत बढ़िया घोड़ा ले कर जोसेफ के घर पहुँची और वह अगले दिन उस सूट को पहन कर और उस घोड़े पर सवार हो कर राजा के यहाँ चल दिया। लोमड़ी उसके आगे आगे थी।

जोसेफ पीछे से चिल्लाया — "जियोवानुज़ा, अगर राजा मुझसे कुछ बात करेगा तो मैं क्या जवाब दूँगा। मुझे तो किसी बड़े आदमी से एक शब्द बोलने में भी बहुत डर लगता है।"

लोमड़ी बोली — "तुमको बोलने की जरूरत ही नहीं है। तुम बस मुझको बोलने देना। तुमको तो बस इतना कहना है "गुड डे" और "मैजेस्टी"। बाकी मैं सँभाल लूँगी।"

वे राजा के महल आ पहुँचे थे सो राजा काउन्ट पीयर ट्री को अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया। उसने काउन्ट को बड़ी इज़्ज़त के साथ नमस्ते की। तो जोसेफ भी थोड़ा झुक कर बोला — "मैजेस्टी"।

राजा उसको खाने की मेज पर ले गया। वहाँ उसकी सुन्दर बेटी पहले से ही बैठी हुई थी। जोसेफ ने उससे कहा — "गुड डे।"

वे सब वहीं बैठ गये और उन्होंने आपस में बातें करनी शुरू कर दीं। पर काउन्ट पीयर ट्री जब बिल्कुल नहीं बोला तो राजा लोमड़ी के कान में फुसफुसाया — "बहिन जियोवानूज़ा? क्या तुम्हारे मालिक की जीभ बिल्ली ले गयी है?"

जियोवानूज़ा बोली — "मैजेस्टी आपको तो मालूम है जब किसी के पास बहुत सारी जमीन और दौलत होती है तो वह उसके बारे में ही सोचता रहता है।" सो उस मुलाकात में राजा ने काउन्ट से बात न करने की बहुत ही ज़्यादा सावधानी बरती।

अगली सुबह जियोवानूज़ा ने जोसेफ से कहा — "मुझे एक टोकरी नाशपाती और दो ताकि मैं उसे राजा को दे सकूँ।"

जोसेफ बोला — "जैसा तुम चाहो बहिन। पर अगर अब मैं अमीर न हुआ तो मेरी गरीबी शुरू हो जायेगी।"

जियोवानूज़ा बोली — "तुम अपने दिमाग को शान्त रखो। मैं तुमको विश्वास दिलाती हूँ कि तुम जल्दी ही एक अमीर आदमी बनोगे।"

सो जोसेफ ने एक टोकरी नाशपाती तोड़ी और जियोवानूज़ा को दे दी। जियोवानूज़ा उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और अपनी प्रार्थना का जवाब माँगा है।"

राजा बोला — "काउन्ट से कहना कि यह शादी तभी हो जायेगी जब वह चाहेंगे।" यह सुन कर जियोवानूज़ा तो बहुत खुश हो गयी और तुरन्त ही उछलती कूदती जोसेफ के पास लौट आयी। उसने वापस आ कर जोसेफ को यह खुशखबरी सुनायी।

जोसेफ कुछ परेशान हो कर बोला — "पर बहिन जियोवानूज़ा, मैं अपनी पत्नी को कहाँ ले जाऊँगा? इस छोटे से घर में मैं उसको कैसे ला सकता हूँ?"

जियोवानूज़ा बोली — "वह सब भी तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम उसको सोचो भी नहीं। क्या मैंने अब तक तुम्हारे लिये कुछ नहीं किया? सो जैसे अब तक किया वैसे ही मैं आगे भी करूँगी।"

जोसेफ की शादी राजा की बेटी से बड़ी धूमधाम से हो गयी और इस तरह काउन्ट पीयर ट्री ने राजा की बेटी को अपनी पत्नी बना लिया।

कुछ दिन बाद जियोवानूज़ा ने राजा को बताया कि मेरे मालिक अब अपनी पत्नी को अपने महल ले जाना चाहते हैं। राजा बोला — "ठीक है। मैं भी उनके साथ जाना चाहूँगा ताकि मैं भी देख सकूँ कि काउन्ट पीयर ट्री के पास क्या क्या है।"

सब लोग घोड़े पर चढ़े। राजा के साथ कई नाइट्स[61] भी थे। वे सब मैदानों की तरफ चले तो जियोवानूज़ा बोली — "मैं पहले वहाँ पहुँचती हूँ और आप सब लोगों के वहाँ पहुँचने की तैयारी करती हूँ।"

जैसे ही वह आगे दौड़ कर गयी तो उसको हजारों भेड़ें मिलीं। उसने उनके चरवाहों से पूछा — "ये किसकी भेड़ें हैं?"

"पापा ओगरे[62] की।"

लोमड़ी बोली — "ज़रा धीरे बोलो। तुम लोग उस कारवाँ को आते देख रहे हो न? वह राजा है जिसने पापा ओगरे से लड़ाई की घोषणा कर रखी है सो जब वह राजा यहाँ आये और तुमसे यह पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो

[61] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.
[62] Translated for the word "Ogre"

अगर तुमने उनको यह कहा कि ये भेड़ें पापा ओगरे की हैं तो राजा के नाइट्स तुमको मार देंगे।"

"तो फिर हम क्या कहें?"

"पता नहीं। पर कह कर देखना कि ये सब भेड़ें काउन्ट पीयर ट्री की हैं।"

जब राजा वहॉ तक आ गया तो इतनी सारी भेड़ें देख कर उसने उनके चरवाहों से पूछा — "ये इतनी सारी भेड़ें किसकी हैं?"

सब चरवाहे चिल्लाये — "काउन्ट पीयर ट्री की।"

राजा खुशी से चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान। जिस आदमी के पास इतनी सारी भेड़ें हैं यह आदमी तो वाकई बहुत अमीर होगा।"

कुछ दूर और आगे चल कर उस लोमड़ी को हजारों सूअर मिले। लोमड़ी ने उनके चराने वालों से भी पूछा — "ये सूअर किस के हैं?"

"पापा ओगरे के।"

"श श श श। धीरे बालो। तुम वे सिपाही देख रहे हो न जो इधर ही चले आ रहे हैं। अगर तुमने उनसे यह कहा कि ये सूअर पापा ओगरे के हैं तो वे तुमको मार देंगे। तुम उनसे कहना कि ये सारे सूअर काउन्ट पीयर ट्री के हैं तो वे तुमको नहीं मारेंगे।"

"ठीक है।"

जब राजा वहॉ तक आया तो हजारों सूअर देख कर उनके रखवालों से पूछा कि इतने बढ़िया सूअर किसके हैं तो उन्होंने जवाब दिया "काउन्ट पीयर ट्री के।"

यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ कि उसका दामाद[63] तो बहुत अमीर है – इतनी सारी भेड़ें, इतने सारे सूअर।

उसके बाद राजा के लोग एक ऐसी जगह आये जहॉ बहुत सारे घोड़े घास खा रहे थे। राजा ने जब उनकी देखभाल करने वालों से पूछा कि वे घोड़े किसके हैं तो उनके रखवालों ने भी उनको यही कहा कि वे घोड़े काउन्ट पीयर ट्री के हैं।

राजा ने सोचा कि उसकी बेटी कितनी खुशकिस्मत है कि उसको कितना अच्छा पति मिल गया है।

अन्त में जियोवानूज़ा पापा ओगरे के महल में पहुॅची। वहॉ वह अकेला ही अपनी पत्नी के साथ रहता था। मॉ ओगरे ने जब जियोवानूज़ा को देखा तो वह तुरन्त पापा ओगरे के पास दौड़ी आयी और बोली — "काश तुम यह जान सकते कि तुम किस मुसीबत में फॅस गये हो।"

पापा ओगरे डर गया और बोला — "क्या हो गया?"

"देखो न, वह धूल का बादल उड़ता चला आ रहा है। लगता है कि यह तो राजा की सेना है जो तुमको मारने चली आ रही है।"

[63] Translated for the word "Son-in-law" – daughter's husband

दोनों ने बहिन लोमड़ी से कहा — "बहिन लोमड़ी, हमारी सहायता करो।"

लोमड़ी बोली — "मेरी सलाह यह है कि तुम लोग स्टोव में जा कर छिप जाओ। जब वे सब यहाँ से चले जायेंगे तो मैं तुमको इशारा कर दूँगी तब तुम बाहर निकल आना।"

सो पापा और माँ ओगरे ने वही किया। वे दोनों स्टोव में छिप कर बैठ गये। अन्दर जा कर उन्होंने जियोवानूज़ा से कहा कि वह स्टोव का दरवाजा पेड़ की टहनियों से बन्द कर दे ताकि वे लोग उनको देख न सकें।

यही तो वह लोमड़ी भी सोच रही थी सो उसने पेड़ की टहनियाँ स्टोव के दरवाजे पर लगा कर स्टोव को पूरी तरह से बन्द कर दिया। फिर वह जा कर राजा और उसकी बेटी का स्वागत करने के लिये उनके महल के दरवाजे पर खड़ी होगयी।

जब राजा वहाँ आये तो उसने नम्रता से कहा — "मैजेस्टी, आइये। मेहरबानी कर के घोड़े पर से उतरिये। यही काउन्ट पीयर ट्री का महल है।"

राजा और उसकी बेटी और जोसेफ तीनों अपने अपने घोड़ों से नीचे उतरे और उस महल की शानदार सीढ़ियाँ चढ़े। वहाँ उन्होंने काउन्ट पीयर ट्री की बहुत सारी दौलत देखी तो राजा के मुँह से तो एक शब्द भी नहीं निकला।

उसने सोचा — "मेरे महल में तो इससे आधी दौलत भी नहीं है।"

उधर जोसेफ जो एक गरीब आदमी था यह सब देखता का देखता रह गया। उसको अपनी ऑखों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सब उसका था।

जब राजा को थोड़ा होश आया तो उसने पूछा — "पर यहॉ कोई नौकर नहीं दिखायी दे रहा।"

लोमड़ी ने तुरन्त ही जवाब दिया — "आज के दिन उन सबको छुट्टी दे दी गयी है क्योंकि मेरे मालिक बिना मालकिन की मर्जी के कोई भी इन्तजाम नहीं करना चाहते थे। अब वह आ गयी हैं तो अब वह हुक्म करें कि वह क्या चाहती हैं।"

जब उन्होंने सब कुछ देख लिया तो राजा अपने महल को लौट गया और काउन्ट पीयर ट्री वहीं रह गया, राजा की बेटी के साथ, पापा ओगरे के महल में।

इस बीच पापा और मॉ ओगरे अभी तक स्टोव में ही बन्द थे। रात को लोमड़ी स्टोव के ऊपर गयी और फुसफुसायी — "पापा ओगरे, मॉ ओगरे, क्या तुम लोग अभी यहीं हो?"

उन्होंने बड़ी कमजोर सी आवाज में कहा — "हॉ हम लोग अभी यहीं हैं।"

लोमड़ी बोली — "ऐसा करो तुम लोग अभी यहीं रहो।" कह कर उसने स्टोव के सामने रखी टहनियों में आग लगा दी। पापा ओगरे और मॉ ओगरे दोनों उस आग में जल कर मर गये।

लोमड़ी काउन्ट पीयर ट्री से बोली — "अब तुम अमीर और खुश हो पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि जब मैं मरूँ तो मुझे एक बहुत सुन्दर ताबूत[64] में लिटाना और मुझे पूरी इज़्ज़त के साथ दफ़नाना।"

राजा की बेटी ने जिसको उस लोमड़ी से प्यार हो गया था उससे कहा — "ओह बहिन जियोवानूज़ा, तुम इस खुशी के मौके पर ऐसी मरने की बात क्यों कर रही हो?"

कुछ समय बाद जियोवानूज़ा ने उन दोनों का इम्तिहान लेना चाहा। सो उसने मरने का बहाना किया। जब राजा की बेटी ने लोमड़ी को अकड़ा पड़ा देखा तो वह चिल्लायी — "अरे देखो जियोवानूज़ा तो मर गयी। ओह हमारी प्यारी दोस्त। हमको इसके लिये तुरन्त ही एक बहुत ही बढ़िया ताबूत बनवाना चाहिये।"

काउन्ट पीयर ट्री बोला — "ताबूत? एक जानवर के लिये? हम इसको ऐसे ही खिड़की से बाहर फेंक देंगे।"

कह कर उसने उसको पूँछ से पकड़ लिया और बाहर फेंकने ही वाला था कि वह लोमड़ी उसके हाथ से निकल कर कूद गयी और चिल्लायी — "ओ बिना पैसे के आदमी, नीच, बेवफा, क्या तुम

[64] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

इतनी जल्दी सब कुछ भूल गये? भूल गये कि तुम्हारी यह सब दौलत मेरी वजह से है। अगर मैं न होती तो तुम अभी भी दान पर ज़िन्दा रह रहे होते। तुम बहुत ही कंजूस, बेवफा और नीच हो।"

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। न तो मैं तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहता हूँ और न ही तुम्हारा दिल दुखाना चाहता हूँ। यह तो बस मेरे मुँह से ऐसे ही निकल गया। मैंने सोचा ही नहीं था कि मैं क्या कह रहा हूँ।"

"बस अब तुम मुझे आखिरी बार देख रहे हो।" कह कर वह लोमड़ी दरवाजे की तरफ भाग गयी।

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसके साथ ही रहे पर उसने नहीं सुना। वह सड़क पर भागी चली गयी और गायब हो गयी और फिर कभी दिखायी नहीं दी।

14 यो लुंग पहाड़[65]

नाशपाती फल की यह एक दंत कथा है जो एशिया महाद्वीप के चीन देश में कही सुनी जाती है।

यह बहुत साल पहले की बात है कि एक बार पश्चिमी चीन के एक गॉव पाई ली[66] में बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। वह अकाल इतने ज़ोर का था कि उस अकाल में जमीन में दरारें पड़ गयीं और नदियॉ सूख गयीं।

उस गॉव का नाम पाई ली एक सफेद नाशपाती के पेड़ के नाम पर पड़ गया था जो वहॉ बहुतायत से होता था पर अब पानी की कमी की वजह से उन पेड़ों की जड़ें भी सूखने लगी थीं।

यो लुंग[67] इसी गॉव में अपनी अन्धी मॉ के साथ रहता था। इस आदमी की आमदनी का भी दूसरे गॉव वालों की आमदनी की तरह केवल एक ही जरिया था और वह था उसका नाशपाती के पेड़।

उसको मालूम था कि इस सूखे के समय में अब इस आशा में घर पर बैठना तो बेकार था कि आसमान से चावल या कुछ और

[65] Yo Lung Mountain – a folktale from China, Asia. Adapted from from the book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011.

[66] Pai Li – name of the village

[67] Yo Lung – name of the mountain

खाने का सामान उनके लिये बरसेगा सो उसने एक चाकू लिया और पहाड़ की तरफ कुछ खाने लायक घास की जड़ें लाने चल दिया।

वह मीलों तक गर्म जमीन और उस पर पड़े नुकीले पत्थरों पर चलता रहा पर पहाड़ पर उगी हुई घास भी इस सूखे के मौसम में नहीं बच सकी थी। वह भी सब सूख गयी थी।

वह खाना ढूँढते ढूँढते थक गया तो वहीं एक चोटी पर बैठ गया। जहॉ वह बैठा था वहॉ उसने एक स्त्री के रोने की आवाज आती सुनी।

उसको लगा कि यहॉ इस अकेली जगह में कौन हो सकता है सो वह चिल्लाया — "कौन है? नीचे कौन है?"

उसके सवाल का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया पर वह अभी भी उस स्त्री के रोने की आवाज सुन पा रहा था सो वह पहाड़ के नीचे की तरफ चल दिया।

जब तक वह पहाड़ के नीचे की अँधेरी गुफा के पास पहुँचा जहॉ से उसको लग रहा था कि रोने की आवाज आ रही थी तब तक पूर्व में चॉद निकल आया था।

उसने पास में पड़ी एक झाड़ी की लकड़ी में आग लगायी और उसकी रोशनी में एक गहरी सॉस ले कर उस गुफा के अन्दर घुसा।

जल्दी ही उसको सफेद बालों वाली एक बुढ़िया नजर आ गयी। वह फर्श पर सिकुड़ी पड़ी थी। वह उसी के रोने की आवाज सुन रहा था। उसके रोने की वजह जानने के लिये वह आगे बढ़ा।

उस बुढ़िया के पैरों के चारों तरफ लोहे की जंजीर बँधी थी और उस जंजीर का दूसरा सिरा गुफा के दूर के एक कोने में रखी एक पत्थर की चट्टान से कस कर बँधा था।

यो लुंग ने बजाय डरने के आश्चर्य से उस बुढ़िया से पूछा — "माँ जी, आप यहाँ कैसे? क्या आप कोई भूत हैं?"

उस बुढ़िया ने काँपते हुए जवाब दिया — "नहीं बेटा, न तो मैं कोई भूत हूँ और न ही कोई बुरी आत्मा हूँ। मैं समुद्री ड्रैगन राजा[68] की पत्नी हूँ और मैं समुद्र की तली में रहती हूँ।

मेरा काम था कि मैं रोज एक बार आसमान पर जाऊँ और वहाँ से धरती पर बारिश करूँ पर एक दिन मैं जेड बादशाह[69] से बात करने में रह गयी सो उतने समय में ही बहुत सारी बारिश पड़ गयी और इससे धरती पर बाढ़ आ गयी।

मेरे पति इस बात पर इतने गुस्सा हो गये कि उन्होंने मुझे ड्रैगन डंडे[70] से तीन सौ बार मारा और फिर यहाँ चार सौ साल के लिये बन्द कर दिया।"

इतना कह कर वह बुढ़िया चुप हो गयी और चुपचाप रोने लगी। हर सुबकी के साथ उसका सारा शरीर काँप रहा था।

---

[68] Sea Dragon King

[69] Jade Emperor – the King of the Sky

[70] Translated for the word "Dragon Cudgel". See its picture above.

यो लुंग ने उससे कहा — "मॉ जी आप रोयें नहीं। मैं आपको बचाने की कोई न कोई तरकीब जरूर निकालूँगा। मैं आपसे वायदा करता हूँ कि जब तक आप आजाद नहीं हो जायेंगी मैं आपको यहॉ अकेला छोड़ कर नहीं जाऊँगा।"

वह बुढ़िया बोली — "अगर तुम्हारे पास समय है तो मुझे आजाद करने की एक तरकीब है। अगर तुम इस पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाओ तो वहॉ तुमको एक हू पेड़[71] मिलेगा।

वह पेड़ तीन हजार साल पुराना है। तुमको उस पेड़ से तीन हजार सूखी पत्तियॉ तोड़नी होंगी पर यह ध्यान रखना कि वे सब पत्तियॉ तुम्हारी हथेली के नाप की ही हों।

तुम उन पत्तियों को यहॉ ले आना और उनको इस लोहे की जंजीर के नीचे जला देना। उन पत्तियों की गर्मी और धुँआ इस जंजीर को गला देगा और मैं आजाद हो जाऊँगी।"

यो लुंग को जैसा कि उस बुढ़िया ने कहा था उसके लिये और ज़्यादा कहने की जरूरत नहीं थी। वह बिना सोचे समझे कि उस पहाड़ की अँधेरी चोटी पर उसके लिये कितना खतरा होगा या वह उस काम को कैसे करेगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ने चल दिया।

हू पेड़ को ढूँढना आसान था पर उस पेड़ की ठीक नाप की पत्तियॉ इकट्ठी करने में उसको सारी रात और सारी सुबह लग गयी।

[71] Hu Tree

उसने उन सब पत्तियों को अपनी जैकेट की जेब में ठूँसा और उस पहाड़ की चोटी से नीचे उतर आया।

जब तक वह उस गुफा में वापस आया उसके कपड़े फट गये थे और हाथ पैर घायल हो गये थे। उन घावों से खून बह रहा था फिर भी उसने उस जंजीर के नीचे आग जलायी और उस बुढ़िया के पास बैठ कर सारी रात उस जंजीर के गलने का इन्तजार करने लगा। वह जंजीर अगली सुबह तक जा कर गली।

उस बुढ़िया ने धन्यवाद देने के लिये लू युंग के हाथ पकड़े और फिर धीरे से उठी। उसने वायदा किया कि वह उसको उस गुफा की छत तक पहुँचने वाला खजाना देगी।

लो युंग उसकी बात सुन रहा था जिसमें वह उसको कीमती जवाहरात देने की बात कर ही रही थी कि उस बुढ़िया ने उस लड़के का खाली खाली चेहरा देखा तो उसकी आवाज डूबती चली गयी।

लो युंग जल्दी से बोला — "मैं आपकी इस दया को मना नहीं कर रहा हूँ पर मुझे आपके इस पैसे में कोई रुचि नहीं है। अगर आप मेरी तीन इच्छाऐं पूरी कर दें तो वह मेरे लिये ज़्यादा अच्छा होगा। क्या आप ऐसा कर सकती हैं?"

बुढ़िया ने हाँ में अपना सिर हिलाया तो लो युंग आगे बोला — "मेरी माँ दस साल से अन्धी है। क्या आप उनको आँखें दे सकती हैं?"

उस बुढ़िया ने हॉ में सिर हिलाया तो लो युंग ने अपनी दूसरी दो इच्छाऐं आगे रखीं — "मैं चाहता हूँ कि हमारे बागीचे के फलों के पेड़ों पर फिर से फल आ जायें और तीसरी बात यह कि क्या आप हमारे गॉव में बारिश फिर से ला सकती हैं जिससे कि हम गॉव वालों के पेड़ फिर से फूल सकें?"

जब बुढ़िया ने लो युंग की यह तीसरी इच्छा सुनी तो उसको उसकी इस इच्छा पूरी करने में कुछ शक सा हुआ सो उसने ना में अपना सिर हिलाया।

वह दुनियॉ की कोई भी इच्छा पूरी कर सकती थी सिवाय इस के क्योंकि उसको चार सौ साल तक बारिश करने से मना कर दिया गया था। पर उसको यह भी मालूम था कि यह उसका फर्ज था कि वह लो युंग को अपने आजाद कराने के बदले में कुछ दे।

इसलिये उसने अपनी स्कर्ट की एक जेब से एक क्रिस्टल की गेंद[72] और एक कटोरा निकाला, उस गेंद को कटोरे के ऊपर रखा और फिर उसने उस गेंद के ऊपर भगवान की प्रार्थना कह कर उस गेंद को तीन बार हिलाया।

उसके हर बार हिलाने पर उस गेंद की तली से सूरज की किरन की तरह पानी की एक धारा निकल कर उस कटोरे में गिर पड़ी। उसने वह गेंद अपने स्कर्ट में रख ली और वह कटोरा उसने लो युंग को दे दिया।

[72] Crystal is a specially formed mineral or glass which is clear, transparent and resembles the ice.

कटोरा देते हुए वह उससे बोली — "लो यह पानी लो। यह अमर पानी है। इस पानी को अपनी मॉ की ऑखें वापस लाने के लिये उनको धोने के लिये इस्तेमाल करना तो उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।

फिर इसमें से एक घूँट पानी तुम खुद पी लेना। उसके बाद दूसरी बार मुँह में पानी लेना और उसको अपने बागीचे में चारों तरफ थूक देना। इससे तुम्हारे नाशपाती के पेड़ हरे हो जायेंगे।

पर अगर तुम दो बार से ज्यादा पानी लोगे तो तुम एक मेंढक बन जाओगे। और अगर चौथी बार यह पानी पियोगे तो तुम डूबने से मरोगे।

तुमको यह भी पता होना चाहिये कि मैं तुम्हारी किस्मत तो बदल सकती हूँ पर तुम्हारे सारे गॉव की किस्मत नहीं बदल सकती। मेरी कही बात ध्यान रखना। अगर तुमने मेरा कहा नहीं माना तो फिर तुम अपनी मॉ को कभी नहीं देख पाओगे।"

लो युंग जब उस अमर पानी को ले कर घर लौटा तो उसके दिमाग में उस बुढ़िया की चेतावनी और गॉव वालों की प्रार्थना दोनों घूमती रहीं। जब उसने अपनी मॉ को अपनी कशमकश के बारे में बताया तो वह केवल इतना ही बोली — "बेटा, जैसा तुम ठीक समझो करो।"

उसकी यह सलाह सुन कर वह अपनी मॉ के सामने अपने घुटनों के बल बैठ गया और उसको तीन बार सिर झुका कर प्रणाम

किया। उन दोनों को कुछ कहने की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे दोनों जानते थे कि वे दोनों आखिरी बार मिल रहे थे।

लो युंग ने उस अमर पानी से अपनी मॉ की ऑखें धोयीं। इस से उसकी मॉ अब देखने लगी। उसके बाद उसने एक घूँट पानी अपने मुँह में लिया और अपने घर के पीछे के बागीचे में फेंक दिया।

जैसा कि वह उम्मीद कर रहा था उसके पेड़ तुरन्त ही बढ़ने शुरू हो गये और उनमें हरी हरी पत्तियॉ निकल आयीं और फिर उन में कलियॉ भी निकल आयीं।

फिर अपनी किस्मत को जानते हुए कि अब उसका क्या होने वाला है वह पहाड़ पर चढ़ गया। वहॉ जा कर उसने उस कटोरे से दो घूँट पानी अपने मुँह में लिया और पाई ली गॉव की तरफ मुँह कर के उसको उधर फेंक दिया।

वह पानी हवा में ही अटक गया जब तक कि एक बहुत बड़ा बादल छतरी की तरह से वहॉ नहीं छा गया और उसमें से बहुत ज़ोर की बारिश नहीं होने लगी जिससे हफ्तों तक खेतों में पानी भरा रहा।

उधर गॉव वालों ने एक दूसरे को बधाई दी और इधर लो युंग के पैरों के नीचे से जमीन फट गयी और बिजली की सी तेज़ी के साथ उसने उसको अपने अन्दर निगल लिया। उस समय अगर वहॉ

कोई होता भी तो भी उसको बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकता था।

पर उसी समय उसको निगलने के बाद धरती बन्द हो गयी और वहॉ से पानी का एक स्रोत फूट पड़ा।

इस स्रोत की खासियत यह थी कि सूखे के समय में भी यह स्रोत सूखता नहीं था और उन गॉव वालों के खेतों को सींचता रहता था। लोग उस पानी को लो युंग की भेंट कह कर पुकारते हैं।

सारे चीन में यह पहाड़ लो युंग के नाम से जाना जाता है और वहॉ से निकलती यह पानी की धारा अमर धारा कहलाती है।

15 आलूबुखारे का पेड़[73]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि जापान में मोमोयामा फुशीमी[74] में एक बूढ़ा माली रहता था। उसका नाम था हैम्बी[75]। उसके दयालु स्वभाव और उसकी ईमानदारी के लिये लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

हालॉकि हैम्बी बहुत गरीब था पर उसके पास रहने और खाने के लिये काफी था। उसको अपने पिता से एक मकान और एक बागीचा विरासत में मिला था सो उससे वह खुश था।

उसके उस बागीचे में एक खास आलूबुखारे का पेड़ था जो उसको बहुत प्यारा था। सो उसका सबसे प्रिय काम था अपने बागीचे में उस खास आलूबुखारे[76] के पेड़ की देखभाल करना। वह पेड़ जापान में फुर्यो[77] के नाम से मशहूर था।

ऐसे पेड़ों की वहॉ बहुत कीमत होती थी खास कर के जब कोई अपना बागीचा सजा रहा होता था।

---

[73] Plum Tree – a folktale from Japan, Asia. Adapted from the Web Site : http://zeluna.net/plumtree-japanese-folk-tale.html Retold by Nikiuk. Available at http://www.sacred-texts.com/shi/atfj/atfj53.htm too

[74] Momoyama Fushimi – a place in Japan

[75] Hambie – name of the gardener

[76] Translated for the word “Plum”. See its picture above

[77] Furyo – means “lying dragon” – so it is a dragon shaped tree

हालॉकि इस काम के लिये और पहाड़ों और दूसरे टापुओं पर और भी बहुत सारे सुन्दर सुन्दर पेड़ होते थे पर इस पेड़ की अपनी कुछ अलग ही सुन्दरता थी इसलिये लोग ऐसे पेड़ लगाना ज़्यादा पसन्द करते थे। दूसरे वाले पेड़ व्यापारिक इस्तेमाल के लिये ज़्यादा इस्तेमाल होते थे।

जापान के रहने वालों के लिये ऐसे फुर्यो की शक्ल के पेड़ों की बहुत कीमत होती थी चाहे वे आलूबुखारे के पेड़ हों या फिर पाइन[78] के। अगर वे फुर्यो की शक्ल के होते थे तो वे उनको छूते भी नहीं थे।

आलूबुखारे के इस फुर्यो पेड़ के लिये लोगों ने हैम्बी को कई बार बहुत सारे पैसे दे कर खरीदने की कोशिश की पर वह उसको किसी भी तरह बेचने पर राजी नहीं कर सके।

हैम्बी को यह पेड़ उसकी सुन्दरता की वजह से ही प्यारा नहीं था बल्कि वह उसको इसलिये भी प्यारा था क्योंकि वह पेड़ उसके पिता का था, उसके बाबा का था।

और अब जब कि वह और उसकी पत्नी बूढ़े हो गये थे और उसके बच्चे घर से चले गये थे एक वही उसका साथी था।

नवम्बर दिसम्बर की ठंड में उस पेड़ की सब पत्तियॉ झड़ जातीं। फिर जनवरी में उसमें कलियॉ निकलतीं तो उस समय कुछ

[78] Pine tree – it is an evergreen tree normally grown in cold climate. There are several kinds, but one kind is shown here above.

ऐसा रिवाज था कि लोग दिन के कुछ घंटे उस पेड़ के नीचे आ कर बैठते और आलूबुखारों की कहानियॉ कहते सुनते।

जब यह सब खत्म हो जाता तो हैम्बी अपने पेड़ की कटायी छॅटायी करता और फिर गर्मी के दिनों में अपना पाइप[79] पीता हुआ उसी पेड़ के आस पास घूमता रहता।

इस तरह से साल पर साल बीतते गये और राजा का पैसा भी उस पेड़ को न खरीद सका।

पर कभी न कभी कुछ न कुछ तो होना ही था। कोई भी आदमी हमेशा के लिये तो अपनी चीज़ों को लिये हुए बैठा नहीं रहता। एक न एक दिन तो उसको उसे छोड़ना ही पड़ता है।

एक दिन राजा के एक सलाहकार[80] ने हैम्बी के पेड़ के बारे में सुना तो उसको अपने बागीचे में लगाना चाहा। उसने अपने एक नौकर कोटारो नैरूस[81] को उस पेड़ को खरीदने की इच्छा से हैम्बी के पास भेजा।

उसको इस बात का ज़रा भी अन्दाज़ नहीं था कि वह जितने पैसे हैम्बी को दे रहा था वे उसे कम भी पड़ सकते थे।

कोटारो मोमोयामा फुशीमी आया तो वहॉ उसका रस्मी तौर पर स्वागत हुआ। एक प्याला चाय पीने के बाद कोटारो बोला कि

---

[79] Pipe – by which people smoke tobacco. See the picture above.

[80] Translated for the "Dainagon" – counselor of the first rank in the Imperial court of Japan created in 8th century (702 AD) remained in effect till 19th century

[81] Kotaro Neruse – the man of the King's counselor

उसको आलूबुखारे का फुर्यो पेड़ राजा के सलाहकार के लिये ले जाने के लिये वहॉ भेजा गया है।

हैम्बी तो यह सुन कर परेशान हो गया। इतने ऊॅचे ओहदे वाले आदमी को वह उस पेड़ को न देने का क्या बहाना बनाये यह उस की समझ में ही नहीं आया। सो उसने हकलाते हुए एक बेवकूफी की बात कही जिसका उस अक्लमन्द नौकर ने तुरन्त ही फायदा उठा।

हैम्बी बोला — "नहीं, किसी कीमत पर भी मैं इस पुराने पेड़ को किसी को भी नहीं बेच सकता। मैंने पहले भी कई लोगों को इसको बेचने से मना कर दिया है।"

कोटारो बोला — "मैंने यह नहीं कहा कि मैं पैसे के बदले में इस पेड़ को खरीदने के लिये भेजा गया हूॅ। मैं तो यह कह रहा था कि मैं इसलिये भेजा गया हूॅ ताकि मैं इस पेड़ को उस सलाहकार के घर तक सुरक्षित रूप से पहुॅचा सकूॅ।

वहॉ वह इस पेड़ को रस्मों के साथ लेंगे और इसकी बहुत अच्छे तरीके से देखभाल करेंगे। यह तो ऐसा होगा जैसे कि उनकी पत्नी घर आ रही हो।

और यह तो तुम्हारे लिये और इस आलूबुखारे के पेड़ दोनों के लिये ही बड़े गर्व की बात होगी कि वह इस बन्धन के द्वारा इतनी बड़े आदमी से जुड़ेगा। मेरी सलाह मानो तो इस बात के लिये हॉ कर दो।"

अब हैम्बी क्या कहे। वह तो बहुत ही नीचे परिवार में पैदा हुआ था और आज उसको एक बहुत ही ऊँचे परिवार के आदमी को कुछ देने के लिये कहा जा रहा था।

वह बोला — "जनाब आपने मुझसे उन सलाहकार के लिये इतनी नम्रता से कहा है कि मैं ना कर ही नहीं सकता। आप उनसे कह दीजियेगा कि यह पेड़ मेरी तरफ से उनके लिये भेंट है क्योंकि मैं इसको बेच तो नहीं सकता।"

यह सुन कर कोटारो अपनी कोशिश की सफलता पर बहुत खुश हुआ। उसने अपने कपड़ों में से एक थैली निकाली और हैम्बी को उसे देते हुए बोला — "यह तुम्हारी भेंट के बदले में रस्म के तौर पर एक छोटी सी भेंट है मेहरबानी कर के तुम इसको स्वीकार करो।"

हैम्बी ने देखा तो उस थैली में तो सोना भरा हुआ था। उसने तुरन्त ही वह थैली कोटारो को वापस करते हुए कहा — "यह भेंट मेरे लिये लेना नामुमकिन है।" पर बाद में उस नम्र आदमी के दोबारा कहने पर उसने उस थैली को रख लिया।

पर जैसे ही कोटारो वहाँ से गया हैम्बी पछताने लगा क्योंकि उसको लगा कि जैसे उसने राजा के उस सलाहकार को अपना ही माँस और खून बेच दिया हो या फिर अपनी बेटी ही बेच दी हो। उस शाम वह सो नहीं सका।

आधी रात को उसकी पत्नी उसके कमरे की तरफ दौड़ी गयी और उसकी बॉह खींचते हुए चिल्लायी — "ओ नीच बूढ़े, इस उम्र में भी तुम ऐसे ऐसे काम करते हो?

तुम ज़रा यह तो बताओ तुमको वह लड़की कहॉ से मिली? आज मैंने तुमको पकड़ लिया है। झूठ मत बोलना मुझसे। मुझे कोई आश्चर्य नहीं अगर तुम अपने आपसे इस तरह बदला ले रहे हो तो।"

हैम्बी को लगा कि इस बार तो उसकी पत्नी बिल्कुल ही पागल हो गयी है क्योंकि वह तो किसी लड़की से मिला ही नहीं था। वह बोला — "क्या हो गया है तुमको ओबा सैन? मैं तो किसी लड़की से कभी मिला ही नहीं हूॅ। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुम कह क्या रही हो?"

वह बोली — "तुम मुझसे झूठ मत बोलो। मैंने उसको देखा है। जब मैं अपने पीने के लिये एक गिलास पानी लेने गयी थी तब मैंने उसको अपनी ऑखों से देखा है।"

हैम्बी बोला — "क्या कहा? देखा है तुमने? तुम कहना क्या चाहती हो? मुझे लगता है कि आज तुम बिल्कुल ही पागल हो गयी हो जो तुमने उस लड़की को देख लिया। मै तो किसी लड़की से मिला ही नहीं फिर तुमने किस लड़की को देख लिया।"

उसकी पत्नी बोली — "मैंने उसको घर के बाहर रोते हुए देखा है। बहुत ही सुन्दर लड़की है वह। तुम तो बहुत पुराने पापी हो। वह लड़की तो बस केवल सत्रह अठारह साल की है।"

यह सुन कर हैम्बी अपने बिस्तर से यह देखने के लिये उठा कि उसकी पत्नी सच बोल रही थी या फिर वह वाकई पागल हो गयी है।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसको सिसकने की आवाज आयी और जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो उसने भी एक सुन्दर सी लड़की को देखा। उसको सन्तोष की साँस आयी कि कम से कम उसकी पत्नी पागल तो नहीं हुई थी

हैम्बी ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

वह लड़की बोली — "मैं उस आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा हूँ जिसकी तुम बरसों से देखभाल करते चले आ रहे हो, और तुम्हारे पिता भी। मैंने सब सुन लिया है और मुझे दुख भी बहुत है कि मुझे उस सलाहकार के घर के बागीचे में भेजा जा रहा है।

किसी अच्छे परिवार के साथ जुड़ना अच्छा तो लगता है और इज़्ज़त की बात भी है। मैं शिकायत तो नहीं कर सकती पर क्योंकि मैं यहाँ तुम्हारे पास इतने दिनों तक रही हूँ और तुमने मेरी इतने अच्छे से देखभाल की है इसलिये मुझे यहाँ से जाने में अच्छा नहीं लग रहा है।

क्या तुम मुझे यहाँ कुछ और समय के लिये नहीं रख सकते? जितने भी दिन मैं रहूँ।"

हैम्बी बोला — "हालाँकि मैंने तुमको उस सलाहकार के घर क्योटो[82] अगले शनिवार को यहाँ से भेजने का वायदा किया है पर फिर भी मैं तुम्हारी प्रार्थना को ठुकरा नहीं सकता क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ रहो। तुम यहाँ शान्ति से रहो मैं देखता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ।"

आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा ने अपने आँसू पोंछे और हैम्बी की तरफ देख कर मुस्कुरायी और फिर उस आलूबुखारे के पेड़ के तने में जा कर गायब हो गयी।

हैम्बी की पत्नी यह सब आश्चर्य से खड़ी खड़ी देख रही थी। उसको यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसके पति की यह कोई चाल नहीं थी।

आखिर वह दुखदायी शनिवार भी आ ही पहुँचा जब उस पेड़ को वहाँ से जाना था। कोटारो वहाँ बहुत सारे आदमियों के साथ एक गाड़ी ले कर आ गया था।

हैम्बी ने कोटारो को बताया कि उसके जाने के बाद क्या हुआ था। कैसे उस पेड़ की आत्मा आयी थी और उससे क्या कह रही

[82] Kyoto – former capital of Japan, now it is only a big city. Its one knickname is the "City of Ten Thousand Shrines". Japan's present capital is Tokyo.

थी। फिर उसने उससे प्रार्थना की कि वह सलाहकार के घर जाना नहीं चाहती थी।

हैम्बी ने उसको उसका पैसा वापस करते हुए कहा — "मेहरबानी कर के यह कहानी जो मैंने तुमसे कही है उस सलाहकार को बता देना। मुझे पूरा विश्वास है कि वह हम पर दया जरूर करेंगे।"

यह सुन कर कोटारो गुस्सा हो गया। उसने पूछा — "पर यह बदलाव आया कैसे? क्या तुमने पी रखी है या फिर तुम मुझे बेवकूफ बना रहे हो?

तुमको बात करते समय सावधान रहना चाहिये। नहीं तो मैं तुमको बता रहा हूँ कि तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।

अगर हम यह भी मान लें कि उस पेड़ की आत्मा तुम्हारे सामने एक लड़की के रूप में प्रगट हुई थी तो क्या उसने यह भी कहा था कि उसको यह जगह छोड़ कर उस सलाहकार के घर जाने में उसे दुख होगा?

तुम बेवकूफ हो, किसी का अपमान करने वाले ओ बेवकूफ। सलाहकार की भेंट वापस करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं उनको इस अपमान की सफाई कैसे दूँगा? और फिर वह मेरे बारे में भी क्या सोचेंगे?

क्योंकि तुम अपना वायदा पूरा नहीं कर रहे हो तो या तो मैं तुम्हारे पेड़ को ज़बरदस्ती ले जाऊँगा और या फिर उसके बदले में मैं तुमको मार दूँगा।"

कोटारो का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। गुस्से में आ कर उसने हैम्बी को ठोकर मारी तो वह सीढ़ी से नीचे गिर पड़ा।

फिर उसने अपनी तलवार खींचते हुए उसको मारना चाहा कि आलूबुखारे के फूलों की खुशबू का एक झोंका आया और एक बहुत सुन्दर लड़की कोटारो के सामने आ कर खड़ी हो गयी – आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा।

उसको देख कर कोटारो चिल्लाया — "मेरे रास्ते से हट जाओ वरना मैं तुमको मार दूँगा।"

वह लड़की बोली — "नहीं, मैं नहीं हटूँगी। इस बेकुसूर आदमी को मारने की बजाय तो अच्छा है कि तुम मुझे मार दो – उस आत्मा को मार दो जिसकी वजह से तुमको परेशानी उठानी पड़ रही है।"

कोटारो बोला — "हालाँकि मुझे आलूबुखारे के पेड़ की आत्मा में कोई विश्वास नहीं है पर फिर भी तुम उसकी आत्मा हो यह तो मुझे साफ नज़र आ रहा है।

पर फिर भी क्योंकि तुम उस पुराने पेड़ की आत्मा हो इसलिये मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ और मैं तुमको सबसे पहले मारूँगा।"

उसने यह कहने के साथ ही अपनी तलवार से कुछ काटा और उसको लगा भी कि उसकी तलवार ने सचमुच ही किसी शरीर को

काटा। इससे वह लड़की तो गायब हो गयी पर उसकी तलवार आलूबुखारे के पेड़ की एक शाख़ गिर पड़ी जिस पर फूल खिले हुए थे।

अब कोटारो की समझ में आया कि वह माली जो कुछ कह रहा था वह सच था सो उसने उससे माफी माँगी। इस तरह आलूबुखारे की पेड़ की आत्मा ने उस माली की जान बचायी।

कोटारो बोला — "मैं इस पेड़ की यह शाख लिये जा रहा हूँ और देखता हूँ कि मैं उस सलाहकार को यह कहानी सुना पाता हूँ या नहीं। और वह इस कहानी पर विश्वास कर पाता है कि नहीं।"

कोटारो उस शाख को ले कर चला गया और जा कर उस सलाहकार को वह कहानी सुनायी तो वह सलाहकार भी उसको सुन कर रो पड़ा।

उसने उस माली को एक बहुत ही प्यार भरा सन्देश भिजवाया और उसको वह पेड़ और वह पैसे जो उसने पेड़ लेने के बदले में भिजवाये थे वे भी उसको अपने पास रखने की इजाज़त दे दी।

हालाँकि कोटारो की तलवार के वार से आलूबुखारे का वह पेड़ धीरे धीरे मुरझा गया और हैम्बी की देखभाल के बावजूद फिर मर भी गया पर उसके तने का टुकड़ा अभी भी वहाँ मौजूद है।

16 बेवकूफ बन्दर और केंकड़ा[83]

आलूबुखारे की एक और लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश में कही सुनी जाने वाली।

बहुत समय पुरानी बात है कि जापान की किसी दूर जगह में रेत के एक ढेर के किनारे एक केंकड़ा[84] रहता था।

एक दिन एक बन्दर वहाँ से आलूबुखारे[85] का एक बीज लिये हुए गुजरा। उसने देखा कि एक केंकड़ा अपने घर के पास धूप में बैठा चावल खा रहा है।

बन्दर ने सोचा कि यह कोई ज़्यादा मजेदार खाना होगा सो उसने केंकड़े से खाने के लिये वह चावल माँगा। बन्दर ने केंकड़े से यह भी कहा कि वह उस चावल के बदले में अपना आलूबुखारे का बीज उसको दे देगा।

केंकड़ा राजी हो गया। उसने अपना चावल बन्दर को दे दिया और उससे उसका आलूबुखारे का बीज ले लिया।

अब केंकड़े ने सोचा कि उस आलूबुखारे के बीज को बो दिया जाये। सो उसने वह बीज बो दिया और कुछ ही दिनों में उस बीज में से एक छोटा सा पौधा ऊपर निकल आया।

---

[83] The Foolish Monkey and the Crab – a folktale from Japan, Asia.

[84] Translated for the word “Crab”

[85] Translated for the word “Plum”. See its picture above.

केंकड़ा उस पौधे की बड़ी देखभाल करता। उसको रोज पानी देता। उसको जंगली जानवरों से बचाता। जल्दी ही वह पौधा बड़ा हो गया और उसने फल भी देना शुरू कर दिया।

काफी दिनों बाद बन्दर एक बार फिर केंकड़े से मिलने आया। केंकड़े के आलूबुखारे के पेड़ को देख कर बन्दर बहुत खुश हुआ और उसके फल तो उसे बहुत ही अच्छे लगे। उसके फल देख कर उसके मुँह में पानी भर आया सो उसने केंकड़े से कुछ आलूबुखारे माँगे।

केंकड़ा बोला — "एक शर्त पर। मैं बहुत छोटा हूँ और फल तोड़ने के लिये ऊपर तक नहीं जा सकता। तुम ऊपर चढ़ जाओ तो जितने फल तुम पेड़ पर से तोड़ोगे उनमें से आधे तुम्हारे और आधे मेरे।" बन्दर राजी हो गया।

बन्दर तुरन्त ही पेड़ पर चढ़ गया और उस पर से पके पके फल तोड़ने लगा। नीचे खड़ा केंकड़ा ऊपर की तरफ देखता रहा कि कब बन्दर फल तोड़ कर नीचे फेंकेगा और कब वह उन मीठे फलों को चखेगा।

पर बन्दर बहुत ही चालाक था उसने बहुत सारे फल तोड़ कर अपने कोट की जेब में भर लिये और जो फल बहुत रसीले थे उनको उसने अपने मुँह में ठूँस लिये।

कुछ कच्चे ओर हरे फल उसने तोड़ कर केंकड़े की तरफ फेंक दिये। और वे फल भी उसने इतने ज़ोर से फेंके कि केंकड़े बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

केंकड़े को यह सब देख कर बहुत ही बुरा लगा कि बन्दर ने उसको इस तरह धोखा दिया। उसने अपने आप तो फल खा लिये और उसको कच्चे कच्चे फल तोड़ कर फेंक दिये और वे भी इतने ज़ोर से फेंके कि उस बेचारे का तो ऊपर का खोल ही टूट गया।

वह पहले तो बेचारा लाचार सा देखता रहा फिर उसके दिमाग में एक बात आयी।

वह बन्दर से बोला — "तुम समझते हो कि तुम बहुत होशियार और चालाक हो पर मुझे लगता है कि तुम पेड़ से सिर नीचा करके नहीं उतर सकते।"

बन्दर ने पहले कभी किसी शर्त को मना नहीं किया था और न ही वह अब यह सब शुरू करना चाहता था सो वह घमंड से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम आज केवल भूखे ही नहीं रहोगे बल्कि अपनी शर्त भी हार जाओगे।"

कह कर बन्दर ने सिर नीचे कर के पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। केंकड़ा तो यह चाहता ही था कि बन्दर इस तरह से पेड़ पर से नीचे उतरे।

क्योंकि जैसे ही बन्दर ने उलटे उतरना शुरू किया तो उसकी कोट की जेबों में से सारे फल नीचे गिर पड़े और जमीन पर बिखर गये। केंकड़े ने सारे फल समेट लिये और अपने घर में घुस गया।

अबकी बार बन्दर की बारी थी। उसने जब यह देखा कि केंकड़े जैसे बेवकूफ जानवर ने उसे बेवकूफ बना दिया तो उसे बहुत गुस्सा आया।

वह उस रेत के ढेर के पास पहुँचा जहाँ केंकड़ा रहता था और उस केंकड़े के घर के सामने इस तरह आग जला दी कि उस आग का सारा धुँआ केंकड़े के घर के अन्दर जाने लगा।

आखिर केंकड़ा खाँसता हुआ अपने घर में से बाहर निकला पर अभी भी बन्दर सन्तुष्ट नहीं था। उसने केंकड़े को घूँसे मारे, लात मारी और उसको अधमरा सा छोड़ कर वहाँ से चला गया।

वह केंकड़ा अपनी घायल और अधमरी हालत में बहुत देर तक वहीं पड़ा रहा। कमजोरी की वजह से वह बेचारा हिल डुल भी नहीं सका और न ही किसी को पुकार सका।

थोड़ी ही देर में उसने किसी के पैरों की आवाज सुनी। उसने देखा कि तीन यात्री चले आ रहे थे – एक अंडा, एक मधुमक्खी और एक चावल कूटने वाली ओखली[86]।

[86] Translated for the word “Mortar”. See its picture above.

वे उस रेत के ढेर के पास से गुजर रहे थे कि उन्होंने केंकड़े को बहुत बुरी हालत में पड़े देखा। उसको देख कर वे सब सकते में आ गये।

उन्होंने दया कर के उसको उठा लिया और उसको उस रेत के ढेर के अन्दर उसके घर में ले गये। वहॉ उन्होंने उसके घावों पर मरहम लगाया और उसको उसके बिस्तर पर लिटा दिया।

बाद में केंकड़े ने उनको सारा हाल बताया। उसका हाल सुन कर तीनों यात्री बहुत गुस्सा हुए। यह सब सुन कर उन सबने मिल कर यह सोचना शुरू किया कि उस चालाक बन्दर से बदला कैसे लिया जाये।

केंकड़ा अभी ठीक नहीं था सो वह तो आराम कर रहा था तब बदला लेने तक तीनों यात्रियों ने कई प्याले हरी चाय पी। चाय पीते पीते उन्होंने बन्दर से बदला लेने की एक योजना सोच ली।

अगले दिन उन्होंने खूब अच्छी तरह आराम किया और फिर उस घायल केंकड़े को उठा कर वे उसे उस किले में ले गये जहॉ वह बन्दर रहता था।

वहॉ जा कर मधुमक्खी खिड़की के ऊपर तक उड़ी और लौट कर आ कर उसने सबको बताया कि उनका दुश्मन घर पर नहीं था। यह उनकी योजना के अनुसार बिल्कुल ठीक था।

वे सब किले के अन्दर घुस गये और छिप कर अपने दुश्मन के आने का इन्तजार करने लगे।

अंडे ने भट्टी की राख में अपना घर बना लिया था और अपने आपको कालिख से पूरी तरह से ढक लिया था जिससे वह बिल्कुल काला हो गया था और किसी को पहचान में नहीं आ सकता था।

मधुमक्खी नहाने वाले कमरे में चली गयी और वहॉ एक अलमारी में छिप कर बन्दर का इन्तजार करने लगी। चावल कूटने वाली ओखली किले के बड़े से लकड़ी के दरवाजे के पीछे छिप गयी। और केंकड़ा बन्दर का स्वागत करने के लिये आग के पास बैठ गया।

जब अॅधेरा हो आया तो बन्दर घर वापस लौटा। उसने केटली में पानी भरा और चाय बनाने के लिये भट्टी में आग जलायी।

वह वहीं पास में बैठ गया और केंकड़े से बोला — "ओ बेवकूफ केंकड़े, तुम सचमुच ही बेवकूफ लगते हो। क्या तुम कोई दूसरी शर्त लगाने यहॉ आये हो? क्या तुम मेरी जीत इतनी जल्दी भूल गये?"

इसी समय आग में बैठा हुआ अंडा फूट गया और उसका सारा पीला हिस्सा बन्दर के मुॅह पर फैल गया। वह उसकी ऑखों में भी चला गया इससे वह करीब करीब अन्धा सा हो गया।

तुरन्त भाग कर वह नहाने वाले कमरे में अपना मुँह धोने गया तो अलमारी में छिपी मधुमक्खी ने बाहर निकल कर उसकी नाक पर कई बार काट लिया।

मधुमक्खी के काटने से बन्दर को बहुत दर्द हुआ और इस सबसे वह बहुत परेशान हुआ। वह समझ गया कि वह दुश्मनों से घिर गया है सो वह घर से बाहर निकल भागने के लिये किले के बाहर वाले दरवाजे की तरफ भागा। मधुमक्खी उसको फिर से काटने के लिये उसके पीछे भागी।

जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा चावल कूटने वाली ओखली दरवाजे के पीछे से निकल आयी और उसके पीछे दौड़ती हुई और उसको पीटती हुई बाहर तक खदेड़ आयी।

बन्दर उसको देख कर डर के मारे वहाँ से दूर भाग गया।

वहाँ ऐसा कोई और नहीं था जो बन्दर की सहायता करता और अगर होता भी तो भी कोई उसकी सहायता करता नहीं क्योंकि सब जानते कि वह कितना नीच और चालाक था। इस तरह वह बन्दर कई सालों तक अपने घर के बाहर ही घूमता रहा।

केंकड़े ने अपने साथियों के साथ खूब खुशियाँ मनायीं और उसके बाद वे सब बहुत अच्छे दोस्त बन गये और सब बन्दर वाले किले में एक साथ ही रहने लगे। कुछ समय में केंकड़े के सब घाव भर गये और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

पास की जगह में एक अमीर केंकड़ा रहता था। जब उस अमीर केंकड़े ने इस केंकड़े की बहादुरी की कहानी सुनी तो उसने अपनी बेटी की शादी उस केंकड़े से कर दी। केंकड़े की शादी वाले दिन बहुत सारे मीठे मीठे आलूबुखारे मेहमानों को खिलाये गये।

कुछ समय बाद उनके घर एक छोटा केंकड़ा पैदा हुआ जो चावल कूटने वाली ओखली के साथ खूब खेलता था। इस तरह वे सब वहॉ बहुत दिनों तक बहुत आनन्द से रहे।

17 एक शानदार राजकुमारी[87]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है और यह अनार की एक लोक कथा है।

बहुत समय के बाद आज यह कहानी फिर से कही जा रही है कि एक राजा था जिसकी एक बेटी थी जो शादी के लायक थी। वह लड़की बहुत सुन्दर थी।

एक दिन राजा ने उसको बुलाया और उससे कहा — "बेटी अब तुम्हारी उम्र शादी के लायक हो गयी है इसलिये अब तुमको शादी कर लेनी चाहिये।

मैं अपने सभी साथी राजाओं और दोस्तों को यह खबर भिजवा देता हूँ कि फलाँ दिन एक बड़ा जश्न मनाया जायेगा और वे सब उसमें जरूर आयें। जब वे सब यहाँ आ जायेंगे तो तुमको उनमें से अपनी पसन्द का दुलहा चुनने का मौका मिल जायेगा।"

बेटी ने हाँ कर दी और राजा ने यह सन्देश सबको भिजवा दिया। तय किया हुआ दिन भी आ पहुँचा। सारे राजा उस दिन वहाँ आ पहुँचे थे। उन सबके परिवार भी वहाँ आये थे।

[87] The Mincing Princess – a folktale from Italy from its Province of Trapani.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

जो भी राजा और राजकुमार वहॉ आये थे राजकुमारी ने उनमें से राजा गारनर[88] के बेटे को पसन्द किया। सब लोगों ने बहुत खुशियॉ मनायीं।

दोपहर हुई तो सब लोग खाना खाने बैठे। खाने में सत्तावन चीज़ें बनी थीं। मीठे में अनार भी परोसे गये। अब अनार हर देश में तो मिलते नहीं और राजा गारनर के देश में तो उनका नाम भी कोई नहीं जानता था सो राजकुमार ने जब अनार उठाया तो उसका एक दाना नीचे गिर पड़ा।

यह सोच कर कि वह दाना बहुत कीमती होगा वह उसको उठाने के लिये नीचे झुका। उधर राजकुमारी राजकुमार पर से अपनी नजर ही नहीं हटा पा रही थी सो उसने यह देख लिया कि राजकुमार नीचे से अनार का एक दाना उठाने की कोशिश कर रहा था।

उसको गुस्सा आ गया और वह गुस्से में भर कर मेज से उठी और अन्दर चली गयी। अपने कमरे में जा कर उसे अन्दर से बन्द कर के बैठ गयी।

उसका पिता उसके पीछे पीछे यह देखने के लिये गया कि उसकी बेटी को क्या हो गया है। वह वहॉ गया तो उसने देखा कि उसकी बेटी तो अपने कमरे में बैठी रो रही है।

---

[88] King Garner

राजा ने अपनी बेटी के रोने की वजह जाननी चाही तो वह बोली — "पिता जी, मैं उस लड़के को बहुत पसन्द करती हूँ पर मुझे अब लगा कि वह तो बहुत ही छोटे दिमाग का आदमी है और अब मैं उसके साथ कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती।"

राजा खाने की जगह वापस आया। सब राजाओं को धन्यवाद दिया और उनको गुड बाई कह कर विदा कर दिया। पर यह बात राजा गारनर के बेटे के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो गयी सो उसने राजकुमारी को सबक सिखाने की कुछ और तरकीब सोची।

बाकी सारे राजा तो वहाँ से अपने अपने घर चले गये पर राजा गारनर का बेटा महल से जाने के बाद अपने घर नहीं गया। असल में वह भी राजकुमारी को बहुत पसन्द करने लगा था। वह उसको किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता था सो उसने एक तरकीब सोची।

बाहर निकल कर उसने एक किसान का वेश रखा और काम की तलाश में महल के आस पास चक्कर काटने लगा। राजा को एक माली की जरूरत थी और क्योंकि वह राजकुमार बागीचों के बारे में कुछ जानता था सो उसने राजा से प्रार्थना की वह उसको अपने बागीचे में माली का काम दे दे।

राजा को वह लड़का पसन्द आ गया सो उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करने के बाद उसकी तनख्वाह निश्चित कर दी गयी और उसे नौकरी पर रख लिया गया।

बागीचे में ही उसको एक छोटा सा मकान दे दिया गया और वह अपने एक बक्से के साथ उस मकान में चला गया।

राजकुमार के बक्से में उसकी वह भेटें थीं जो वह अपनी होने वाली पत्नी के लिये ले कर आया था पर अब जब राजकुमारी ने उसको स्वीकार ही नहीं किया तो वे सब भेंटें अभी उसी के पास थीं।

जब वह अपना बक्सा ले कर उस मकान में आया तो उसने यही दिखाया कि उस बक्से में उसके पहनने के कपड़े थे। उस मकान में पहुँच कर उसने अपने मकान की खिड़की के सामने एक शाल टॉग लिया जो सुनहरे तारों की कढ़ाई से कढ़ा हुआ था।

राजकुमारी के महल की खिड़की बागीचे की तरफ खुलती थी और उसी बागीचे में वह माली रहता था। सो एक दिन जब उसने अपनी खिड़की से बागीचे में झॉका तो उसको माली के घर की खिड़की पर टॅगा वह सोने के तारों से कढ़ाई किया गया शाल दिखायी दे गया।

उसने माली को बुलाया और उससे पूछा — "यह जो शाल तुम्हारी खिड़की पर फैला हुआ है किसका है?"

माली बोला — "राजकुमारी जी, यह शाल मेरा है।"

राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "क्या तुम इस शाल को मुझे बेचोगे? मैं तुम्हारा यह शाल खरीदना चाहती हूँ।"

माली बोला — "ओह नहीं, कभी नहीं। यह शाल बेचने के लिये नहीं है।" कह कर वह वहॉ से चला गया।

यह सुन कर राजकुमारी ने अपनी दासियों से कहा कि वे उस माली को वह शाल उसे बेचने पर मनायें।

दासियों ने माली को उस शाल के बदले में कितने भी पैसे देने के लिये कहा। यहॉ तक कि उसको अगर पैसा नहीं चाहिये तो उस के बराबर की कीमत की कोई और चीज़ लेने के लिये भी कहा पर किसी का कोई नतीजा नहीं निकला क्योंकि वह तो उस शाल को किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार ही नहीं था।

जब उसको बहुत कहा गया तो वह बोला — "मैं यह शाल बेचता तो नहीं, हॉ उनको यह शाल मैं भेंट कर सकता हूँ अगर वह मुझको अपने महल के पहले कमरे में सोने दें तो।"

यह सुन कर वे दासियॉ बहुत ज़ोर से हॅस पड़ीं और यह बात राजकुमारी से कहने के लिये दौड़ गयीं। राजकुमारी से बात करते समय वे कह रही थीं कि वह अगर इतना ही बेवकूफ है जो आपके महल के पहले कमरे में सोना चाहता है तो उसे सोने दीजिये। कोई अक्लमन्द आदमी ऐसा क्यों करेगा। वह जरूर ही कोई बेवकूफ है।

और फिर इसके लिये तो हमको कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। इसमें हमारा कुछ नुकसान भी नहीं होगा और आपको शाल भी मिल जायेगा। सो राजकुमारी राजी हो गयी।

जब सारा घर सो रहा था तो राजकुमारी की दासियॉ उस माली को राजकुमारी के महल के अन्दर ले गयीं और उसके महल के पहले कमरे में उसको सोने के लिये छोड़ गयीं।

अगले दिन उन्होंने माली को सुबह सवेरे जल्दी उठाया और उसको महल के बाहर छोड़ आयीं। इसके बदले में माली ने अपना शाल राजकुमारी को दे दिया।

एक हफ्ते बाद उस माली ने एक और शाल उस खिड़की पर टॉग दिया। यह शाल उस पहले वाले शाल से भी ज़्यादा खूबसूरत था। जब राजकुमारी ने यह शाल देखा तो वह अपनी दासियों से बोली — "मुझे तो यह शाल चाहिये।"

जब माली से इस शाल को राजकुमारी को बेचने के बारे में बात की गयी तो माली बोला कि में इस शाल को बेचता तो नहीं पर अगर राजकुमारी जी मुझे अपने महल के दूसरे कमरे में एक रात सोने की इजाज़त दें तो मैं उनको यह शाल भेंट कर सकता हूॅ।"

राजकुमारी की दासियों ने राजकुमारी से कहा — "जब आपने उसको अपने महल के पहले कमरे में सोने दिया तो अब आप उसको अपने महल के दूसरे कमरे में भी सोने दे सकती हैं।"

सो अगले दिन माली राजकुमारी के महल के दूसरे कमरे में सो गया और इसके बदले में उसने उसको अपना वह दूसरा शाल दे दिया।

फिर एक हफ्ता गुजर गया। तीसरे हफ्ते माली ने सोने के तारों से कढ़ी हुई और हीरे मोती से सजी हुई एक बहुत ही खूबसूरत पोशाक अपनी खिड़की पर टॉग दी।

जब राजकुमारी ने अपनी खिड़की से उस पोशाक को माली के घर की खिड़की पर टॅगा देखा तो उससे रहा नहीं गया। माली से उसकी कीमत पूछने पर उसने कहा कि यह पोशाक तो बिल्कुल भी बिकाऊ नहीं थी।

पर काफी कुछ कहने सुनने के बाद माली ने कहा कि वह उसको भी बेचेगा तो कभी नहीं पर वह उसको राजकुमारी को भेंट दे सकता है अगर राजकुमारी उसको अपने महल के तीसरे कमरे में सोने की इजाज़त दे तो। तीसरा कमरा यानी राजकुमारी के सोने के कमरे के बिल्कुल बराबर वाला कमरा।

राजकुमारी ने सोचा "इसमें इतना डरना किस बात का? यह गरीब माली तो लगता है कि बस पागल है। इससे मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचने वाला।" सो पिछली रातों की तरह से इस रात भी उसको राजकुमारी के महल के तीसरे कमरे में नीचे फर्श पर सुला दिया गया।

जब वह वहॉ लेट गया तो उसने सोने का बहाना किया और उस समय का इन्तजार करने लगा जब महल में सब कोई सो जाने वाला था।

जब उसने पक्का कर लिया कि महल में सब लोग सो गये तो उसने ठंड से कॉपना शुरू कर दिया। ठंड की वजह से उसके दॉत भी ज़ोर ज़ोर से बजने लगे।

इस कॉपने में वह राजकुमारी के सोने के कमरे से जा टकराया। उसके कॉपते हाथ पैर जब उसके दरवाजे को छूते थे तो ढोल के से बजने की आवाज आती थी।

इस आवाज से राजकुमारी जाग गयी और फिर दोबारा सो भी नहीं पायी। उसने माली को चुप रहने को भी कहा पर वह कुछ कराहता हुआ सा बोला — "मुझे बहुत ठंड लग रही है राजकुमारी जी।" और यह कह कर वह और ज़ोर ज़ोर से कॉपने लगा।

जब वह माली को किसी तरह भी शान्त नहीं कर सकी तो उसको डर लगा कि महल में सोने वाले दूसरे लोग उसकी आवाज सुन लेंगे और माली के साथ किये गये सौदे के बारे में जान जायेंगे।

सो वह उठी और उसने यह सोचते हुए अपना दरवाजा खोला कि यह तो बहुत ही सीधा लड़का है यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकता। अब वह सीधे दिमाग वाला था या नहीं, यह तो पता नहीं, पर उस रात के बाद से राजकुमारी को बच्चे की आशा हो गयी।

राजकुमारी के गुस्से और शर्म की कोई हद नहीं थी। इस बात की चिन्ता कर के कि अभी या देर से लोग उसके बच्चे के बारे में जान तो जायेंगे ही सो उसने माली से कहा — "अब तुम्हारे लिये

यहाँ करने के लिये कुछ नहीं बचा सिवाय इसके कि तुम यहाँ से मेरे साथ भाग जाओ।"

"तुम्हारे साथ? इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

"ठीक है तो फिर यहीं रहो जब तक सबको पता न चल जाये।"

पर फिर भी किसी तरह उसने माली को अपने साथ भाग जाने पर तैयार कर लिया। उसने अपने कुछ सामान की एक गठरी बाँधी, थोड़ा सा पैसा साथ में लिया और वे दोनों पैदल ही एक रात वहाँ से भाग निकले।

रास्ते में उनको गाय चराने वाले मिले, भेड़ चराने वाले मिले, वे खेतों से गुजरे, वे मैदानों से निकले। ये सब देख कर राजकुमारी ने पूछा — "ये सब जानवर किसके हैं?"

माली बोला — "ये सब जानवर राजा गारनर के हैं।"

"ओह बेचारी मैं।"

माली ने पूछा — "क्यों? तुम बेचारी क्यों? क्या बात है?"

राजकुमारी बोली — "बेचारी मैं इसलिये कि मैंने उसके बेटे से शादी करने से मना कर दिया।"

माली बोला — "यह तुमने बहुत बुरा किया।"

राजकुमारी ने फिर पूछा — "और यह जमीन किसकी है?"

"यह भी राजा गारनर की है।"

राजकुमारी फिर बोली — "ओह बेचारी मैं।"

अब तक चलते चलते राजकुमारी बहुत थक गयी थी। चलते चलते वे एक नौजवान के घर पहुँचे। उस नौजवान ने उनको बताया कि वह राजा गारनर के नौकर का बेटा था। यह घर राजा के महल के पास ही था।

उसका सारा घर धुँए से काला हुआ पड़ा था। उसमें एक पुराना पलंग पड़ा था, एक स्टोव रखा था और एक घर को गर्म रखने वाली अंगीठी थी।

उस घर के बराबर में ही एक जानवर रखने का बाड़ा और एक मुर्गीखाना था। वह नौजवान रात को ही अपना मकान माली को दे कर चला गया।

माली ने वहाँ जाते ही राजकुमारी से कहा — "मुझे बहुत भूख लगी है। एक मुर्गा मारो और उसे मेरे लिये पका दो।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया। वह रात उन्होंने वहाँ उस छोटे से मकान में ही गुजारी।

सुबह को माली वहाँ से यह कह कर चला गया कि वह शाम होने से पहले घर वापस आ जायेगा। अब राजकुमारी उस मकान में अकेली थी कि अचानक उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी। उसने दरवाजा खोला तो वहाँ राजा गारनर का बेटा अपने शाही कपड़ों में सजा खड़ा था।

उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ तुम क्या कर रही हो?"

बड़ी मुश्किल से राजकुमारी की आवाज निकली — "मैं आपके नौकर के बेटे के दोस्त की पत्नी हूँ।"

राजकुमार बोला — "हो सकता है पर तुम मुझे कोई ईमानदार स्त्री नहीं लगती। अगर तुम चोर हो तो? क्योंकि अक्सर ही यहाँ कोई न कोई मेरी मुर्गियाँ चुराने आता रहता है।"

फिर राजकुमार ने मुर्गियों को आवाज दी और उनको गिन कर बोला — "अरे इसमें तो एक मुर्गी कम है। कल तक तो यहाँ सब थीं।"

कह कर उसने वहाँ रखा सारा सामान छानना शुरू कर दिया। जब वह स्टोव के पास आया तो उसको मुर्गी के कुछ पंख पड़े मिल गये। ये उस मुर्गी के पंख थे जो कल रात राजकुमारी ने माली के लिये पकायी थी।

उन पंखों को देख कर राजकुमार ने कहा — "इसका मतलब यह है कि तुम चोर हो। तुमने मेरी एक मुर्गी चुरा कर खा ली है। भगवान को धन्यवाद दो कि मैंने तुमको पकड़ा है, अगर किसी और ने पकड़ा होता तो उसने तुमको कानून के हवाले कर दिया होता। पर चलो, मैं तुमको राजा के दरबार में नहीं ले जाता। अब आगे से कुछ मत चुराना।"

यह सब सुन कर राजकुमारी की ऑखों से तो झर झर ऑसू बह निकले। तभी रानी वहॉ आ गयी और उसने देखा कि वह बेचारी लड़की तो रोये जा रही है।

वह उसको धीरज बॅधाते हुए बोली — "तुम चिन्ता न करो बेटी। यह मेरा बेटा भी बस बड़ा ही अजीब आदमी है। चलो जब तक तुम यहॉ हो तुम मेरे पास काम कर लेना।

मेरे पोता होने वाला है तो मुझे उसके लिये कुछ कपड़े तैयार करवाने हैं। तुम उनकी सिलाई में मेरी सहायता कर देना।" यह कह कर रानी उसको बच्चे के लिये कुछ कपड़े सिलने के लिये दे कर चली गयी।

शाम को जब माली घर आया तो राजकुमारी बहुत रोयी और उसको दिन में हुई राजकुमार और रानी की घटना बतायी और बोली कि इस सबकी जिम्मेदार केवल वह खुद है।

माली ने किसी तरह उसे शान्त किया और उसे वहीं रहने के लिये मना लिया।

राजकुमारी ने पूछा — "लेकिन हम यहॉ रहेंगे कैसे। अभी हमारे बच्चा होगा तो हमारे पास तो इतना भी नहीं है कि हम उसको कुछ पहना सकें।"

माली बोला — "जब रानी यहॉ कल आयें और तुमको सिलाई का और काम दें तो तुम उनके कपड़ों में से एक पोशाक निकाल कर छिपा लेना।"

सो अगले दिन जब रानी उसको कपड़े दे कर वापस जा रही थी तो राजकुमारी ने उतनी देर इन्तजार किया जब तक रानी ने अपना मुँह पूरी तरह से नहीं फेर लिया। फिर जैसे ही रानी का मुँह पूरी तरह से फिरा उसने उन पोशाकों में से एक पोशाक चुरा कर रख ली।

कुछ मिनट बाद ही वहाँ राजकुमार आ गया और अपनी माँ से बोला — "माँ, आपके साथ यहाँ कौन काम कर रहा है?"

और फिर राजकुमारी की तरफ देख कर बोला — "अरे क्या यह चोर फिर यहाँ? आपको मालूम है क्या कि यह कुछ भी चुराने की हिम्मत कर सकती है?"

यह कह कर उसने राजकुमारी की छिपायी हुई बच्चे की पोशाक बाहर निकाल कर उसको दिखा दी। फिर बोला — "यह तो फर्शों के अन्दर जाने तक की भी ताकत रखती है माँ। आप कहाँ इसके चक्कर में पड़ीं।"

यह सुन कर राजकुमारी की आँखों से फिर से आँसू बहने लगे पर रानी उसकी तरफदारी करती हुई बोली — "ये मामले स्त्रियों के हैं तुम यहाँ उनके बीच में क्या कर रहे हो?"

राजकुमारी को रोता देख कर उसने उसको फिर तसल्ली दी और उसने राजकुमारी को अगले दिन महल में आने के लिये कहा ताकि वह अगले दिन वहाँ आ कर उसके लिये मोती की कुछ मालाऐं बना दे।

राजकुमारी अपने उस छोटे से मकान में वापस लौट आयी और रात को अपने पति को उस दिन की घटना के बारे में बताया।

माली बोला — "तुम उसके बारे में बिल्कुल भी न सोचो। यह राजा तो बहुत पुराना कंजूस और बहुत ही नीच आदमी है पर हॉ यह ध्यान रखना कि तुम कल एक मोती की माला वहॉ से अपने बच्चे के लिये जरूर लेती आना।"

अगले दिन राजकुमारी रानी के पास उसकी मोती की माला बनवाने के लिये फिर महल गयी। जब रानी नहीं देख रही थी तो राजकुमारी ने एक मोती की माला अपनी जेब में रख ली।

कुछ ही देर में राजकुमार भी घर आ गया तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ आपने इसे फिर अपने पास काम करने के लिये रख लिया। यह फिर कुछ चुरा कर ले जायेगी। आप मेरी बात मानती क्यों नहीं हैं।"

फिर इधर उधर देख कर बोला — "क्या आपने इसको मोती दिये मॉ? मैं शर्त लगा सकता हूॅ कि कम से कम एक मोती की माला तो इसने जरूर ही चुरा ही ली होगी।"

और यह कह कर उसने राजकुमारी की जेब में हाथ डाल दिया और उसकी जेब से एक मोती की माला निकल आयी। यह देख कर तो राजकुमारी बेहोश हो गयी। रानी ने उसको नमक सुॅघाया और उसको होश में ला कर उसको फिर से धीरज बॅधाया।

अगले दिन जब वह रानी के यहाँ फिर काम कर रही थी तो उसको बच्चा होने वाला हो गया तो रानी ने उसको ले जा कर राजकुमार के पलंग पर लिटा दिया। कुछ ही देर में उसको लड़का हो गया।

तभी राजकुमार आ गया और उसको अपने पलंग पर लेटा देख कर चीखा — "माँ यह क्या? यह चोर मेरे बिस्तर में?"

अब रानी मुस्कुरा कर बोली — "बेटे, बस करो। अब तुम्हारी हँसी बहुत हो गयी।"

फिर उसने राजकुमारी से कहा — "बेटी, यह मेरा बेटा ही तुम्हारा पति है जिससे तुमने शादी करने से इनकार कर दिया था। वही तुम्हारे यहाँ माली बन कर तुम्हारा दिल जीत कर तुमको यहाँ ले आया है।"

अब सारा भेद खुल गया था। राजकुमारी को जब सब कुछ पता चला तो वह अपने किये पर बहुत शर्मिन्दा हुई।

राजकुमारी के माता पिता को बुलवा लिया गया, साथ में पड़ोसी राजाओं को भी। पोते के जन्म की खुशी में तीन दिन तक दावत चलती रही और सारे राज्य में खूब खुशियाँ मनायीं गयीं।

18 तीन अनारों से प्यार[89]

अनार फल की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा का बेटा शाम को मेज पर बैठा खाना खा रहा था कि रिकोटा चीज़[90] काटते समय वह अपनी उंगली काट बैठा।

उस कटी हुई जगह से एक बूँद खून टपक कर चीज़ के ऊपर गिर गया। यह देख कर उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मुझे दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल पत्नी चाहिये।"

माँ बोली — "क्यों मेरे बेटे। जो कोई लड़की इतनी गोरी होगी वह इतनी लाल नहीं होगी और जो इतनी लाल होगी तो वह इतनी गोरी नहीं होगी। पर फिर भी तुम दुनियाँ में घूमो और ऐसी लड़की की तलाश करो शायद तुमको ऐसी कोई लड़की मिल जाये।"

सो राजा का बेटा ऐसी दुलहिन ढूँढने चल दिया। कुछ दूर जाने के बाद उसको एक स्त्री मिली। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ नौजवान, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं अपना भेद एक स्त्री पर प्रगट नहीं करता।" और यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

---

[89] The Love of the Three Pomegranates – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[90] Ricotta cheese is a kind of processed Indian Paneer used in western world.

आगे जा कर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने भी राजकुमार से यही पूछा — "बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "हाँ, मैं आपको तो यह बता सकता हूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। जनाब आप सुनें, मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में हूँ जो दूध जैसी सफेद भी हो और खून जैसी लाल भी हो।"

बूढ़ा बोला — "बेटे, जो खून जैसी लाल होगी वह दूध जैसी सफेद नहीं होगी और जो दूध जैसी सफेद होगी तो वह खून जैसी लाल नहीं होगी।

खैर, तुम ऐसा करो कि तुम ये तीन अनार ले लो। इनको तोड़ना और देखना कि इनमें से क्या निकलता है। पर ध्यान रहे कि इनको किसी फव्वारे के या पानी के पास ही तोड़ना।"

राजकुमार ने उस बूढ़े से वे तीनों अनार ले लिये और आगे चल दिया। आगे चल कर एक फव्वारे के पास उसने उनमें से एक अनार तोड़ा तो उसमें एक लड़की निकली जो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थी।

वह लड़की निकलते ही चिल्लायी — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

राजकुमार ने अपने दोनों हाथों को पानी में डुबो कर उनमें पानी भरा और उसको दिया पर वह सुन्दर लड़की यह कहते हुए कि उसको पानी देने में देर हो गयी वहीं मर गयी।

फिर उसने दूसरा अनार तोड़ा तो उसमें से एक और सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। उसने भी निकलते ही कहा — "ओ नौजवान, मुझे पानी दो वरना मैं मर जाऊँगी।"

वह उसके लिये भी पानी ले कर आया पर फिर भी पानी लाने में उसको देर हो गयी और वह लड़की भी वहीं मर गयी। राजकुमार को बड़ा दुख हुआ सो अबकी बार उसने तीसरा अनार तोड़ने से पहले ही फव्वारे से पानी ला कर रख लिया।

अब उसने तीसरा अनार तोड़ा तो उसमें से भी एक सुन्दर लड़की निकली। यह लड़की भी दूध की तरह सफेद और खून की तरह लाल थी। यह पिछली दोनों लड़कियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

इस बार राजकुमार ने तुरन्त ही उसके मुँह पर पानी फेंका और वह ज़िन्दा रही। उसने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था सो राजकुमार ने उसको अपना शाल[91] ओढ़ा दिया।

[91] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

फिर राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ तब तक मैं तुम्हारे पहनने के लिये कुछ कपड़े और तुमको ले जाने के लिये एक गाड़ी ले कर आता हूँ।"

यह कह कर वह राजकुमार तो चला गया और वह लड़की उस फव्वारे के पास लगे हुए एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

एक मुस्लिम खानाबदोश[92] लड़की उस फव्वारे पर रोज पानी भरने आया करती थी। वह उस दिन भी वहाँ पानी भरने आयी। जैसे ही उसने अपना मिट्टी का घड़ा फव्वारे के पानी में पानी भरने के लिये डुबोया तो उस पानी में उसको उस लड़की के चेहरे की परछाईं दिखायी दी।

उसको लगा कि वह परछाईं उसके अपने चेहरे की है सो वह एक लम्बी सी साँस भर कर बोली —

वह मैं जो खुद बहुत सुन्दर हूँ पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

और यह कह कर उसने वह बर्तन तुरन्त ही पानी में से निकाल लिया और जमीन पर पटक दिया। बर्तन मिट्टी का था सो जमीन पर गिरते ही टूट गया। वह बिना पानी और बिना बर्तन लिये ही घर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी मालकिन ने उसको खाली हाथ आते देख कर गुस्से से डाँटा — "ओ बदसूरत खानाबदोश, तेरी

[92] Translated for the word "Saracen" – this word was used in Europe for Muslim nomads in those times.

हिम्मत कैसे हुई बिना पानी लिये घर वापस आने की? और तू तो बर्तन भी नहीं लायी? कहाँ है बर्तन?"

सो उस खानाबदोश लड़की ने एक और मिट्टी का बर्तन उठाया और फिर फव्वारे पर लौट गयी। जब वह अपने बर्तन में फिर पानी भरने लगी तो फिर उसको वही परछाईं दिखायी दी। उसको फिर लगा कि वह अपने चेहरे की परछाईं पानी में देख रही है सो वह फिर बोली —

मैं इतनी सुन्दर और पानी का बर्तन ले कर घर जाऊँ?

उसने फिर अपना मिट्टी का बर्तन जमीन पर पटक दिया। वह बर्तन भी मिट्टी का था सो वह भी जमीन पर गिरते ही टूट गया और वह फिर बिना पानी और बिना बर्तन के घर चली गयी।

उसकी मालकिन ने फिर उसको इस तरह खाली हाथ आने और दो बर्तन तोड़ने के लिये बहुत डाँटा तो उसने फिर एक और बर्तन उठाया और फिर पानी भरने के लिये फव्वारे पर चली गयी।

फिर उसने पानी लेने के लिये बर्तन फव्वारे के पानी में डुबोया तो फिर उस लड़की की परछाईं पानी में देख कर फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया।

अब तक वह लड़की पेड़ पर चुपचाप बैठी थी पर अबकी बार जब उसने वह बर्तन तोड़ा तो वह हँस पड़ी। उसकी हँसी की

आवाज सुन कर उस खानाबदोश लड़की ने ऊपर की तरफ देखा तो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी थी।

वह चिल्लायी — "ओह तो वह तुम हो। तुमने ही मेरे तीन बर्तन तुड़वाये और यह चौथा भी तुड़वाने वाली थी। पर तुम वाकई बहुत सुन्दर हो। मुझे तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लग रहे हैं। आओ तुम नीचे आओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ।"

वह लड़की पेड़ से नीचे उतरना नहीं चाहती थी परन्तु बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उससे पेड़ से नीचे उतरने की बहुत जिद की — "तुम मेरे पास आओ न, मैं तुम्हारे बाल बना दूँ। इससे तुम और भी ज़्यादा सुन्दर लगोगी।"

कहते हुए उस बदसूरत खानाबदोश लड़की ने उसको उसका हाथ पकड़ कर पेड़ से नीचे उतार लिया। उसने उसके बाल खोले तो उसको उसके बालों में लगी एक पिन दिखायी दे गयी। उसने वह पिन उस बेचारी लड़की के कान में ठूँस दी।

इससे उस लड़की के कान में से एक बूँद खून निकल कर नीचे गिर पड़ा और वह मर गयी। पर जब वह खून की बूँद जमीन पर पड़ी तो वह एक कबूतरी[93] बन गयी और उड़ गयी।

इस तरह उस लड़की को मार कर और उसके कपड़े पहन कर वह बदसूरत खानाबदोश लड़की खुद पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी।

[93] Translated for the word "Wood Pigeon". See its picture above.

थोड़ी देर में राजकुमार गाड़ी और कपड़े ले कर वापस आ गया और बदसूरत खानाबदोश की तरफ आश्चर्य से देख कर बोला — "अरे तुम तो दूध जैसी सफेद और खून जैसी लाल थीं। तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?"

बदसूरत खानाबदोश लड़की बोली — "जब सूरज बाहर निकला तो धूप की वजह से मैं सॉवली पड़ गयी।"

"पर तुम्हारी तो आवाज भी बदली हुई है, वह कैसे बदल गयी?

इसके जवाब में वह खानाबदोश लड़की बोली — "हवा ज़ोर से चली और उसी ने मेरी आवाज ऐसी कर दी।"

"पर तुम तो बहुत सुन्दर थीं और अब तो तुम बहुत ही बदसूरत लग रही हो।"

इसके जवाब में वह बोली — "तभी ठंडी हवा चली जिसने मेरे चेहरे को जमा दिया।"

इन जवाबों से राजकुमार को विश्वास हो गया कि वह वही लड़की थी जिसको वह छोड़ कर गया था और वह उसको गाड़ी में बिठा कर अपने घर ले गया। महल में आ कर राजकुमार ने उससे शादी कर ली। अब वह राजकुमार की पत्नी बन गयी।

उधर वह कबूतरी रोज सुबह राजकुमार के शाही रसोईघर की खिड़की पर आ कर बैठ जाती और रसोइये से कहती — "ओ

शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे[94] दूँगी।"

रसोइया उसको एक कटोरा भर के सूप देता और वह कबूतरी सूप पी कर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

पर अगली सुबह वह फिर आ जाती और फिर रसोइये से पूछती — "ओ शापित रसोईघर के रसोइये, तू मुझे बता कि राजकुमार इस समय उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के साथ क्या कर रहा है?"

शाही रसोइया फिर वही जवाब देता — "वह खाता है, पीता है और सो जाता है, बस।"

कबूतरी फिर कहती — "तू मुझे थोड़ा सा सूप दे दे तो मैं तुझे सोने के आलूबुखारे दूँगी।"

[94] Translated for the word "Plums".

रसोइया फिर उसको एक कटोरा भर के सूप देता, वह उस सूप को पीती और फिर अपने को हिला डुला कर अपने कुछ सोने के पंख गिरा देती और उड़ जाती।

कुछ समय बाद रसोइये ने सोचा कि वह राजा के पास जा कर यह सब राजा को बताये। सो वह राजा के पास गया और उसने जा कर उसको सारी कहानी सुनायी।

राजा ने उसकी कहानी ध्यान से सुनी और बोला — "कल जब वह कबूतरी तुम्हारे पास आये तो उसको पकड़ लेना और मेरे पास ले आना। मैं उसको अपने पास रखूँगा।"

बदसूरत खानाबदोश लड़की उन दोनों की बात सुन रही थी। वह यह जान गयी कि उसने उस कबूतरी को वहाँ से उड़ जाने देने की गलती कर ली थी। पर अब वह क्या करे?

सो अगले दिन सुबह जब वह कबूतरी खिड़की पर आ कर बैठी तो उस खानाबदोश लड़की ने रसोइये को खूब पीटा और उस कबूतरी के शरीर में लोहे की एक सलाई घुसा कर उसे मार डाला।

इससे कबूतरी तो मर गयी पर उसके खून की एक बूँद खिड़की के बाहर जमीन पर गिर पड़ी। उस बूँद से तुरन्त ही वहाँ अनार का एक पेड़ उग आया।

अनार के इस पेड़ में एक जादू था कि जो भी मर रहा हो अगर वह इस पेड़ का एक अनार खा ले तो वह ज़िन्दा हो जाता था। इस

लिये उस बदसूरत खानाबदोश लड़की के पास उस पेड़ का एक अनार लेने के लिये एक लम्बी लाइन लगी रहती।

आखीर में उस पेड़ के सब अनार खत्म हो गये और उस पेड़ पर केवल एक अनार रह गया। वह अनार उन सब अनारों में सबसे बड़ा था जो उस पेड़ पर पहले लगे थे। सो उस खानाबदोश लड़की ने सबको यह कह दिया कि अब इस पेड़ के सारे अनार खत्म हो गये हैं और अब यह आखिरी अनार मैं अपने लिये रखूँगी।

एक दिन एक बुढ़िया वहाँ आयी और उस खानाबदोश लड़की से बोली — "रानी जी, मेहरबानी कर के यह अनार मुझे दे दीजिये। मेरे पति की हालत बहुत खराब है। अगर यह अनार आप मुझे दे देंगी तो मेरे पति बच जायेंगे।"

वह खानाबदोश लड़की बोली — "अब इस पेड़ पर बस यह एक ही अनार बचा है और इसको अब मैंने सजावट के लिये यहाँ रखा हुआ है।"

पर राजकुमार ने उसको ऐसा करने से मना किया। वह बोला — "उस बेचारी बुढ़िया के पति की हालत बहुत खराब है। तुमको उसको अनार देने से मना नहीं करना चाहिये।"

इस तरह राजकुमार ने उस खानाबदोश लड़की से उस आखिरी अनार को उस बुढ़िया को दिलवा दिया। बुढ़िया खुशी खुशी वह अनार ले कर घर चली गयी।

पर घर जा कर उसने देखा कि उसका पति तो तब तक मर गया था। उसने सोचा "तो अब मैं इस अनार को सजावट के लिये ही रख लेती हूँ" और वह उसने एक खुली आलमारी में रख दिया। उस अनार में वह लड़की रहती थी।

वह बुढ़िया रोज "मास"[95] पढ़ने चर्च जाती थी। जब वह मास पढ़ने के लिये चली जाती तो वह लड़की उस अनार में से निकलती।

वह उस बुढ़िया के लिये आग जलाती, उसका घर साफ करती और उसके लिये खाना बनाती। खाना बना कर उसको उसकी खाने की मेज पर लगाती और यह सब कर के वह फिर अपने अनार में चली जाती।

वह बुढ़िया जब घर वापस आती तो अपना घर ठीक ठाक पा कर और अपने लिये खाना बना देख कर बहुत चकित होती। एक दिन वह चर्च के कनफैशन के कमरे[96] में गयी और अपने कनफैशन सुनने वाले से जा कर उसे सब कुछ बताया।

वह बोला — "तुम ऐसा करो कि कल तुम मास जाने का केवल बहाना बनाओ पर अपने घर में या फिर अपने घर के आस पास ही कहीं छिप जाओ और फिर देखो कि तुम्हारे घर में क्या क्या होता

[95] Mass is a kind of C hristian worship

[96] Confession Box – it is a place in the Church where normally a sinner accepts his or her mistakes and sins and promises not to do it again in front of a priest, but there is curtain between them so they cannot see each other that who is confessing and who is hearing.

है। इस तरीके से तुम जान पाओगी कि तुम्हारे घर में यह सब काम कौन करता है।"

अगले दिन उस कनफैशन सुनने वाले की सलाह मान कर उस बुढ़िया ने मास जाने का केवल बहाना ही किया। वह घर के बाहर तक गयी और दरवाजे के बाहर तक जा कर रुक गयी और एक ऐसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहॉ से वह अपना घर अच्छी तरह से देख सकती थी।

उसके जाने के बाद वह लड़की रोज की तरह अपने अनार में से निकली और उस बुढ़िया के घर का काम करना शुरू कर दिया।

तभी वह बुढ़िया घर के अन्दर आ गयी। बुढ़िया को देख कर वह लड़की अपने अनार के अन्दर घुसने की कोशिश करने लगी पर उस बुढ़िया ने उसे अनार के अन्दर जाने से पहले ही पकड़ लिया।

बुढ़िया ने पूछा — "तुम कहॉ से आयी हो?"

वह लड़की बोली — "भगवान आपको सुखी रखे, मुझे मारना नहीं, मुझे मारना नहीं।"

बुढ़िया प्यार से बोली — "मैं तुमको मारूॅगी नहीं पर मैं यह जानना चाहती हूॅ कि तुम आयी कहॉ से हो?"

लड़की बोली — "मैं इस अनार के अन्दर रहती हूॅ।"
और उसने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर उस बुढ़िया ने उसको अपने जैसी किसान लड़की की पोशाक पहनायी क्योंकि इस लड़की ने अभी भी कपड़े नहीं पहन रखे थे।

अगले रविवार को वह उसको मास के लिये चर्च ले गयी। वहॉ पर राजकुमार भी आता था। उसने उस लड़की को देखा तो उसके मुँह से निकला — "हे भगवान, मुझे तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह वही लड़की है जिससे मैं फव्वारे पर मिला था।"

सो मास खत्म हो जाने के बाद उसने चर्च के बाहर उस बुढ़िया का इन्तजार करने का निश्चय किया। जब वह बुढ़िया चर्च के बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे पूछा — "मुझे सच सच बताइये मॉ जी कि यह लड़की आपके पास कहॉ से आयी?"

"सरकार मुझे मारियेगा नहीं।"

राजकुमार बहुत बेचैनी से बोला — "नहीं नहीं, मैं आपको बिल्कुल नहीं मारूँगा। बस आप मुझे यह बता दें कि यह लड़की आपके पास आयी कहॉ से?"

बुढ़िया फिर भी डरते डरते बोली — "यह लड़की उस अनार में से निकली है जो आपने मुझे दिया था।"

राजकुमार फिर बोला — "तो यह भी अनार में थी?"

फिर वह उस लड़की से बोला — "पर तुम इस अनार में घुसी कैसे?"

इस पर उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी सुना दी। राजकुमार उस लड़की को ले कर महल वापस लौटा और सीधा उस खानाबदोश लड़की के पास गया। उसने उस अनार वाली लड़की से उस खानाबदोश लड़की के सामने एक बार फिर अपनी कहानी सुनाने को कहा।

जब अनार वाली लड़की ने अपनी कहानी खत्म कर दी तो राजकुमार ने खानाबदोश लड़की से कहा — "सुना तुमने? मैं अपने हाथों से तुमको मारना नहीं चाहता इसलिये अच्छा है कि तुम खुद ही मर जाओ।"

खानाबदोश लड़की ने देखा कि अब कोई और रास्ता नहीं रह गया है तो वह बोली "मेरे अन्दर लोहे की एक सलाई घुसा दो और मुझे शहर के चौराहे पर जला दो तो मैं मर जाऊँगी।" ऐसा ही किया गया।

इसके बाद राजकुमार ने उस अनार वाली लड़की से शादी कर ली और दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

19 सॉप[97]

दूसरे फलों में अनार फल की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक किसान था जो घास काटने के लिये रोज बाहर जाया करता था। उसके तीन बेटियॉ थीं। उनमें से उसकी एक बेटी उसके लिये रोज खाना ले कर जाया करती थी। उसकी बाकी की दो बेटियॉ पीछे घर में रह कर घर की देखभाल किया करती थीं।

एक दिन अपने पिता के लिये खाना ले जाने की उसकी सबसे बड़ी बेटी की बारी थी। जब तक वह उसके लिये खाना ले कर जंगल तक पहुॅची तब तक वह बहुत थक गयी थी सो वह घास के मैदान तक पहुॅचने से पहले ही सुस्ताने के लिये एक पत्थर पर बैठ गयी।

पर जैसे ही वह पत्थर पर बैठी तो उसको एक बहुत ज़ोर का झटका लगा और उसके नीचे से एक सॉप निकल आया। लड़की के हाथों से खाने की टोकरी छूट गयी और वह डर के मारे जितनी तेज़ वहॉ से भाग सकती थी उतनी तेज़ वहॉ से भाग गयी।

[97] The Snake – a folktale from Monferrato area, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

उस दिन उस किसान को खाना नहीं मिला और वह भूखा ही रह गया। शाम को जब वह घास के मैदान से घर लौटा तो उसने गुस्से में अपनी बेटी को बहुत डॉटा।

अगले दिन उसकी दूसरी बेटी की बारी थी। वह भी अपने पिता के लिये खाना ले कर चली। इत्तफाक से वह भी जंगल तक पहुँचते पहुँचते थक गयी और सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर जा कर बैठ गयी जिस पर उसकी बड़ी बहिन बैठी थी। उसके साथ भी वही हुआ जो उसकी बड़ी बहिन के साथ हुआ था।

जैसे ही वह उस पत्थर पर बैठी कि एक सॉप उसमें से बाहर निकला। वह भी उसको देख कर डर गयी और उसके हाथ से भी खाने की टोकरी नीचे गिर गयी और वह भी वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी भाग ली।

और उस दिन भी किसान को खाना न मिलने की वजह से भूखा रह जाना पड़ा। शाम को जब वह घर लौटा तो उसने अपनी इस बेटी को भी बहुत डॉटा।

उसके अगले दिन उसकी सबसे छोटी लड़की की बारी थी। वह सोच रही थी कि आज मेरी बारी है पर मैं सॉप से नहीं डरती। यह सोच कर उसने खाने की दो टोकरियॉ तैयार की – एक अपने पिता के लिये और दूसरी सॉप के लिये।

पर उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा उसकी दोनों बड़ी बहिनों के साथ हुआ था। वह भी जंगल तक जाते जाते थक गयी और जा

कर सुस्ताने के लिये उसी पत्थर पर बैठ गयी जहाँ उसकी दोनों बड़ी बहिनें बैठी थीं।

उसके बैठते ही उस पत्थर के नीचे से एक साँप निकला तो वह डरी नहीं बल्कि अपने साथ लायी दो टोकरियों में से एक टोकरी का खाना उसने साँप को दिया।

साँप ने खाना खाया और बोला — "तुम मुझे अपने साथ घर ले चलो। मैं तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत ले कर आऊँगा।"

यह सुन कर लड़की ने उस साँप को उठा कर अपने ऐप्रन में रख लिया और अपने पिता के पास चल दी। वहाँ उसने अपने पिता को खाना खिलाया और फिर घर वापस आ गयी। घर आ कर उसने उस साँप को अपने पलँग के नीचे रख दिया।

वह वहाँ इतनी जल्दी जल्दी बढ़ता रहा कि जल्दी ही वह इतना बड़ा हो गया कि अब वह पलंग के नीचे रह ही नहीं सकता था। वह वहाँ से चला गया।

जाने से पहले वह उस लड़की को तीन वरदान देता गया। पहला वरदान तो यह कि जब भी वह रोयेगी तो उसके आँसू मोती और चाँदी बन जायेंगे।

दूसरा वरदान यह कि जब भी वह हँसेगी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरेंगे। और तीसरा वरदान यह कि जब वह हाथ धोयेगी तो उसके हाथों से सब तरह की मछलियाँ निकलने लगेंगी।

एक दिन घर में खाने के लिये कुछ नहीं था। उसका पिता और बहिनें खाना न मिलने की वजह से बहुत कमजोर हो रहे थे सो उसने अपने हाथ धोये तो उसके हाथों में से खूब सारी मछलियॉ निकल आयीं।

यह देख कर उसकी बहिनों को उससे बहुत जलन होने लगी।

उन्होंने अपने पिता को यह विश्वास दिला दिया कि उसके इस जादू के पीछे कुछ है इसलिये उस लड़की को सबसे ऊपर वाले कमरे[98] में बन्द कर देना चाहिये। पिता ने वैसा ही किया और उसको सबसे ऊपर वाले कमरे में बन्द कर दिया।

उनके घर के सामने राजा का घर था। राजा का एक बेटा था। एक दिन वह अपने घर के बागीचे में गेंद खेल रहा था। एक बार वह गेंद के पीछे भागा और फिसल कर गिर पड़ा। यह देख कर वह लड़की हॅस पड़ी। जैसे ही वह हॅसी उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरने लगे।

राजा का बेटा तो बेचारा सोच ही नहीं सका कि वे अनार के सोने के दाने आये कहॉ से क्योंकि उस लड़की ने तब तक अपनी खिड़की बन्द कर ली थी।

[98] Translated for the word “Attic” – in Western countries most houses have the conical roof because of snow. To make use of that small conical place they make a tiny room there. Sometimes these rooms are big too when the houses are big. See the picture of an attic above.

अगले दिन वह फिर बागीचे में खेलने आया तो उसने देखा कि जहॉ वे अनार के सोने के दाने गिरे थे वहॉ तो अनार का एक पेड़ उग आया है। वह पेड़ खूब ऊॅचा था और उस पर बहुत सारे अनार लगे हुए थे।

अनार देख कर वह बहुत खुश हो गया और उनको तोड़ने जा पहुॅचा पर वह पेड़ तो उसकी ऑखों के सामने सामने बढ़ कर और ऊॅचा हो गया। अब अगर उसको कोई अनार उस पेड़ पर से तोड़ना था तो जैसे ही वह उस अनार की तरफ हाथ बढ़ाता तो उस फल की डाली एक फुट और ऊॅची हो जाती।

इस तरह वह उस पेड़ पर से कोई भी अनार नहीं तोड़ पा रहा था। यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ और अपने पिता से जा कर कहा।

राजा ने दूसरे लोगों को भी अनार तोड़ने के लिये भेजा पर उनमें से भी कोई आदमी उस पेड़ पर से एक पत्ती से ज़्यादा नहीं तोड़ सका। इस पर राजा ने अपने यहॉ के सब अक्लमन्द लोगों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा कि इस जादू का क्या मतलब था।

उन अक्लमन्दों में जो उम्र में सबसे ज़्यादा बड़ा था वह बोला — "इस पेड़ के फल केवल एक लड़की ही तोड़ सकती है और फिर वही राजा के बेटे की पत्नी बन जायेगी।"

यह सुन कर राजा ने यह घोषणा करा दी कि उसके राज्य में जो कोई शादी लायक लड़कियॉ हैं चाहे वे किसी भी जाति की हों

और कहीं भी रहती हों अनार तोड़ने के लिये उसके घर आयें। और जो कोई भी उस पेड़ का अनार तोड़ पायेगी वही उसके बेटे की पत्नी बनेगी।

सो बहुत सारे देशों से हर जाति की लड़कियॉ राजा के घर अनार तोड़ने आयीं। सबने अनार तोड़ने के लिये कई तरह की छोटी बड़ी सीढ़ियॉ इस्तेमाल की पर वे सब छोटी पड़ गयीं। कोई भी सीढ़ी किसी भी अनार तक नहीं पहुँच सकी।

इन लड़कियों में उस किसान की दोनों बड़ी लड़कियॉ भी थीं जिसकी छोटी लड़की के मुँह से अनार के सोने के दाने गिर कर यह पेड़ उगा था । पर वे दोनों तो अनार तोड़ने के लिये उस सीढ़ी पर चढ़ते समय ही गिर गयीं।

जब आयी हुई लड़कियों में से कोई लड़की अनार नहीं तोड़ सकी तो राजा ने घरों में जा जा कर लड़कियों की खोज की और उस किसान के ऊपर वाले कमरे में बन्द लड़की को भी ढूँढ लिया।

जैसे ही लोग उस लड़की को ले कर उस पेड़ के पास आये तो उस पेड़ की शाखें अपने आप ही झुक गयीं और उसके अनार खुद बखुद उसके हाथों में आ गये।

यह देख कर सब लोग बहुत खुश हुए। यह देख कर राजा का बेटा बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "यही मेरी दुलहिन है पिता जी, यही मेरी दुलहिन है।"

बस फिर क्या था शादी की तैयारियॉ होने लगीं। लड़की की दोनों बहिनों को भी बुलाया गया था। तीनों एक ही गाड़ी में सवार हुईं पर जब वह गाड़ी एक जंगल में से गुजर रही थी तो उस गाड़ी को वहीं जंगल में ही रोक दिया गया और दोनों बड़ी लड़कियों ने सबसे छोटी वाली लड़की को गाड़ी से उतर जाने के लिये कहा।

जब वह उतर गयी तो उन बहिनों ने उसके दोनों हाथ काट डाले और उसकी ऑखें निकाल कर उसे अन्धा कर दिया। वह लड़की बेचारी वहीं बेहोश हो गयी। वे दोनों बहिनें उसको उसी बेहोशी की हालत में वहीं एक झाड़ी में छोड़ कर राजमहल चली गयीं।

सबसे बड़ी लड़की दुलहिन की पोशाक पहन कर शादी के लिये राजा के बेटे के पास गयी। राजा के बेटे की समझ में ही नहीं आया कि वह लड़की जिसने अनार तोड़ा था इतनी बदसूरत कैसे हो गयी। पर क्योंकि दोनों की सूरत काफी कुछ मिलती जुलती थी सो उसने सोचा कि शायद उसी से उसकी सुन्दरता के बारे में कुछ गलतफहमी हो गयी होगी।

उधर वह छोटी लड़की बिना ऑखों और हाथों के जंगल में पड़ी रो रही थी। एक गाड़ी चलाने वाला उधर से गुजर रहा था तो उसको उस लड़की को इस हालत में देख कर उस पर दया आ गयी। उसने उस लड़की को अपने साथ अपने खच्चर पर बिठा लिया और उसको अपने घर ले गया।

लड़की ने उस आदमी से नीचे देखने के लिये कहा तो उस आदमी ने नीचे देखा। उसने देखा कि वहाँ तो मोती और चाँदी पड़ी हुई है। ये वे मोती और चाँदी थे जो उस लड़की के रोते समय गिर गये थे। उस आदमी ने उनको उठा लिया और उनको बाजार में बेच आया।

उनको बेचने से उसको एक हजार क्राउन[99] से भी ज़्यादा मिले। इतना पैसा देख कर वह तो उस लडकी की सहायता करके बहुत खुश हो गया।

अब वह लड़की कोई काम तो कर नहीं सकती थी, न ही वह देख सकती थी और न ही वह उसके परिवार की ही कोई सहायता कर सकती थी क्योंकि उसके तो हाथ ही नहीं थे और आँखें भी नहीं थीं।

एक दिन उस लड़की को महसूस हुआ कि कोई साँप उसके पैरों के चारों तरफ लिपट गया है। यह वही साँप था जिसके साथ उसने पहले दोस्ती की थी। उसको खाना खिलाया था और जिसने उसे तीन वरदान भी दिये थे।

साँप ने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमको मालूम है कि तुम्हारी बहिन ने राजा के बेटे से शादी कर ली है और क्योंकि राजा

[99] Currency in Europe at that time.

मर गया है वह अब रानी बन गयी है। अब उसको बच्चा भी होने वाला है और वह अंजीर[100] खाना चाहती है।"

लड़की ने उस आदमी से कहा — "एक खच्चर पर अंजीर लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं अंजीर लाऊँगा कहाँ से? यह तो जाड़े का मौसम है और जाड़े के मौसम में तो अंजीर आती नहीं।"

लड़की बोली – "तुम बागीचे में जाओ तो।"

सो अगली सुबह जब वह बागीचे में गया तो वहाँ उसको एक बड़ा सा अंजीर का पेड़ दिखायी दे गया। उस पर बहुत सारी अंजीरें लगी हुई थीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस पर केवल अंजीरें हीं अंजीरें थीं पत्ती कोई नहीं थी। उस आदमी ने दो टोकरियाँ भर कर अंजीर तोड़ीं और अपने खच्चर पर लाद लीं।

उस आदमी ने उस लड़की से कहा — "इन बेमौसम की अंजीरों को राजा को दे कर तो मुझे बहुत सारी कीमत मिलेगी। इनकी तो मैं कोई भी कीमत माँग सकता हूँ। बोलो मैं क्या माँगू?"

लड़की बोली — "तुम उनसे आँखें माँग लेना।"

उस आदमी ने ऐसा ही किया परन्तु न तो राजा ने, न उसकी रानी ने और न रानी की बहिन ने, किसी ने भी उसको अपनी आँखें नहीं दीं।

[100] Translated for the word "Fig". See its picture above.

फिर उस लड़की की बहिनों ने आपस में बात की — "हम उसको अपनी बहिन की ऑखें दे देते हैं क्योंकि वे तो हमारे किसी काम की नहीं हैं।" सो उन्होंने अपनी बहिन की ऑखें दे कर उस आदमी से वे अंजीरें खरीद लीं।

ऑखें ले कर वह आदमी घर वापस आ गया और वे ऑखें ला कर उस लड़की को दे दीं। उन ऑखों को उसने अपने चेहरे पर फिर से लगा लिया और अब उसको फिर से पहले जैसा ही दिखायी देने लगा।

कुछ दिन बाद रानी की खूबानी[101] खाने की इच्छा हुई तो राजा ने फिर उसी आदमी को बुलवाया और कहा — "अगर तुमने अंजीर की तरह से कहीं से खूबानी का इन्तजाम नहीं किया तो.... ।

उस आदमी ने यह बात जब उस लड़की को बतायी तो उसने फिर वही कहा — "एक खच्चर पर खूबानी लादो और उसे रानी को दे आओ।"

आदमी बोला — "पर इस समय में मैं खूबानी लाऊँगा कहॉ से? इस मौसम में मुझे खूबानी कहॉ मिलेगी?"

लड़की बोली – "तुम बागीचे में जाओ तो।"

[101] Translated for the word "Peach". See its picture above.

अगले दिन उसके बागीचे में खूबानी का एक पेड़ खड़ा हुआ था। अंजीर के पेड़ की तरह से खूबानी का पेड़ भी खूबानियों से भरा हुआ था पर उस पेड़ पर पत्ती एक भी नहीं थी।

उसने उस पेड़ से दो टोकरी भर कर खूबानियॉ तोड़ीं और दरबार में ले जाने लगा तो उसने फिर से उस लड़की से पूछा — "आज मैं राजा से इन खूबानियों के बदले में क्या मॉगू?"

लड़की बोली — "आज तुम उनसे हाथ मॉग लेना।"

उस दिन उसने उन खूबानियों की कीमत हाथ मॉगी पर कोई भी अपने हाथ काट कर उसे देने को तैयार नहीं हुआ – राजा को खुश करने को भी नहीं।

सो पिछली बार की तरह से मामला फिर से बहिनों के पास आया तो उन्होंने सोचा कि उनकी बहिन के हाथ तो उनके पास बेकार ही पड़े हैं तो क्यों न हम उन्हीं हाथों को इसको दे कर ये खूबानियॉ खरीद लेते हैं।"

सो उन्होंने अपनी बहिन के हाथ उस आदमी को दे कर खूबानियॉ खरीद लीं।

उस आदमी ने वे हाथ ला कर उस लड़की को दे दिये। उस लड़की ने वे हाथ अपने हाथों की जगह लगा लिये और उसके हाथ अब पहले की तरह ही हो गये।

कुछ दिनों बाद रानी को फिर बच्चा हुआ तो वह तो एक बिच्छू था। फिर भी राजा ने एक शानदार नाच का इन्तजाम किया जिसमें सब लोगों को बुलावा भेजा गया।

बुलावा उस आदमी को भी आया जो रानी के लिये अंजीर और खूबानी ले कर गया था। वह लड़की रानी की तरह सजी और उस नाच में गयी। राजा उसको देखते ही उससे प्यार करने लगा। बाद में उसने महसूस किया कि वह तो उसकी असली रानी थी।

जब वह हॅसती थी तो उसके सिर से अनार के सोने के दाने गिरते थे। जब वह रोती थी तो मोती और चॉदी गिरते थे। और जब वह हाथ धोती थी तो बर्तन मछलियों से भर जाता था।

वे दोनों नीच बहिनें और बिच्छू आग में जला दिये गये। उसी दिन उस लड़की और राजा की शादी की दावत हुई और फिर वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

20 छोटा लोमड़ा और अनार राजा[102]

यह लोक कथा अनार फल की है और एशिया के चीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

मू ताई[103] एक बहुत ही गरीब आदमी था जो सीन चिऑग शहर[104] के बाहर की तरफ रहता था। वहॉ मू ताई के घर की छोटी सी जमीन पर उसके घर के अलावा केवल एक अनार का पेड़ था। उस अनार के पेड़ पर बहुत रसीले अनार के फल लगते थे।

मू ताई अपने अनार के पेड़ को बहुत प्यार करता था। वह उस से ऐसे बात करता था जैसे कि वह उसका बच्चा हो। जब वह देर से फूलता था तो उसको डॉटता था और जब उसके ऊपर फल आते थे तब उसकी बहुत तारीफ करता था।

मू ताई अपने अनार के पेड़ के अनार रोज गिनता था। एक पतझड़ में उसने देखा कि उसके दो अनार रोज कम हो रहे हैं। सो उसने सोचा कि वह रात को सारी रात जागेगा ताकि वह यह पता लगा सके कि उसके ये दो अनार कौन चुरा कर ले जाता है।

एक रात जब चॉद पूरा था तो उसने एक लोमड़े को देखा जो उसके अनार के पेड़ में कुछ गड़बड़ कर रहा था। सो अगली शाम

---

[102] The Little Fox and the Pomegranate King – a legend from China, Asia. Adapted from the book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

[103] Mu Tai – a Chinese name for a man

[104] Hsin Chiang town of China

उसने उस पेड़ के चारों तरफ बिना रंग के गोंद का एक गोला बना दिया और सोने चला गया।

सुबह को जब वह अपने अनार के पेड़ के पास आया तो उसने देखा कि एक छोटा सा लोमड़ा उस गोंद में चिपका हुआ है और दर्द से चिल्ला रहा है। वह अपने पंजों को उस गोंद में से छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा है पर वह उनको छुड़ा नहीं पा रहा है।

मू ताई ने उसको उसके कानों से पकड़ लिया और उसको मारने की धमकी दी पर वह लोमड़ा चालाक था उसने मू ताई से एक सौदा किया जिसे मू ताई मना नहीं कर सका।

लोमड़ा बड़े विश्वास के साथ बोला — "अगर तुम मुझे आजाद कर दोगे तो मैं तुम्हारी शादी के लिये एक राजकुमारी ढूँढ दूँगा।"

पर मू ताई ने उसको हिलाते हुए कहा — "मुझे विश्वास नहीं होता।"

लोमड़ा बोला — "मेरा विश्वास करो। मै तुमसे वायदा करता हूँ कि इस महीने के आखीर तक तुम एक बादशाह के दामाद[105] बन जाओगे।"

मू ताई लोमड़े के इस वायदे के लालच में आ गया और उसने लोमड़े को उस गोंद की पकड़ से आजाद कर दिया और उसको उसका वायदा पूरा करने के लिये एक हफ्ते का समय और ज़्यादा दे दिया।

[105] Son-in-law – husband of the daughter

लोमड़ा यह सुन कर अपना वायदा पूरा करने के लिये प्लान बनाने के लिये अपने घर भाग गया।

कई दिन बाद लोमड़े ने बादशाह के चौकीदार की पोशाक चुरा ली। उसने उसको पहना, अपनी पूँछ सँवारी और पड़ोस के राज्य के एक बूढ़े राजा से मिलने चल दिया।

किसी तरह से पीछे पड़ कर उसने वहाँ के बादशाह के चौकीदारों से बादशाह से मिलने की इजाज़त ले ली।

बादशाह के सामने जा कर उसने अपने आपको बादशाह मू ताई का सलाहकार और उसके चौकीदारों का सरदार बताया।

उसने उस बादशाह को यह भी बताया कि कैसे उसने मू ताई के बागीचे की मिट्टी में हजारों मोती लाल हीरे देखे हैं और अब वह पड़ोस के राज्य से एक छलनी माँगने आया है ताकि वह उनको छान कर उस मिट्टी में से निकाल सके।

वह बूढ़ा बादशाह उस लोमड़े की यह बात सुन कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने ओक की लकड़ी की बनी एक बड़ी सी छलनी उसको दे दी।

उसी रात लोमड़ा उस बादशाह के महल में घुस गया और उसके खजाने से मुट्ठी भर मोती चुरा लाया। दो दिन बाद वह फिर उसी बादशाह के महल लौटा और वह छलनी बादशाह के पैरों के पास रख दी। ऐसा करते समय उसने जान बूझ कर आठ मोती उसी छलनी में छोड़ दिये।

जब महल के नौकरों ने उस छलनी को बादशाह के हाथों में दिया तो वे मोती बादशाह को गोद में जा कर गिर गये। बादशाह उन मोतियों की सुन्दरता देख कर बहुत प्रभावित हुआ।

लोमड़े ने उन मोतियों को बादशाह को भेंट में दे दिया और बोला — "मेरे पास ऐसे और भी बहुत सारे मोती हैं पर वे मोती तो उन मोतियों के सामने कुछ भी नहीं जो मैंने अभी देखे ही नहीं हैं।"

बादशाह उस लोमड़े के शब्दों पर कुछ देर तक विचार करता रहा फिर अपने पास खड़े अपने दरबार के एक मन्त्री के कान में कुछ फुसफुसाया।

फिर वह बादशाह अपने सिंहासन से नीचे उतर कर आया और लोमड़े को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और मैं अपनी बेटी की शादी के बारे में बहुत चिन्तित हूँ। क्या तुम मेरी बेटी और अपने बादशाह के बीच में शादी कराने वाले[106] बन कर उनकी शादी कराओगे?"

लोमड़ा बोला यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी। फिर उसने बादशाह को विश्वास दिलाया कि बादशाह मू ताई से उसकी बेटी की शादी उसकी बेटी के लिये बहुत ही बढ़िया रिश्ता रहेगा।

उसने बादशाह से यह भी वायदा किया कि वह अगले हफ्ते शादी की तैयारी के साथ लौट कर आयेगा। फिर उसने बहुत नीचे

[106] Translated for the word "Matchmaker"

झुक कर और अपनी पूँछ से बादशाह के सामने की जमीन साफ कर के उसको विदा कहा और वहाँ से चल दिया।

जब लोमड़े ने यह सब मू ताई को बताया तो वह बहुत खुश भी हुआ और थोड़ा दुखी भी हुआ।

वह खुश इसलिये हुआ कि उसकी शादी एक राजकुमारी से होने जा रही थी और दुखी इसलिये था कि उसके पास न तो राजकुमारी को देने के लिये कुछ था और न उसके पास शादी के समय पहनने के लिये ही कोई सूट और कोई अच्छा जूता था।

लोमड़े ने उसको विश्वास दिलाया कि वह घबराये नहीं सब ठीक हो जायेगा। बस वह अगले हफ्ते पड़ोस के राज्य को चलने के लिये तैयार हो जाये।

अगले हफ्ते लोमड़ा एक कम्बल ले कर मू ताई के घर आया और उस घबराये हुए दुलहे को उस बूढ़े बादशाह के महल ले गया। महल के दरवाजे पर पहुँचने से ठीक पहले लोमड़े ने मू ताई को एक झील में कूद जाने को कहा।

मू ताई ने वैसा ही किया जैसा उस लोमड़े ने उससे करने के लिये कहा। वह झील के ठंडे पानी में कूद गया और जब वह झील में से बाहर निकला तो लोमड़े ने उसके फटे हुए कपड़े तो निकाल दिये और उसको अपने लाये हुए कम्बल में लपेट दिया।

इसके बाद वे दोनों महल चले और बादशाह के सामने पहुँचे।

लोमड़ा बादशाह से बोला — "मैं बादशाह मू ताई को ले आया हूँ पर रास्ते में हमारे ऊपर बड़ी आफत आ पड़ी। जब हम अपने सिल्क और जवाहरातों से लदे चालीस ऊँटों के साथ आपके राज्य को ले कर आ रहे थे तो आपके राज्य के सामने वाली नदी का पुल पार करते समय वह पुल टूट गया।

हमारे सारे ऊँट उस नदी में डूब गये। शादी के लिये जो भेंटें हम ले कर आ रहे थे वे सब भी पानी की धारा में बह गयीं। बस हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम लोग किसी तरह से बच कर निकल आये।

बादशाह तो यही सुन कर बहुत प्रभावित होगया कि वे चालीस ऊँटों पर इतना कीमती सामान लाद कर ला रहे थे। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वह बादशाह मू ताई को सबसे अच्छे कपड़े पहनायें।

उसी शाम मू ताई और राजकुमारी की शादी हो गयी और दावत भी। पर मू ताई बहुत चिन्तित था उससे तो खाना भी नहीं खाया जा रहा था।

जब कोई नहीं सुन रहा था तो वह लोमड़े से बोला — "क्या यह सब ठीक है कि एक राजकुमारी से शादी की जाये और अपने आपको एक बादशाह कहलवाया जाये? पर तब क्या होगा जब वह मेरे घर आयेगी और उसको मेरी गरीबी का पता चलेगा?"

लोमड़े ने मू ताई की चिन्ताओं को बेकार की चिन्ताऐं बताते हुए कहा कि अभी वह कोई चिन्ता न करे और आनन्द से इस मौके का आनन्द उठाये। वह उसकी भी कोई तरकीब निकाल लेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे जब दावत खत्म हो गयी तो नया शादीशुदा जोड़ा महल से चल दिया। उनके साथ काफी सारे घोड़े गधे और गाड़ियॉ थीं, राजकुमारी के नौकर थे और दहेज का सामान था।

मू ताई फिर से इतना परेशान था कि वह अपनी पत्नी से बात भी नहीं कर पा रहा था सो उसने लोमड़े को फिर बुलाया पर वह तो वहॉ था ही नहीं।

लोमड़ा तो इस बीच वहॉ से दूर भाग गया था और सौदागरों के एक समूह के पास जा पहुँचा जो तीस ऊँटों के साथ यात्रा कर रहे थे। लोमड़ा जब उनसे मिला तो उसकी ऑखों में डर था।

वह दूर से आते हुए कारवॉ की तरफ इशारा करते हुए उन सौदागरों से चिल्ला कर बोला — "चोरों का एक समूह इसी सड़क पर आ रहा है और अगर तुम लोग अपनी जान बचा कर नहीं भागे तो तुम सब मारे जाओगे।"

सौदागरों ने उस दिशा की तरफ देखा तो उन्होंने सचमुच में ही घोड़ों की टापों से उठती धूल देखी। उन्होंने देखा कि जान बचाने के लिये भी समय कम है सो उन्होंने लोमड़े से ही सलाह मॉगी कि वे क्या करें।

लोमड़े ने उनको सलाह दी कि उनके पास बच के भागने का केवल एक ही तरीका है। जब वे उनके पास से गुजरें तो वे उनको सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे लोग बादशाह मू ताई के लोग हैं। यह सुन कर वे उनको छोड़ देंगे। वे सौदागर मान गये।

सो जब मू ताई अपने कारवॉ के साथ वहॉ से गुजरा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे सब उसको झुक झुक कर सलाम कर रहे थे।

उधर वह लोमड़ा उन सौदागरों से यह कह कर आगे बढ़ गया। आगे जा कर वह कुछ चरवाहों के झुंड और उनके घोड़ों से मिला। उसने उनको भी अपनी डरी हुई आवाज में डाकुओं की वही कहानी दोहरायी। उन चरवाहों ने भी धूल उड़ती हुई देखी और बचने का समय न देख कर लोमड़े से ही सलाह मॉगी।

लोमड़े ने उनको भी वही सलाह दी कि वे उस कारवॉ को सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे बादशाह मू ताई के लोग है तो वे लोग उनको छोड़ देंगे। उन चरवाहों ने भी ऐसा ही किया।

राजकुमारी इस बादशाह के लोगों की वफादारी देख कर तो आश्चर्य में पड़ गयी। मू ताई भी आश्चर्य में पड़ गया जब उसको रास्ते में मिले सब लोगों ने सिर झुका कर सलाम किया – किसानों ने, चरवाहों ने, भिखारियों ने, दूकानदारों ने।

सारे दिन भागते भागते अब तक लोमड़ा थक कर चूर हो चुका था कि तभी उसको एक शैतान का महल दिखायी देगया जो मू ताई के घर के पास के एक पहाड़ के पास था।

वह उस महल के चौकीदारों की ऑख बचा कर उस महल में घुस गया और सीधा उस शैतान के सोने के कमरे मे पहुॅच गया। वह शैतान बस सोने ही वाला था कि तभी लोमड़ा उसके बिस्तर में कूद पड़ा और उसको जमीन पर गिरा दिया।

वह बेचैन हो कर उससे बोला — "मैजेस्टी, अपनी जान बचाइये। इस समय सैंकड़ों चोर आपके महल पर हमला करने आ रहे हैं। उन्होंने तो आज आपको मारने की कसम खायी हुई है। इस समय आपके लिये यही सबसे अच्छा है कि आप अपने रसोईघर में रखे स्टोव के पीछे छिप जाइये।"

सो जब वह शैतान अपने उस स्टोव के पीछे की छोटी सी जगह में छिपने गया तो लोमड़े ने आग में बहुत सारी लकड़ियॉ डाल दी। वे लकड़ियॉ इतने ज़ोर से जली कि वह शैतान लोमड़े से दया की भीख मॉगने लगा कि वह उसको किसी तरह से बचा ले।

पर लोमड़ा उसकी यह बात कहॉ सुनने वाला था वह तो बस उस आग में लकड़ी डालता ही रहा और उस स्टोव की गर्मी बढ़ती ही रही जिससे वह शैतान बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में ही वह उस आग की गर्मी में ज़िन्दा ही भुनता रहा।

बाद में लोमड़े ने उसकी राख को बाहर फेंक दिया और उसके पूरे महल में यह घोषणा कर दी कि उनका शैतान राजा मर गया है और अब उनका नया बादशाह आ रहा है।

महल के नौकरों ने नये बादशाह के आने की खुशी में सारे कमरे सजा दिये। मू ताई उनका नया बादशाह हो गया। मू ताई ने उस लोमड़े को अपना वजीर[107] बना लिया।

कई महीनों के राज करने के बाद वहॉ के नौकर मू ताई और उसकी पत्नी को प्यार करने लगे थे। मू ताई ने वहॉ कई साल तक सफलतापूर्वक राज किया पर जब भी उसने कुछ करने का विचार किया तो उसने लोमड़े से सलाह जरूर ली। लोमड़ा भी उसको बहुत अक्लमन्दी की सलाह देता था।

दस साल बाद लोमड़ा मर गया तो मू ताई ने वहॉ सबको कह दिया कि सभी उसके प्यारे दोस्त को हमेशा याद रखें। उसने उस लोमड़े के सुनहरी बालों का टोप बनवा लिया जिसको वह हमेशा पहने रहता था।

सारे सीन चिऑग के लोगों को वह टोप इतना अच्छा लगा कि उसके बाद जब भी कोई लोमड़ा मरता तो वे भी उसके बालों का टोप बनवा लेते। इसी लिये सीन चिऑग आज भी लोमड़े के बालों के टोप के लिये बहुत मशहूर है।

[107] Chief Minister

21 मकड़ा और शहद का पेड़[108]

कई मिलेजुले फलों की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के लाइबेरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक छोटी लड़की थी जो बहुत दूर एक गॉव में रहती थी। वह जंगल में से बहुत अच्छा खाना ढूँढने में बहुत होशियार थी।

उसके सन्तरे दूसरों के सन्तरों से कुछ ज़्यादा ही मीठे होते थे। उसके आलूबुखारे दूसरों के आलूबुखारों से कुछ ज़्यादा ही बड़े होते थे और उसके केले भी दूसरों के केलों से कुछ ज़्यादा ही खुशबूदार होते थे।

हर आदमी को ताज्जुब होता था कि उसको इतने अच्छे फल कहॉ से मिलते हैं पर कभी किसी की हिम्मत उससे उन छिपे हुए पेड़ों के बारे में पूछने की नहीं हुई। और इस मकड़े और इस लड़की की यह कहानी सुनने के बाद तो बिल्कुल ही नहीं हुई। तो लो तुम भी पढ़ो यह कहानी।

एक दिन एक मकड़े ने इस लड़की से खाना ढूँढने में सहायता मॉगी। यह मकड़ा काम करने में बहुत आलसी था और इस तरह

[108] Spider and the Honey Tree – a tale from Liberia, Africa.
Adapted from the Web Site : http://www.phillipmartin.info/liberia/text_folktales_spider.htm
by Phillip Martin.

वह सोचता था कि वह उससे खाना ढूँढने का राज़ भी जान लेगा। पर वह यह नहीं जानता था कि वह लड़की कितनी अक्लमन्द थी।

मकड़ा बोला — "ओ छोटी लड़की, तुम्हारे फल जितने मीठे होते हैं उतने मीठे फल किसी और के नहीं होते। जब तुम अपने लिये फल इकट्ठा करने जाओगी तब क्या तुम मुझे भी अपने साथ ले चलोगी?"

लड़की बोली — "पर मैंने ऐसा कभी नहीं किया।"

मकड़े ने उससे प्रार्थना की — "अगर तुम केवल एक बार मुझे वहाँ ले जाओगी जहाँ से तुम अपना खाना इकट्ठा करती हो तो तुम मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी करोगी। यह मेरे लिये बहुत बड़ी बात होगी। मेरे लिये केवल एक बार ऐसा कर दो।"

लड़की बोली — "ठीक है। शायद एक बार मैं ऐसा कर सकती हूँ पर क्या तुम वायदा करते हो कि तुम इस बात को फिर राज़ ही रखोगे और किसी को बताओगे नहीं?"

आलसी मकड़े ने कहा — "तुम मेरे ऊपर भरोसा कर सकती हो लड़की।"

लड़की ने पूछा — "अच्छा तो तुम यह बताओ कि तुम क्या खाना पसन्द करोगे?"

मकड़ा बोला — "मुझे केले और आलूबुखारे बहुत पसन्द हैं, पर शहद मुझे खास पसन्द है।"

लड़की मुस्कुरा कर बोली — "तब शायद मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ। चलो।"

मकड़े को अपनी किस्मत पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह लड़की इतनी जल्दी तैयार हो जायेगी। लड़की का जवाब सुन कर वह बहुत खुश हुआ।

वह लड़की मकड़े को ले कर जंगल की तरफ चली। पगडंडियों से होती हुई वह उस तरफ चली जहाँ दूसरे लोग शायद ही कभी जाते हों।

मकड़ा भी मुस्कुराता हुआ चला जा रहा था क्योंकि उसको मालूम था कि अब वह बहुत जल्दी ही वह छिपी हुई जगह मालूम कर लेगा जहाँ बहुत स्वादिष्ट खाना मिलता है। और इस जगह को मालूम करने के बाद उसको अच्छा खाने के लिये फिर कभी बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

रास्ते में उस लड़की ने एक आलूबुखारे के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा — "इस आलूबुखारे के पेड़ के ऊपर ज़्यादा आलूबुखारे नहीं आते इसलिये लोग इस पेड़ के ऊपर ज़्यादा ध्यान नहीं देते पर इस पेड़ के आलूबुखारे सबसे ज़्यादा मीठे होते हैं।"

पर यह मकड़ा केवल आलसी ही नहीं था बल्कि लालची भी था। जैसे ही लड़की ने उसको वह छिपा हुआ आलूबुखारे का पेड़

दिखाया उसकी ऑखें तो फटी की फटी रह गयीं और मुँह में पानी आ गया।

यह सुन कर मकड़े ने तुरन्त ही उस लड़की को झाड़ियों की तरफ धक्का दिया और खुद उस आलूबुखारे के पेड़ पर चढ़ गया और सारे आलूबुखारे खा गया। उसने उस लड़की के लिये एक आलूबुखारा भी नहीं छोड़ा और उसको धन्यवाद भी नहीं दिया।

आलूबुखारे की दावत खाने के बाद मकड़े ने अपने पेट पर हाथ फेरा और सोचा कि यह दिन तो मेरी ज़िन्दगी का सबसे अच्छा दिन था।

मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि उस लड़की ने मुझे आलूबुखारे का वह पेड़ दिखाया जहॉ से वह खुद आलूबुखारे तोड़ती है। पर पता नहीं वह मुझे केले के पेड़ के पास भी ले जायेगी या नहीं। बहुत ही बेवकूफ है वह।

मकड़े ने एक बड़ी सी मुस्कुराहट के साथ नीचे लड़की की तरफ देखा तो लडकी ने नम्रता से पूछा — "क्या तुमको वे खास केले भी चाहिये?"

इससे पहले कि वह लड़की अपना विचार बदले मकड़ा पेड़ से तुरन्त ही नीचे उतर आया और बोला — "हॉ हॉ केले तो मुझे बहुत ही ज़्यादा पसन्द हैं।"

लड़की उसको ले कर अपनी छिपी हुई झाड़ियॉ दिखाती हुई और आगे बढ़ी। वे लोग उसी पगडंडी पर बढ़े चले जा रहे थे जिस पर लोग कम ही जाते थे।

कुछ दूर आगे जाने पर लड़की ने मकड़े को एक तरफ इशारा कर के दिखाया कि यहॉ की जगह में केले के ये सबसे अच्छे पेड़ हैं। यह सुन कर मकड़े ऑखें फिर से खुली की खुली रह गयीं और उसके मुॅह में पानी भर आया।

उसने फिर से लड़की को झाड़ियों की तरफ ढकेला और तुरन्त ही उस केले के पेड़ की तरफ दौड़ गया जिसको वह लड़की उसे दिखा रही थी। जा कर वह उस केले के पेड़ पर चढ़ गया और उस पेड़ के सारे पके केले खा गया।

पहले की तरह से उसने उस लड़की के लिये न तो एक भी केला छोड़ा और न ही उसे धन्यवाद दिया।

केले खाने के बाद मकड़े का पेट तो बहुत ज़्यादा भर गया था पर अभी उसकी नीयत नहीं भरी थी। उसको लग रहा था कि अभी उसको उस लड़की की कुछ और छिपी हुई जगहों को भी देखना चाहिये।

फिर वह सोचने लगा कि यह लडकी कितनी बेवकूफ है जो मुझे अपनी सारी छिपी हुई जगहें दिखा रही है। पर मुझे क्या जब तक वह मुझे वे जगह दिखाती रहती है मैं उसका सारा खाना खाता रहूॅगा।

मकड़ा फिर से उस लड़की की तरफ देख कर मुस्कुराया। एक बार फिर उस लड़की ने भी उसकी तरफ मुस्कुरा कर देखा और नम्रता से पूछा — "क्या तुम्हारा पेट भर गया या तुम्हें अभी शहद और चाहिये?"

इससे पहले वह लड़की अपना दिमाग बदले मकड़ा एक बार फिर जल्दी से पेड़ से उतर कर नीचे भागा और बोला — "हॉ अभी मुझे शहद और चाहिये।"

लड़की ने फिर से आगे बढ़ना शुरू किया और मकड़ा उसके पीछे पीछे चल दिया। वह लड़की उसको और गहरे जंगल में ले गयी जहॉ लोग कभी कभी ही जाते थे।

एक तरफ इशारा कर के उसने मकड़े से कहा — "देखो यह एक बहुत ही खास पेड़ है। इसके छेद में काफी गहरे जा कर यहॉ के जंगल का सबसे मीठा शहद है।"

यह लड़की भी उतनी बेवकूफ नहीं थी जितनी कि मकड़ा उसे समझता था। वह इस लालची मकड़े को सबक सिखाना चाहती थी।

जब मकड़े ने शहद का पेड़ देखा तो उसकी ऑखें फिर से खुली की खुली रह गयीं और मुँह में पानी भर आया तो उस लड़की को बिल्कुल भी ताज्जुब नहीं हुआ क्योंकि उसे मालूम था कि मकड़े को शहद बहुत पसन्द था।

इसी लिये इस बार भी उसको इस बात का बिल्कुल ताज्जुब नहीं हुआ जब शहद का पेड़ देख कर मकड़े की ऑखें खुली की

खुली रह गयीं और उसके मुँह में पानी भर आया, और वह लड़की को एक बार फिर से धक्का दे कर उस शहद के पेड़ पर चढ़ गया और उसके एक छेद में घुस गया।

वहाँ जा कर वह उस पेड़ का सारा सुनहरा शहद खा गया। उस लड़की के लिये उसने एक बूँद भी शहद नहीं छोड़ा और न ही उसको धन्यवाद दिया।

जब मकड़ा पेट भर कर शहद खा चुका तो उसने उस छेद में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वह उसमें से निकल ही नहीं सका। उसका पेट बहुत बड़ा हो गया था और वह उस छेद में फँस गया था।

मकड़ा चिल्लाया — "ओ छोटी लड़की, मेरी सहायता करो। मैं इस छेद में फँस गया हूँ।"

लड़की ने डाँटा — "तुम अगर लालची न होते तो तुम कभी इस छेद में नहीं फँसते।"

मकड़ा फिर चिल्लाया — "मैंने जो कुछ किया मुझे इसके लिये बहुत अफसोस है पर अभी तो तुम मेरी सहायता करो।"

लड़की बोली — "मैं उतनी बेवकूफ नहीं हूँ जितना तुम सोचते हो। तुमने जो कुछ भी किया तुम्हें उसके लिये बिल्कुल भी अफसोस नहीं है। तुम्हें केवल इस बात का अफसोस है कि तुम इस छेद में फँस गये हो।"

यह जानते हुए भी कि वह लड़की सच बोल रही थी मकड़ा झूठ बोला — "नहीं नहीं, यह बात नहीं है लड़की तुम गलती पर हो।"

हालॉकि जब तक वह यह सोचता रहा कि वह उस लड़की के साथ चाल खेल रहा था उसको हर पल आनन्द आ रहा था। उसने अपने खाने का भी पूरा पूरा आनन्द उठाया था।

पर इस तरह छेद में फॅस जाने की तो उसने बिल्कुल ही आशा नहीं की थी। वह फिर बोला — "मेहरबानी कर के ओ लड़की मेरे लिये कोई सहायता बुलाओ मैं यहॉ फॅस गया हूँ।"

इतने में उस लड़की के चेहरे पर एक मुस्कुराहट आ गयी और वह बोली कि वह वैसा ही करेगी जैसा कि मकड़े ने उससे करने के लिये कहा था सो वह जितनी धीरे से बोल सकती थी उतनी धीरे से उसने मकड़े की सहायता के लिये पुकारा।

"आओ सहायता करो, आओ कोई सहायता करो। बेवकूफ मकड़ा शहद के पेड़ में फॅस गया है। आओ और लालची मकड़े की सहायता करो।"

पर न तो कोई उस लड़की की फुसफुसाहट को सुन सका और न ही कोई मकड़े की चीखों को उस पेड़ के अन्दर से सुन सका क्योंकि वे लोग तो जंगल में बहुत दूर थे जहॉ से शायद ही कोई गुजरता हो।

आखिर में उस लड़की ने चालाकी भरी मुस्कुराहट से मकड़े की तरफ देखा और बोली — "अच्छा मकड़े भाई मैं चली। मुझे अपने

परिवार के लिये बड़े बड़े सन्तरे ले जाने हैं। अगर तुम्हें वे खाने हैं तो तुम मेरे पीछे पीछे आ जाना।"

और वह हाथ हिला कर वहॉ से चली गयी।

22 पिपीना सॉप[109]

फलों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक अमीर व्यापारी था जिसके पॉच बच्चे थे – चार बेटियॉ और एक बेटा। उसका बेटा सबसे बड़ा था। उसका नाम था बाल्डेलौन[110]।

व्यापारी की किस्मत ने पलटा खाया और वह अमीर से गरीब हो गया। अब वह केवल मॉग कर ही खा पी पाता था। उसकी यह हालत और भी खराब होने वाली थी क्योंकि उसकी पत्नी को छठा बच्चा होने वाला था।

बाल्डेलौन ने देखा कि उसका परिवार बड़ी कठिनाई से गुजर रहा है सो उसने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। उसने सबको गुड बाई कहा और फ्रांस के लिये चल दिया।

वह एक पढ़ा लिखा नौजवान था सो जब वह पेरिस पहुॅचा तो उसको वहॉ के शाही महल में काम मिल गया और फिर वहॉ वह कैप्टेन बन गया।

घर में पत्नी ने पति से कहा — "अब बच्चा आने को है और हमारे पास बच्चे की कोई चीज़ नहीं है। हम अपनी आखिरी चीज़

[109] Pippina the Serpent (Story No 150) – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[110] Baldellone – the name of the son of the merchant.

खाने की मेज बेच देते हैं ताकि हम बच्चे की कुछ चीज़ें खरीद सकें।"

उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को बुलाया जो पुरानी चीज़ें खरीदते थे और उनमें से एक को उन्होंने अपनी खाने की मेज बेच दी। इस तरह से वह व्यापारी अपने आने वाले बच्चे के लिये वह सब सामान खरीद सका जो उस बच्चे के लिये जरूरी था।

जब समय आया तो उनके घर में एक बेटी पैदा हुई जो बहुत सुन्दर थी। उसको देख कर उसके माता और पिता खुशी से रो पड़े। उनके मुँह से निकला — "ओ हमारी प्यारी बेटी, हमको बहुत दुख है कि तुम हमारे घर में इतनी गरीबी में पैदा हुई।"

उन्होंने अपनी उस बेटी का नाम पिपीना[111] रख दिया।

उनकी वह बेटी धीरे धीरे बड़ी होती गयी और जब वह पन्द्रह महीने की हो गयी तो वह अपने आप चलने लगी। जहाँ उसके माता पिता सोते थे वह वहीं भूसे में खेलती रहती थी।

एक बार जब वह वहाँ खेल रही थी तो वह अपना हाथ बढ़ा कर चिल्लायी — "माँ माँ, देखो तो।" उसकी माँ ने देखा तो उस के उस हाथ में सोने के सिक्के थे।

उसकी माँ को तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने उससे वे सिक्के लिये और अपनी जेब में रख लिये। फिर

[111] Pipina – the name of the youngest child daughter

उसने बच्ची की देख भाल करने के लिये एक आया बुलायी और बच्ची को उसके पास छोड़ कर बाजार दौड़ी गयी।

बाजार से उसने जी भर कर बहुत सारी चीज़ें खरीदीं और दोपहर तक उसने बहुत अच्छा खाना बना कर रखा। दोपहर को वे सब बहुत अच्छा खाना खाने बैठे।

उसके पिता ने पिपीना की पीठ थपथपाते हुए पूछा — "पिपीना बताओ तो तुमको ये चमकदार चीज़ें कहाँ से मिलीं?"

और उसने भूसे में एक छेद की तरफ इशारा करते हुए कहा — "यहाँ पिता जी। यहाँ तो सिक्कों से भरा एक पूरा बड़ा सा बर्तन रखा है। आपको केवल उसमें हाथ डाल कर बस उनको निकालना भर है।"

और इस तरह से वह परिवार एक बार फिर से अमीर हो गया और फिर से उसी तरीके से रहने लगा जैसे वह पहले रहता था।

जब वह बच्ची चार साल की हुई तो उसके पिता ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे लगता है कि अब हमको पिपीना के ऊपर जादू[112] करवा देना चाहिये। अब तो हमारे पास पैसा है तो हम पिपीना के ऊपर वह जादू क्यों न करवा दें?"

[112] Translated or the word "Charm".

उन दिनों माता पिता अपने बच्चों के ऊपर जादू करवाने के लिये मौनरील[113] के आधे रास्ते तक जाते थे जहॉ चार परी बहिनें रहतीं थीं।

सो वे लोग पिपीना को एक गाड़ी में बिठा कर वहॉ ले गये और वहॉ जा कर उन चारों बहिनों को उसको दिया। उन परियों ने उनको बताया कि क्या क्या तैयार करना है और उस व्यापारी के घर रविवार को उस रस्म को पूरा करने के लिये आने के लिये तैयार हो गयीं।

रविवार को ठीक समय पर चारों बहिनें पलेरमो[114] आयीं। वहॉ उनके लिये जैसा उन्होंने कहा था वह सब कुछ तैयार था। उन्होंने अपने हाथ धोये, मजोरकन के आटे की चार पाई[115] बनायीं और उनको बेक करने के लिये भेज दिया।

कुछ ही देर में बेक करने वाले की पत्नी को उन पाई की खुशबू आयी तो वह अपने आपको बिल्कुल भी नहीं रोक पायी और उसमें से उसने एक पाई निकाल कर खा ली।

फिर उसने उसके जैसी एक दूसरी पाई बनायी। पर उसका आटा साधारण वाला आटा था और उसने उसको बनाने के लिये

[113] Monreale – name of a place in Italy

[114] Palermo city

[115] Pie is a kind of filled white flour Roti with any kind of thing – fruit, vegetable, meat etc – see its picture above.

पानी वहॉ से लिया था जहॉ वह अपने ओवन साफ करने की झाड़ू धोती थी।

पर शक्ल में वह बिल्कुल दूसरी पाईयों जैसी ही थी और कोई उसको दूसरी तीन पाईयों से अलग नहीं कर सकता था।

जब वे चारों पाई उस व्यापारी के घर आयीं तो पहली परी ने यह कहते हुए एक पाई काटी — "मैं तुम पर यह जादू करती हूॅ ओ प्यारी बेटी कि तुम जब भी अपने बालों में कंघी करो तो उनमें से मोती और दूसरे जवाहरात गिरें।"

दूसरी परी ने दूसरी पाई काटी और कहा — "मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूॅ कि तुम जितनी अब सुन्दर हो दिनों दिन उससे भी ज़्यादा सुन्दर होती जाओ।"

अब तीसरी परी उठी और तीसरी पाई काटते हुए बोली — "मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूॅ कि वह हर बेमौसमी फल जिसकी तुम इच्छा करो वह तुमको तुरन्त ही मिल जाये।"

चौथी परी ओवन की बची हुई चीज़ें भरी हुई चौथी पाई काटते हुए अपना जादू उसके ऊपर बोलने ही वाली थी कि उस पाई का एक टुकड़ा उसमें से निकल कर उसकी ऑख में जा पड़ा।

परी बोली — "ओह यह तो मेरी ऑख में लग गया। अब मैं तुम्हारे ऊपर यह बहुत बुरा जादू करती हूॅ कि जब भी तुम सूरज को देखो तो उसके देखते ही तुम काला सॉप बन जाओ।"

यह सब जादू कर के वे चारों परियॉ वहीं गायब हो गयीं।

उस चौथी परी का जादू सुन कर पिपीना के माता पिता तो फूट फूट कर रो पड़े। उनकी प्यारी बेटी अब सूरज कभी नहीं देख पायेगी।

अभी हम पिपीना और उसके माता पिता को यहीं छोड़ते हैं और बाल्डेलौन की तरफ चलते हैं जो फ्रांस में अपने पिता की अमीरी की शान बघार रहा था। पर यह बात तो केवल वही जानता था कि उसका पिता कितना गरीब था।

वह अक्सर उनके बारे में बड़ी बड़ी बात करता रहता था और अपनी उन डींगों से उसने अपने आस पास के सब लोगों को प्रभावित कर रखा था – जैसी कि कहावत है – जो भी विदेश जाता है वह अपने आपको या तो काउन्ट कहता है या फिर ड्यूक कहता है और या फिर लौर्ड कहता है।[116]

फ्रांस का राजा यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि बाल्डेलौन के कहने में कितनी सच्चाई थी। सो उसने अपना एक स्क्वायर[117] पलेरमो भेजा और उसको बता दिया कि उसको वहॉ जा कर क्या करना है और क्या देखना है। फिर आ कर वह उसको बताये कि उसने क्या देखा।

[116] Count, Duke or Lord – all are the titles for respectable people in European society, such as Prince William, the grandson of the Queen Elizabeth, has been given the title of Duke of Cambridge.
[117] Squire is a title applied to a Justice of the Peace or local judge or other local dignitory of a rural district or small town. He might be a personal assistant of a rank also.

वह आदमी पलेरमो गया और बाल्डेलौन के पिता के बारे में पूछा। लोगों ने उसको एक बहुत सुन्दर महल की तरफ भेज दिया। उस महल में तो उसने बहुत सारे चौकीदार देखे।

वह उस महल के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उस महल की दीवारें तो सोने की हैं और अन्दर बहुत सारे नौकर चाकर घूम रहे हैं।

व्यापारी ने उस आदमी का शाही तरीके से स्वागत किया और उसको खाने की मेज पर बुलाया। जब सूरज डूब गया तो वह पिपीना को भी ले आया।

उस स्क्वायर ने जब पिपीना को देखा तो वह तो उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया। उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वहॉ से सब बातें देख कर वह फ्रांस लौट गया और जा कर राजा को सब बताया।

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया और कहा — "बाल्डेलौन, तुम पलेरमो जाओ और अपने घर जाओ और अपनी बहिन पिपीना को मेरे पास ले कर आओ। मैं उससे शादी करना चाहता हूॅ।

अब बाल्डेलौन को तो यह भी पता नहीं था कि उसकी इस नाम की कोई बहिन भी थी। पर वह राजा की बातों से कुछ कुछ भॉप सका कि क्या मामला हो सकता था। उसने राजा का हुक्म माना और पलेरमो चल दिया।

पेरिस[118] में बाल्डेलौन की एक लड़की दोस्त थी। वह उससे जिद करने लगी कि वह भी उसके साथ पलेरमो चलेगी।

जब बाल्डेलौन उस लड़की को साथ ले कर पलेरमो आया तो उसने देखा कि उसका परिवार तो बहुत अमीर हो चुका है। सबने मिल कर अपनी पुरानी बातें कीं।

वह अपनी नयी बहिन से मिला और अपने माता पिता को बताया कि फ्रांस का राजा उसकी उस बहिन से शादी करना चाहता था। यह सुन कर सब बहुत खुश हुए।

पर जब पेरिस से आयी लड़की ने पिपीना को देखा तो उसको उससे बहुत जलन हुई। उसको देख कर वह अब यह प्लान बनाने लगी कि उसकी जगह वह खुद रानी हो जाये।

कुछ दिनों में ही बाल्डेलौन को फ्रांस वापस लौटना था। सबने एक दूसरे को गुड बाई कहा और बाल्डेलौन फ्रांस वापस चला गया।

पेरिस पहुँचने के लिये पहले समुद्र से हो कर जाना होता है और फिर बाद में जमीन पर से। बाल्डेलौन ने पिपीना को जहाज़ में बन्द कर के रखा हुआ था और उसको सूरज की एक भी किरन नहीं देखने दी थी। उसकी वह लड़की दोस्त भी उस समय उसके साथ ही थी।

[118] Paris is the capital of France

जब जहाज़ बन्दरगाह पर पहुँचता था तो बाल्डेलौन अपनी बहिन और दोस्त को एक बड़ी सी सीडान कुर्सी[119] में बिठा कर सूरज से बचा कर बाहर ले जाता था।

जैसे जैसे पैरिस पास आता जा रहा था बाल्डेलौन की दोस्त को गुस्सा आता जा रहा था क्योंकि पेरिस पहुँच कर तो पिपीना तो रानी बन जायेगी और वह केवल एक कैप्टेन की पत्नी ही रह जायेगी। इसका मतलब यह है कि उसको जो कुछ भी करना है वहाँ पहुँचने से पहले ही पहले करना है।

उसने पिपीना से कहना शुरू किया — "पिपीना, यहाँ कुछ गर्मी हो रही है हम यहाँ थोड़ा सा परदा खोल देते हैं।"

पिपीना बोली — "बहिन, इससे मुझे नुकसान पहुँचेगा। मेहरबानी कर के इसका परदा नहीं खोलना।"

कुछ देर बाद उस लड़की ने फिर कहा — "पिपीना, मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है।"

इस बार पिपीना कछ नाराजी से बोली — "नहीं, तुमको कोई गर्मी नहीं लग रही। चुप रहो।"

"पिपीना, मुझे बहुत घुटन हो रही है।"

"फिर भी तुमको मालूम है कि मैं यह परदा नहीं खोल सकती।"

---

[119] Sedan chair is like palanquin. See its picture above.

"सचमुच?" और उस लड़की ने एक छोटा सा चाकू निकाल लिया और उससे उस सीडान कुर्सी के ऊपर लगी चमड़े की छत फाड़ दी।

सूरज की एक किरन अन्दर आयी और पिपीना एक काले सॉप में बदल कर सड़क पर चली गयी और राजा के बगीचे की हैज[120] में जा कर छिप गयी।

बाल्डेलौन ने जब सीडान कुर्सी खाली देखी तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा — "मेरी बेचारी प्यारी बहिन। और बेचारा मैं। मैं राजा से जा कर क्या कहूँगा जो उसकी आशा में ऑखें बिछाये बैठा है।"

उसकी दोस्त बोली — "तुम चिन्ता किस बात की कर रहे हो? राजा से कह देना कि मैं तुम्हारी बहिन हूँ और सब ठीक हो जायेगा।" आखिर बाल्डेलौन को यही करना पड़ा।

जब राजा ने इस लड़की को देखा तो अपनी नाक सिकोड़ी और बोला — "क्या यही वह सुन्दरता है जो बेजोड़ है? पर राजा का वायदा तो राजा का वायदा होता है सो मुझे इससे शादी तो करनी ही पड़ेगी।"

राजा ने उससे शादी कर ली और वे दोनों साथ साथ रहने लगे।

---

[120] Hedge is the special wall of short dense plants which are planted to protect the house from others' sight, dust and other small animals. See its picture above.

उधर बाल्डेलौन बहुत परेशान था। एक तो उसको अपनी बहिन की कमी बहुत खल रही थी और दूसरे उसे धोखा देने वाली ने राजा से शादी करने के लिये उसको छोड़ दिया था।

नयी रानी यह अच्छी तरह जानती थी कि बाल्डेलौन उसको इन दोनों बातों के लिये छोड़ेगा नहीं। इसलिये वह अब ऐसा कुछ सोचने लगी जिससे वह इस बाल्डेलौन को अपने रास्ते से हटा सके।

एक दिन उसने राजा से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उसको अंजीर खाने की इच्छा हो रही है। उस समय अंजीर का मौसम नहीं था सो राजा बोला — "तुम्हें साल के इस समय में अंजीर कहॉ मिलेंगी?"

"मुझे तो अंजीर चाहिये। बाल्डेलौन को बोलो वह ला कर देगा।"

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया — "बाल्डेलौन"

"जी योर मैजेस्टी।"

"रानी के लिये थोड़ी सी अंजीर ले कर आओ।"

"अंजीर और इस समय योर मैजेस्टी?"

राजा बोला — "चाहे उसका मौसम हो या न हो मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। जब मैंने तुमसे अंजीर लाने के लिये कहा है तो मुझे अंजीर चाहिये नहीं तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

दुखी और ऑखें नीची किये बाल्डेलौन वहॉ से राजा के बागीचे में चला गया और वहॉ जा कर रोने लगा।

लो, वहॉ तो एक फूलों की क्यारी में से निकल कर एक काला सॉप उसके पास आ गया। उसने उससे पूछा — "क्या बात है क्यों रोते हो?"

यह सुनते ही बाल्डेलौन बोला — "बहिन। अब मैं भी बहुत मुश्किल में पड़ गया हूॅ।" और उसने उसको राजा के हुक्म के बारे में बताया।

"ओह यह तो कोई सोचने की बात ही नहीं। मेरे पास एक खास ताकत है जिससे मैं बेमौसमी फल ला सकती हूॅ। तुमने कहा कि तुमको अंजीर चाहिये। ठीक है।" और देखते ही देखते वहॉ अंजीर की एक सुन्दर सी टोकरी प्रगट हो गयी।

बाल्डेलौन उस टोकरी को ले कर तुरन्त ही राजा के पास दौड़ा गया। रानी ने वे सब अंजीर खा लीं। और यह बड़े शर्म की बात है कि उन्होंने उसको जहर नहीं दे दिया।

तीन दिन बाद रानी को खूबानी[121] खाने की इच्छा हुई तो उसने फिर बाल्डेलौन को बोला कि वह उसको खूबानी ला कर दे। बाल्डेलौन ने उसे फिर से बेमौसम की खूबानी ला कर दीं।

रानी की अगली इच्छा चैरी खाने की थी सो पिपीना ने अपने भाई को चैरी ला कर दीं। और फिर नाशपाती भी।

[121] Apricot, Cherry and Pear. See their pictures above in this sequence.

पर हम यह तो तुम लोगों को बताना भूल ही गये कि उस पिपीना के पास परियों का जादू केवल अंजीर, खूबानी और चैरी के लिये ही था नाशपाती के लिये नहीं। इसलिये वह उसको नाशपाती नहीं दे सकी।

बस अब क्या था बाल्डेलौन को मौत की सजा हो गयी। मरने से पहले जब बाल्डेलौन की आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने एक ही इच्छा प्रगट की कि उसकी लाश शाही बागीचे में दफना दी जाये।

राजा बोला "ठीक है।"

बाल्डेलौन फॉसी पर लटका कर मार दिया गया और उसकी आखिरी इच्छा के अनुसार उसके शरीर को शाही बागीचे में दफना दिया गया। रानी ने चैन की सॉस ली।

X X X X X X X

एक रात शाही माली की पत्नी की ऑख खुली तो उसने शाही बागीचे से आती यह आवाज सुनी –

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ ऑधेरे में दबे हो
जब कि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

यह सुन कर पत्नी ने पति को जगाया तो वे दोनों दबे पॉव उठ कर बागीचे में गये तो उन्होंने देखा कि एक काला साया कैप्टेन की कब्रसे खिसक कर दूर जा रहा था।

सुबह को जब रोज की तरह वह माली राजा के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाने के लिये बागीचे में जा रहा था तो उसने देखा कि फूलों की क्यारियों में तो मोती और जवाहरात बिखरे पड़े हैं।

उसने वे मोती और जवाहरात उठा लिये और उनको राजा के पास ले गया तो राजा उनको देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

अगली रात माली ने अपनी बन्दूक उठायी और उसको ले कर पहरा देने लगा। आधी रात को एक साया फिर कैप्टेन की कब्र के पास मॅडराने लगा और गाने लगा —

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ अॅधेरे में दबे हो
जब कि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

माली ने अपनी बन्दूक सीधी की और निशाना साध कर उसको चलाने ही वाला था कि उस साये ने कहा — "अपनी बन्दूक नीचे रख दो। मैं भी तुम्हारी तरह से बैपटाइज़्ड और कनफर्म्ड[122] हुई हूॅ। मेरे पास आओ और ज़रा मुझे ध्यान से देखो।"

कहते हुए उस साये ने अपने चेहरे पर से परदा हटा दिया। माली ने देखा वह तो एक बेमिसाल सुन्दर लड़की थी।

[122] Baptization and Confirmation are the Christian rites after birth to make the child join Christian society, as Hindu have Upanayan (Janeoo) Sanskaar

फिर उस लड़की ने अपने बाल खोल दिये और उसके एक बाल से बहुत सारे मोती और जवाहरात गिर पड़े।

वह लड़की फिर बोली "यह सब जो अभी तुमने यहाँ देखा है जा कर राजा से कहना और साथ में यह भी कहना कि मैं उससे कल रात यहीं मिलूँगी।" यह कह कर वह साँप बन गयी और वहाँ से चली गयी।

अगली रात उस लड़की ने मुश्किल से बस यही कहा होगा – बाल्डेलौन ओ मेरे प्यारे भाई....

कि राजा उसके पास गया। उस लड़की ने अपने चेहरे से परदा उठाया और आश्चर्य में पड़े उस राजा को अपनी आश्चर्यजनक कहानी सुनायी।

राजा ने पूछा — "तुम मुझे बताओ कि इस शाप से मैं तुमको छुटकारा कैसे दिलाऊँ?"

"तुम इसके लिये यह करो कि कल सुबह तुम एक हवा की तरह तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लो और उस पर सवार हो कर जोरडन नदी[123] जाओ। वहाँ उसके किनारे पर उतर जाना।

वहाँ तुमको चार परियाँ नहाती हुई मिलेंगी। उनमें से एक परी ने अपने बालों में हरा रिबन लगाया होगा, दूसरी ने लाल, तीसरी ने नीला और चौथी परी ने सफेद।

[123] Jordan River

तुम उस नदी के किनारे रखे उनके कपड़े उठा लेना। वे तुमसे अपने कपड़े माँगेंगी पर तुम उनको उनके कपड़े मत देना।

इस पर पहली परी तुम्हारे ऊपर अपना हरा रिबन फेंकेगी, दूसरी परी अपना लाल रिबन फेंकेगी, तीसरी अपना नीला रिबन फैंकेगी और चौथी परी अपना सफेद रिबन फेंकेगी।

जब चौथी परी अपना सफेद रिबन और कुछ बाल तुम्हारे ऊपर फेंके तभी तुम उनके कपड़े वापस करना। वे बाल तुम यहाँ ले आना और उनसे मुझे सहला देना। तभी मेरे ऊपर पड़ा हुआ यह जादू टूट पायेगा।"

राजा को इससे ज़्यादा सुनने की जरूरत नहीं थी। बस अगली सुबह उसने अपना सबसे तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर अपना राज्य छोड़ कर जोरडन नदी की तरफ चल दिया।

काफी चलने के बाद, तीस दिन और तीस रात, वह जोरडन नदी[124] के किनारे पर आया। वहाँ उसको परियाँ नहाती मिल गयीं। फिर उसने वही किया जो बाल्डेलौन की बहिन ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने नहाती हुई परियों के कपड़े उठा लिये। जब परियों ने अपने कपड़े माँगे तो राजा ने उनके कपड़े नहीं दिये। इस पर उन परियों ने अपने अपने रिबन राजा पर फेंकने शुरू कर दिये।

[124] Jordan River

जब उस चौथी परी ने उसके ऊपर अपना सफेद रिबन और कुछ बाल फेंक दिये तब वह बोला — "अभी तो मैं तुमको छोड़ कर जा रहा हूँ पर विश्वास रखो कि मैं तुम्हें इसकी कीमत जरूर चुकाऊँगा।"

अपने राज्य में आ कर वह अपने बागीचे की तरफ दौड़ा और उस सॉप को आवाज लगायी। उसके आने पर उसने सॉप को उन बालों से सहलाया।

उन बालों को छूते ही पिपीना फिर से दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की बन गयी। उसने वे बाल अपने बालों में लगा लिये और उसके बाद उसको फिर किसी का डर नहीं रहा।

राजा ने माली को बुलाया और उससे कहा — "अब तुम एक काम करो कि एक बड़ा सा पानी का जहाज़ लो और बाल्डेलौन की बहिन को रात में ही उसमें बिठा कर कहीं पास में ही चले जाओ।

फिर कुछ दिन बाद उस जहाज़ के ऊपर किसी दूसरे देश का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर आ जाना। बाकी मैं सॅभाल लूँगा।"

माली ने राजा का प्लान जैसा उसने उसको बताया था वैसे ही किया। तीन दिन बाद वह अपने जहाज़ पर अंग्रेजों का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर ले आया।

राजा अपने महल से समुद्र देख सकता था सो जब उसने देखा कि एक विदेशी जहाज़ उसके बन्दरगाह पर आ कर लगा है तो उसने अपनी रानी से कहा — "यह कौन सा जहाज़ है? ज़रा देखो

तो। लगता है कि मेरा कोई रिश्तेदार आया है। चलो उससे चल कर मिलते हैं।"

उसकी रानी जो हमेशा अपने आपको दिखाने के लिये हमेशा तैयार रहती थी पलक झपकते ही जाने के लिये तैयार हो गयी। वहॉ जा कर वह जहाज़ पर गयी तो वहॉ तो उसने पिपीना को पाया।

उसने सोचा "जहॉ तक मुझे याद पड़ता है बाल्डेलौन की बहिन तो काला सॉप बन गयी थी फिर यह यहॉ कहॉ से आ गयी। मुझे लगता है कि यह तो वही है"

यही सोचते हुए वे दोनों उस नये आने वाले के साथ उसकी सुन्दरता की तारीफ करते हुए जहाज़ से नीचे आ गये।

राजा ने रानी से कहा — "ऐसी लड़की को जो कोई नुकसान पहुॅचाये बताओ उसको क्या सजा देनी चाहिये?"

रानी बोली — "पर ऐसा कौन नीच हो सकता है जो ऐसी लड़की को नुकसान पहुॅचायेगा?"

"सोचो कि अगर कोई है भी, तो उसको क्या सजा मिलनी चाहिये?"

रानी बोली — "उसको तो इस खिड़की से नीचे फेंक देना चहिये और फिर ज़िन्दा जला देना चाहिये।"

राजा तुरन्त बोला — "तुमने ठीक कहा। यही हम उसके साथ करने जा रहे हैं। यह लड़की बाल्डेलौन की बहिन है जिससे मैं शादी करने वाला था। और तुम इससे जलती थीं।

तुम इसके साथ आयीं और तुमने इसको सॉप बनने पर मजबूर किया ताकि तुम इसकी जगह ले सको। अब तुम्हें मुझे धोखा देने का मजा चखना पड़ेगा। अच्छा हुआ कि तुमने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी।"

फिर उसने अपने चौकीदारों को बुलाया और उनसे उसको खिड़की से बाहर फेंकने और फिर ज़िन्दा जलाने को कहा। जैसे ही राजा ने यह कहा चौकीदारों ने वह तुरन्त ही कर दिया।

उस झूठी को तुरन्त ही खिड़की को नीचे फेंक कर उसको महल के पास ही ज़िन्दा जला दिया गया। राजा ने बेकुसूर बाल्डेलौन को फॉसी की सजा देने के लिये उसकी बहिन से माफी मॉगी।

पिपीना बोली — "जो हो गया सो हो गया उसे भूल जाओ। अब देखना यह है कि हम बागीचे में क्या कर सकते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में गये और बाल्डेलौन की कब्र का पत्थर उठाया। कब्र में बाल्डेलौन का शरीर अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था।

पिपीना ने एक छोटे से ब्रश से थोड़ा सा मरहम अपने भाई की गर्दन पर लगा दिया। मरहम के लगते ही वह फिर से सॉस लेने लगा। फिर वह हिलने लगा और फिर उसने अपनी ऑखें मलनी

शुरू की जैसे कोई नींद से जाग रहा हो। और फिर वह खड़ा हो गया।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और राजा ने महल में खुशियॉ मनाने का हुकुम दिया। उन दोनों के माता पिता को भी बुला लिया गया। बड़े धूमधाम से पिपीना और राजा की शादी हो गयी।

List of Stories in "Fruits in Folktales-1"
(Apple and Oranges)

1. Dorothy and the Seed of Apple
2. Apple of Contentment
3. A Prince and the Apple
4. Lough-Earne's Gold Apples
5. The Little Shepherd
6. Apple Girl
7. Why the Hawk Preys on Chicks
8. Cloven Youth
9. Pom and Peel
10. Iduna and the Magic Apples
11. The King and the Apple
12. The Three Golden Oranges
13. The Three Citrons of Love
14. The Love for Three Oranges
15. The Gypsy Queen
16. The Magic Orange Tree
17. Baker's Idle Son
18. The Christmas Orange

List of Stories in "Fruits in Folktales-2"
(Coconuts, Figs, Grapes, Watermelon, Mulberry, Peach, Pear, Plum, Multiple)

1. Pippina the Serpent
2. The King's Daughter Who Could Never Get Enough Figs
3. The Princess With the Horns
4. Buchettino
5. Spider and the Crows
6. Salamanna Grapes
7. Hwan and Dang
8. The Child of Mulberry Tree
9. Momotaro or Little Peachling
10. The Magic Pear Tree
11. The Little Girl Sold With the Pears
12. Olive
13. Giovannuza Fox
14. Yo Lung Mountain
15. Plum Tree
16. The Foolish Monkey and the Crab
17. The Mincing Princess
18. The Love of the Three Pomegranates
19. The Snake
20. The Little Fox and the Pomegranate King
21. Spider and the Honey Tree
22. Pippina the Serpent

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022